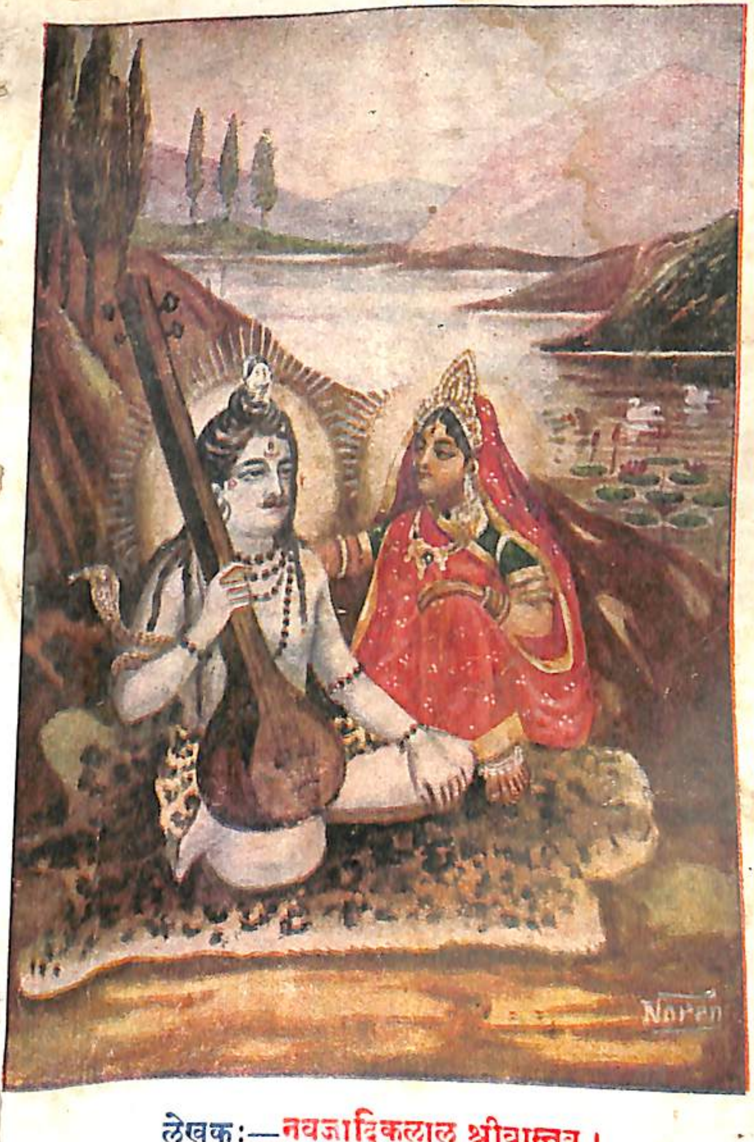
पार्वती

शिक्षाप्रद पौराणिक उपाख्यान।



लेखक:—नवजादिकलाल श्रीवास्तव।

पार्वती

"पतिदेवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख
महिमा अमित न सकहिँ कहि सहस सारदा सेख।"

—गो० तुलसीदास।

लेखक
नवजादिकलाल श्रीवास्तव,

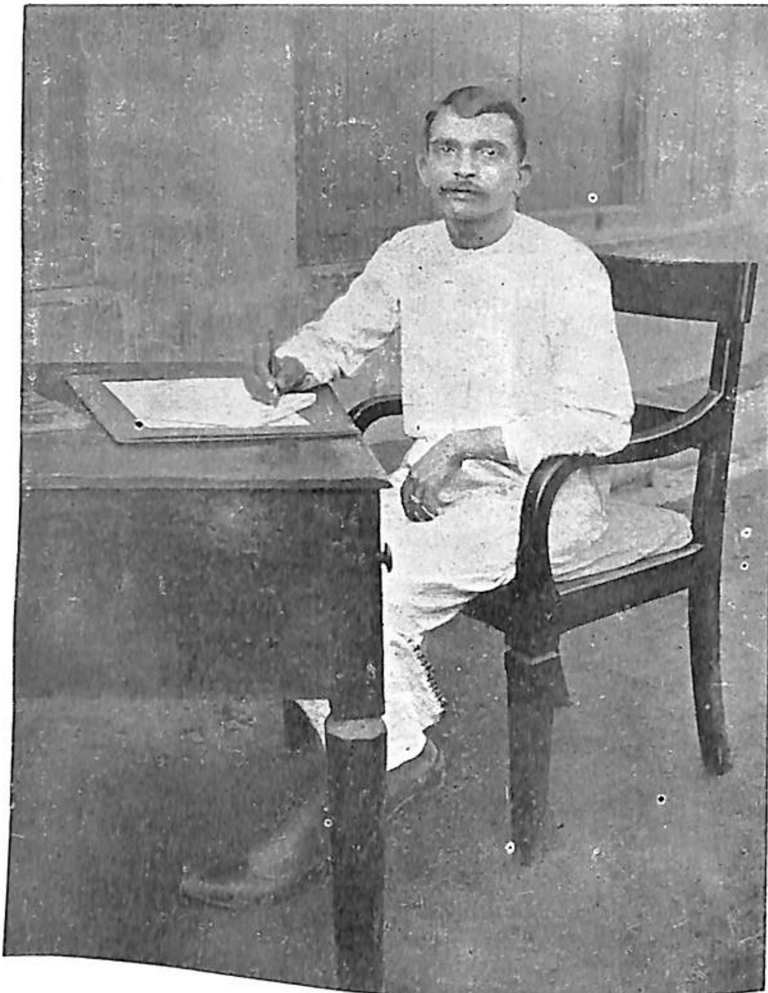
प्रकाशक
रिखबदास वाहिती,
"दुर्गा प्रेस" ७४, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता।

प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ। | सं० १९७८ वि० | सादी २) रंगीन जिल्द २।) रेशमी " २॥)

प्रकाशक—
रिखबदास बाहिती,
आर० डी० बाहिती एण्ड को०,
नं० ७४, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

मुद्रक—
रिखबदास बाहिती
"दुर्गा प्रेस"
नं० ७४, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

उपहार



बाबू कनका प्रसाद चौधरी ।

समर्पण

कलकत्तेके

सुप्रसिद्ध व्यवसायी, रईस और जमीन्दार

पटना निवासी,

श्रीयुत बाबू किशोरीलालजी चौधरीके

उत्तराधिकारी

परम विद्याप्रेमी और विनयी

बाबू कनका प्रसाद चौधरी

के

करकञ्जोंमें स्नेहोपहार स्वरूप यह

"पार्वती"

समर्पित है।

—श्रीवास्तव।

विषय-सूची.

चित्र-सूची

निवेदन।

विलायती सभ्यता-संकुल भारतीय स्त्री-समाज, जिसमें अपने प्राचीन आर्य्य-गौरवका अनुभव कर सके और उसके फलसे पुनः हमारे देशमें सावित्री, सीता, दमयन्ती, पद्मिनी, गार्गी, अनुसूया और मैत्री जैसी आदर्श रमणियाँ पैदा होकर अधःपतित आर्य्य-जातिका मुखोज्ज्वल कर सकें, इसी उद्देश्यसे मैंने आदर्श-पौराणिक आख्यायिकायें संकलित करना आरम्भ किया है। आज तक सावित्री-सत्यवान, नलदमयन्ती और चिन्तादेवीके पुनीत चरित्र पाठक-पाठिकाओंकी सेवामें अर्पण कर चुका हूँ। मुझे यह प्रकाशित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होती है, कि मेरी यह तुच्छ सेवा स्वीकारकर उदारहृदय पाठकों और स्नेहमयी पाठिकाओंने मुझे विशेष गौरवान्वित किया है। इसीसे उत्साहित होकर आज 'पार्वती' को लेकर फिर सामने आनेका साहस कर रहा हूँ। आशा है, कि पाठक-पाठिकायें मेरी यह सेवा भी स्वीकार कर मेरा सम्मान बढ़ायेंगी।

गिरिराज-दुहिता पार्वतीका चरित्र बड़ा ही पवित्र, उच्च और आदर्श चरित्र है। उसके चरित्रकी सबसे बड़ी विशेषता उसका अद्भुत आत्मबल और दृढ़ता हैं। इसी आत्मबल और दृढ़ता द्वारा ही अत्यन्त कोमलाङ्गी होनेपर भी उसने कठोर तप कर शङ्करको प्राप्त किया था और अपने सतीत्वकी प्रभासे आर्य्य-जातिका

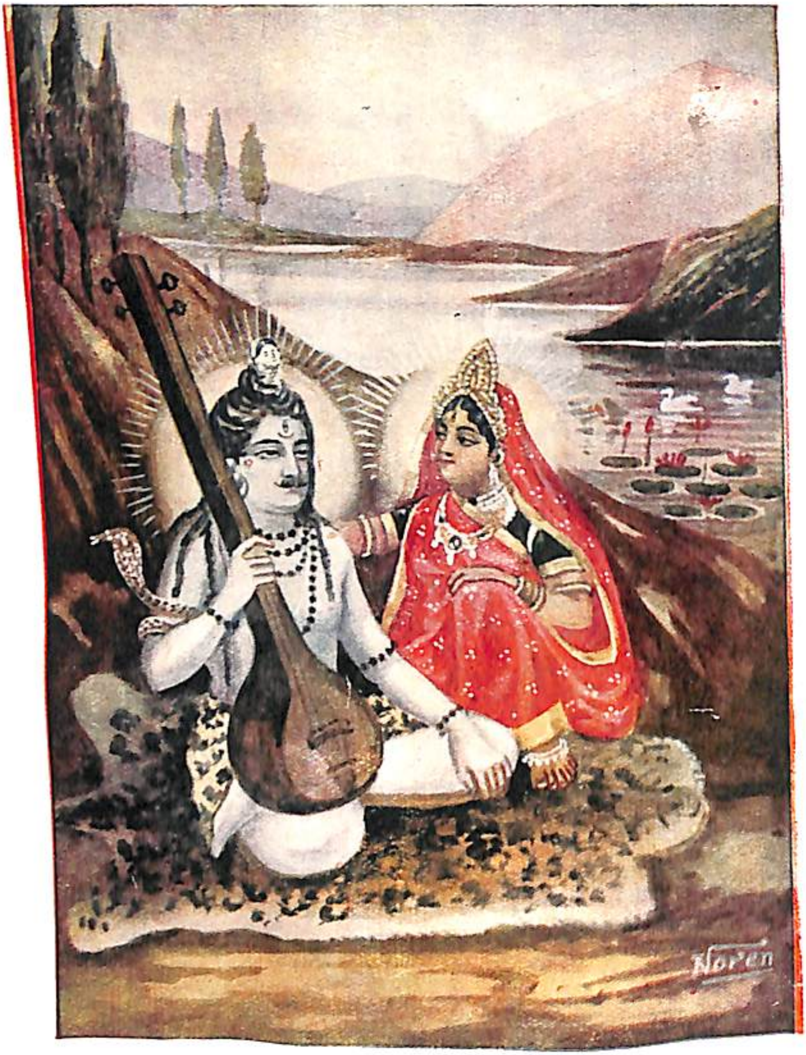
मुखोज्ज्वल किया था। पार्वतीकी महिमाकी कथा लिखकर आर्य्य-ऋषियोंने अपनेको धन्य माना है। परमात्मा करे आदर्श सती भगवती पार्वतीका विशुद्ध चरित्र प्रत्येक हिन्दू रमणीके मानस-पटपर अङ्कित होकर उनके हृदयोंको सतीत्वकी विमल ज्योतिसे उद्भासित कर दे।

पार्वतीकी कथा मैंने महा शिवपुराण, महाकवि कालीदासके कुमारसम्भव, भगवान तुलसीदास कृत मानस रामचरित और पूज्यपाद पण्डित महावीर प्रसादजी द्विवेदी लिखित कुमार-सम्भवसे संकलित किया है। अतः इन महानुभावोंके प्रति अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति पूर्व्वक कृतज्ञता प्रकाश करता हूं।

मेरी अल्पज्ञता और इस पुस्तकके छपनेके समय मेरी अनुप-स्थितिके कारण इसमें बहुतसी त्रुटियां रह गई हैं। अगले संस्करणमें उन्हें दूर करनेकी यथासाध्य अवश्य चेष्टा की जायगी।

इस पुस्तकके प्रकाशक श्रीयुत रिखबदासजी बाहिती और यशस्वी हिन्दी लेखक परम बन्धु पण्डित चन्द्रशेखरजी पाठक मेरे लिये विशेष धन्यवादके पात्र हैं। बाहितीजीने प्रचुर अर्थ व्यय कर इसे नाना प्रकारके रंग-विरंगे चित्रोंसे विभूषित कर इसकी शोभा बढ़ाई है और समयका नितान्त अभाव होने पर भी पाठकजीने इसका प्रूफ़ संशोधन कर देनेकी कृपा की है।

चिलकहर, बलिया।
रामनवमी सं० १९७८ } नवजादिकलाल श्रीवास्तव



हर पार्वती ।

DURGA PRESS CALCUTTA.

पार्वती

प्रथम पर्व ।

॥ श्रीः ॥

पूर्वाभास.

ब्रह्माजीके पुत्र दक्षने 'प्रजापति' का पद प्राप्त कर एक वृहत् राजसूय करनेका आयोजन किया। उस महा-यज्ञमें उन्होंने विश्वसंसारके समस्त प्रतिष्ठित देवताओं, दानवों, यक्षों, किन्नरों, ऋषियों तथा अन्यान्य गण्यमान्य व्यक्तियोंको निमन्त्रण भेजा, परन्तु अपने सगे दामाद कैलाशपति शिव और कन्या सतीको निमन्त्रण नहीं भेजा। इसका कारण यह था, कि एक बार भृगु ऋषिकी यज्ञशालामें शिवजीने उठकर उन्हें प्रणाम नहीं किया था। इसीलिये वे उनसे रूष्ट हो गये थे।

यद्यपि शिवजीको इसकी कोई परवाह न थी, परन्तु नारदजीकी जबानी पिताके घर यज्ञोत्सव होनेका समाचार पाकर उनकी स्त्री सतीने नैहर जानेकी बड़ी इच्छा प्रगट की। उन्होंने पतिके निकट जाकर विनीत भावसे कहा--

"महामुनि नारदजीकी जबानी मालूम हुआ है, कि हमारे पिता दक्षजीने एक वृहत् यज्ञोत्सव करनेका विचार किया है। देव, किन्नर, यक्ष और गन्धर्व आदि अपनी अपनी स्त्रियों सहित सुन्दर विमानोंपर चढ़कर यज्ञानुष्ठान देखने जा रहे हैं। इसलिये इस शुभ अवसरपर पिता-माता तथा बहन-भाइयोंसे मिलनेकी

अभिलाषासे मैं भी कुछ दिनोंके लिये पिताके घर जाना चाहती हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो माता-पिता आदि स्वजनोंसे मिल कर मैं अपनी अभिलाषा पूरी करूँ।"

शिवजीने कहा,—"पिताके घर जाना, और ऐसे अवसरोंपर नैहरके लोगोंसे मिलनेकी लालसा स्त्रियोंके लिये स्वाभाविक है, परन्तु तुम्हारे पिताने जानबूझकर मुझे अपमानित करनेकी इच्छासे मेरे पास निमन्त्रण नहीं भेजा है, यहांतक कि मेरे ही कारण उन्होंने तुम्हें भी नहीं बुलाया है, इसलिये बिना बुलाये वहां जाना उचित नहीं।"

सतीने कहा,—"नाथ! आपका आदेश शिरोधार्य्य है, परन्तु शास्त्रकी आज्ञानुसार माता पिता आदि गुरुजनों तथा प्रिय परिजनोंके यहां बिना बुलाये जाना भी दोषावह नहीं है। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर हमारी अन्यान्य बहनें भी आई होंगी। इसीसे उनसे मिलनेके लिये मेरा मन व्याकुल हो रहा है, क्योंकि ऐसा अवसर बारबार नहीं आता। अतएव आप कृपाकर मुझे पिताके घर जानेकी अवश्य अनुमति दें।"

यह कहकर सती रोने लगीं। अपनी प्यारी बहनों और नैहरकी बाल्य-सहचरियोंके मिलनेकी लालसासे उनका चित्त अत्यन्त व्याकुल होने लगा। यद्यपि शिवजीने उन्हें समझा बुझाकर रोकनेकी बड़ी चेष्टा की, परन्तु उन्होंने किसी तरह अपना हठ नहीं छोड़ा।

सतीकी इस जिद्दका एक और भी कारण था। एक वार त्रेतायुगमें, रामावतार हो जानेपर शिवजी सतीके साथ अगस्त ऋषिके आश्रममें गये थे। वहांसे लौटनेपर रास्तेमें उन्होंने रामचन्द्रजीको देखा। उस समय लङ्काका राजा रावण श्रीसीताजीको हर ले गया था। रामचन्द्र उन्हें ढूंढ़ते हुए वनमें घूम रहे थे। मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र सर्वज्ञ होनेपर भी मनुष्य-रूप धारण करनेके कारण साधारण मनुष्योंकी तरह अपनी पत्नीके विरहमें व्याकुल थे। इसीसे शिवजीने उनसे वार्त्तालाप करना उचित न समझा और दूर ही से 'जय सच्चिदानन्द' कह, प्रणाम कर चलते बने।

एक साधारण राजकुमारको 'सच्चिदानन्द' कहकर प्रणाम करते देख सतीके मनमें सन्देह उत्पन्न हुआ। उन्होंने कहा,—"नाथ! रामचन्द्र तो एक साधारण राजकुमार हैं और साधारण मनुष्य-की भांति स्त्रीके बिरहमें व्याकुल होकर इधर-उधर भटकते और विलाप करते फिरते हैं। आपने उन्हें सच्चिदानन्द कहकर क्यों प्रणाम किया?"

शिवजीने ईश्वरके मानव अवतार धारण करनेके कारणोंका उल्लेखकर सतीका भ्रम दूर कर देना चाहा, परन्तु दुर्भाग्यवश सती को किसी तरह विश्वास न हुआ। अन्तमें लाचार होकर शिवजीने कहा,—"यदि तुम्हें विश्वास नहीं होता है, तो जाकर रामचन्द्रकी

सर्वज्ञताकी परीक्षा कर सकती हो। तब तक मैं इसी निकटके वटवृक्षकी छायामें बैठता हूं।"

यद्यपि शिवजीने सतीको रामचन्द्रकी परीक्षा लेनेकी आज्ञा दे दी, परन्तु उनके इस आचरणसे वे मनही मन अत्यन्त असन्तुष्ट हुए। इधर सतीने रामचन्द्रकी सर्वज्ञताकी जांच करनेके लिये सीताका रूप धारण किया और जिस पथसे रामचन्द्र आ रहे थे, उसीके निकट जाकर चुपचाप बैठ गईं। अन्तर्यामी रामचन्द्र सतीके मनकी बात ताड़ गये। उन्होंने उनका भ्रम दूर करनेकी इच्छासे उनके निकट जाकर, प्रणाम किया और बोले,—"मेरा नाम रामचन्द्र है, मैं अयोध्याके नृपति राजा दशरथका पुत्र हूं। आप शिवजीको छोड़कर अकेली वनमें क्यों घूमती हैं?"

रामचन्द्रकी बातें सुनकर सतीको बड़ा आश्चर्य्य हुआ और साथ ही पतिकी बातोंपर विश्वास न करनेके कारण दुःख भी हुआ। वे लज्जित होकर शिवजीके पास चली गईं।

सतीको देखकर शिवजीने पूछा,—"कहो क्या हाल है? तुमने रामचन्द्रकी सर्वज्ञताकी परीक्षा कैसे ली? अभी तुम्हारे मनका सन्देह दूर हुआ या नहीं?"

सतीने कुछ उत्तर नहीं दिया। पतिदेवकी बात पर विश्वास न कर सतीने जो भूल की थी, उसे वे अच्छी तरह समझ गईं। परम सत्यवादी, सर्वज्ञ और त्रिदेवोंमें अन्यतम भगवान शङ्करकी बात पर विश्वास न कर सती मनही मन अत्यन्त लज्जित हुईं।

पतिगतप्राणा, परम बुद्धिमती और साध्वी सतीके लिये वास्तवमें यह बड़े खेदकी बात थी। जो भोलानाथ सतीको प्राणोंसे भी प्रिय समझते हैं, परमयोगी और महात्यागी होकर भी जिन्होंने सतीको अर्द्धाङ्गिनी बनाया है, जो सतीको एक क्षणके लिये भी अपनेसे अलग नहीं करते और उन्हें प्रसन्न तथा सुखी रखनेके लिये सदैव यत्न किया करते हैं, वही महाशिव अकारण झूठ क्यों कहेंगे?

इसी तरहकी बहुतसी बातें सोचती हुई, सती मनही मन अत्यन्त लज्जित और दुःखित होने लगीं और इसलिये पतिके प्रश्नका हठात कुछ उत्तर न दे सकीं। इधर सतीके इस आचरणको देखकर महादेव शिवको भी बड़ी चिन्ता हुई। जिस पतिव्रता साध्वीने पतिके लिये पिताका राजसी ऐश्वर्य्य छोड़कर अपनेको कङ्गालिनी बनाया है, प्रजापति दक्ष जैसे महा प्रतापी राजाकी कन्या होकर भी एक भिखारीको पति बना, स्वयं भिखारिन बनी है, जिसने प्राणपतिकी सेवा और प्रसन्नताके लिये पिता माताको परित्याग कर दिया और जो दिन रात पतिकी सेवा सुश्रूषा करनेमें ही लगी रहती है तथा जो पतिकी बातोंको ब्रह्मवाक्यसे भी बढ़कर मानती है, उसीने आज न जाने क्यों एक साधारण सी बातपर विश्वास न किया। मालूम होता है, कि ईश्वरकी इच्छा सतीके विपरीत है।

इस तरह सोच-विचार कर भगवान शङ्कर मनही मन सती पर अत्यन्त असन्तुष्ट हो रहे थे। पतिके मनका भाव सतीसे

छिपा नहीं रह सका। इसीसे उन्होंने शिवजीके प्रश्नका उत्तर न दिया। भय और आशङ्कासे उनका हृदय कांप रहा था। सतीकी यह अवस्था देखकर शिवजीने फिर पूछा,—"बोलती क्यों नहीं हो? रामचन्द्रकी सर्वज्ञताकी परीक्षा तुमने कैसे ली?"

अभी भी समय था। सती यदि प्रगट रूपसे अपनी भूल स्वीकार कर लेतीं और जिस तरहसे सीताका रूप धारण कर उन्होंने रामचन्द्रकी परीक्षा ली थी, वह साफ़ साफ़ कहकर पतिके चरणोंपर गिरकर क्षमा मांग लेतीं, तो सरल हृदय भोलानाथ अवश्य ही उन्हें क्षमा कर देते। परन्तु होनहारसे विवश होकर सतीने ऐसा न किया। किसीने सच कहा है,—"जैसी हो भवितव्यता, वैसी उपजे बुद्धि। होनहार हृदये बसे, विसर जाय सब सुद्धि।" सतीने असली घटनाको छिपाते हुए कहा—

"नाथ, मैंने कोई परीक्षा न ली। जिस तरह आपने उन्हें प्रणाम किया था, उसी तरह मैंने भी किया।"

यद्यपि सतीने सरासर झूठ कहकर असली बातको छिपानेकी चेष्टा की। परन्तु सर्वान्तर्य्यामी सदा शिव अपने असाधारण योग बल द्वारा सब बातें जान गये और जगन्माता सीताका रूप धारण कर भगवान रामचन्द्रको धोखा देनेकी चेष्टा करनेके लिये वे मनही मन सती पर अत्यन्त असन्तुष्ट हो गये।

इसीसे कैलाश पहुँच कर उन्होंने अखण्ड समाधि लगा ली। आहार-विहार, भंग-बूटी छोड़कर शङ्कर दिन रात ध्यान

मग्न रहने लगे। पतिका भावान्तर देखकर सतीको बड़ी चिन्ता होने लगी। वह अपने दुष्कर्म्मके लिये बारबार पश्चात्ताप करने लगीं। पति-वियोगकी भावी आशंकासे उनके मनमें विषम अशान्ति हो गई। घोर पश्चात्तापकी ज्वाला उनके कोमल हृदयको बार बार गलाने लगी। परन्तु अब उपाय क्या था? बात बिगड़ जानेपर पछतानेसे फलही क्या होता है?

इसी तरह चिन्ता-सागरकी उत्ताल तरंगोंमें गोते खाते बहुत दिन बीत गये। इतने हीमें हठात् एक दिन भगवान शङ्करकी समाधि भंग हुई। परम पिता परमात्माको स्मरण करते हुए उन्होंने आंखें खोलीं। पतिके जाग्रत होनेकी आहट पाकर सती उनके निकट गईं और भक्ति पूर्व्वक प्रणाम कर चुपचाप खड़ी हो गईं। यदि कोई दूसरा अवसर होता तो भगवान शङ्कर अपनी प्रियतमा पत्नीको देखकर न जाने कितना आनन्दित होते और उठकर आदरसे उन्हें अपनी बाईं ओर बिठाते। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। रामचन्द्रकी परीक्षा लेनेकी बात उन्हें स्मरण थी। इसी लिये उन्होंने सतीको अपने सामने बैठनेका इशारा किया। सती समझ गईं, कि अभी तक भोला उस घटनाको नहीं भूले हैं और शायद इस जन्ममें भूलेंगे भी नहीं।

इस समय सतीके हृदयकी मनस्तापकी आग मानों फिरसे धधक उठी। वे मनही मन विचारने लगीं—यदि प्राणनाथने मेरा अपराध क्षमा न किया तो मैं इस देहको रखकर क्या करूँगी?

पतिव्रता यदि पतिकी सेवासे ही वञ्चित हो गई, तो उसका जीना किस कामका ? मेरा अपराध भी तो गुरुतर है। जिन पतिदेवके चरणोंमें अपना तनमन अर्पण कर चुकी हूं, उन्हींकी बातपर अविश्वास ! न जाने उस समय मेरी बुद्धि कहां विलुप्त हो गई थी ! सती शिवके सामने बैठी हुई, इसी तरह पश्चात्ताप कर रही थी, कि इतनेमें नारदजीने आकर दक्ष प्रजापतिके यज्ञका समाचार सुनाया। साथ ही उस यज्ञोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये जाते हुए, देवों, किन्नरों और यक्षोंके विमान भी आकाश-पथमें दिखाई दिये। सतीने सोचा, यह सुयोग अच्छा है। पिताने पतिको अपमानित किया है। उनके साथ सदा द्वेष रखते हैं। इसलिये पिताको समझा बुझाकर आपसके इस विवादको मिटानेका चेष्टा भी करूँगी, बहुत दिनोंकी बिछड़ी हुई प्यारी बहनों और लड़कपनकी सहेलियोंसे भेंट-मुलाकात भी हो जायगी तथा कुछ दिन तक वहां रहनेसे मनकी चिन्ता भी दूर होगी।

इसीसे शिवजीके समझाने पर भी सतीने अपना विचार नहीं बदला। उन्होंने नम्रता पूर्व्वक कहा—"प्रभो, पिताने आपको अपमानित किया है, मुझसे यह सहा नहीं जाता। मैं एकबार जाकर पिताको समझाना चाहती हूं।"

शिवने कहा—"प्रजापति बड़े हठी हैं, उन्हें समझाना सहज नहीं है। वहां जानेपर वह तुम्हें भी अपमानित करेंगे। इसलिये तुम्हारा न जाना ही अच्छा है।"

पतिकी बात सुनकर सती कुछ उत्तेजित हो गईं। उन्होंने दृढ़ स्वरसे कहा—"पतिव्रता स्त्री पतिका अपमान नहीं सह सकती। मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये। मैं एकबार पिताको समझाऊँगी। यदि मान गये अच्छा ही है और नहीं तो जो मेरा कर्तव्य है वह करूँगी।"

त्रिकालदर्शी शिवको मालूम हो गया, कि भविष्यमें कुछ विशेष परिवर्त्तन होनेवाला है। परमात्माको अवश्य ही कुछ अभीष्ट है। नहीं तो सती इतना हठ क्यों करती? अब अधिक कुछ अनावश्यक समझकर उन्होंने नन्दीको बुलाकर सतीको दक्षके घर पहुँचा देनेकी आज्ञा दे दी।

झटपट समयानुकूल तैयारी कर नन्दीने सतीको उनके पिताके घर पहुँचा दिया। अस्तु, सतीकी आगमनवार्त्ता बिजलीकी तरह क्षण भरमें सर्वत्र फैल गई! हठात् सतीको उपस्थित देखकर लोगोंको आनन्दके साथ आश्चर्य्य भी हुआ। क्योंकि यह बात किसीसे छिपी न थी, कि इस यज्ञमें सब देव देवियोंको निमन्त्रण दिया गया है परन्तु शिव और सती नहीं बुलाये गये हैं। इसीसे सतीको देखकर कुछ लोगोंके मनमें बड़ा कुतुहल हुआ।

धीरे धीरे यह खबर राजमहलमें पहुँची। कन्याके आनेका संवाद पाकर स्नेहमयी जननीका हृदय आनन्दसे अधीर हो उठा। उन्होंने दौड़कर अपनी प्यारी सतीको कलेजेसे लगा लिया। कन्याने भी बहुत दिनोंके बाद माताकी गोदमें सिर रखकर अक-

थनीय आनन्द प्राप्त किया। क्षण भरके लिये सती अपनी सारी चिन्तायें भूल गईं! माता और पुत्रीकी आँखोंसे प्रेमाश्रु की प्रवल धारा वह चली।

क्रमशः राजमहलकी अन्यान्य स्त्रियोंके सिवा सतीकी बहनें तथा सहेलियां भी वहीं आ पहुँचीं। अतएव माताको छोड़कर वे बहनोंसे मिलने लगीं। परन्तु बहनोंने उनके प्रति यथोचित प्रेम नहीं दिखाया। वरन, उनमेंसे कितनी हीके होठोंपर विद्रूपकी हँसी भी दिखाई दे गई। परन्तु सतीने इसपर कुछ ध्यान न दिया। उन्होंने प्रेम पूर्व्वक सबसे मिलकर कुशल मंगल पूछा। इसके वाद विश्राम आदि कर यथासमय पिताकी यज्ञशाला देखने गईं।

यज्ञशालामें पहुँच कर सबसे पहले सतीने पूज्य पिताके चरणोंमें प्रणाम किया और चरण-धूलि लेनेके लिये हाथ बढ़ाया। दक्षराजने कुछ पीछे हटकर, कठोर स्वरसे कहा,—"दूर हो अभागिन! तू यहां क्यों आई? क्या इस तरह विना बुलाये आते हुए तुझे लज्जा नहीं आई!"

सतीने मधुर, किन्तु दृढ़ स्वरसे उत्तर दिया,—"क्यों पिता! मैंने ऐसा क्या अपराध किया है, जिसके लिये आप इतने असन्तुष्ट हो रहे हैं?"

सतीके इन मीठे वचनोंने मानों जलती हुई आगमें घीकी आहुतिका काम किया। दक्षराजने गर्ज्जकर कहा—"अभागिन,

तेरा पति निपट निरङ्कुश, महा अभिमानी, दिन रात मरघटमें फिरनेवाला, नशाखोर और निकम्मा है। दिन रात सृष्टिका संहार किया करता है। उस अमंगलवेशधारी भिखारीको पति बनाकर तूने मेरा घोर अपमान किया है। तू लज्जाहीना है। तेरा मुंह देखनेमें भी पाप लगता है। तू अपना काला मुंह लेकर शीघ्र यहांसे चली जा।”

पिताके मुंहसे पतिकी निन्दा सुनकर परम पतिव्रता सतीका मर्मस्थल छिद गया। उन्होंने बड़े कष्टसे अपनेको सम्भाल कर कहा—“हे पिताजी! इतने बड़े ज्ञानी और विद्वान होकर भी आप बड़ी भूल कर रहे हैं। यद्यपि मैं बिना बुलाये ही आपके पास आई हूँ, किन्तु यह कोई अपराध नहीं है। क्योंकि पिता माताके यहां बिना बुलाये जानेमें कोई दोष नहीं होता। आपने मेरे पति देवके सम्बन्धमें बहुतसे कटुवाक्य कहे हैं, यह आप जैसे महा पण्डित और प्रजापतिके लिये उचित नहीं था। भगवान शङ्कर सर्वप्रिय हैं। त्रिलोकमें केवल आपही उनसे द्वेष रखते हैं। वे संसारत्यागी, द्वेषरहित, महायोगी और महादेव हैं। बड़े बड़े देवता उनके चरणोंका गिरा हुआ निर्माल्य अपने सिर-पर धारण कर अपनेको कृतार्थ समझते हैं। ऐसे महा पुरुषसे द्वेष करना आपके लिये कभी भी मंगलजनक नहीं हो सकता। आप बड़ी भूल कर रहे हैं। इसलिये आपको बहुत पश्चात्ताप करना पड़ेगा। यज्ञमें भगवान शङ्करका भाग बन्द करके भी

आपने बड़ा ही अनुचित कार्य्य किया है। इसके लिये आपके साथ ही अन्यान्य देवतों तथा ऋषि मुनियोंको भी पछताना पड़ेगा। वास्तवमें आपने भगवान शङ्करका अपमान कर गुरुतर अपराध किया है। आप शिवद्रोही हैं और मेरी यह देह आपके अंशसे उत्पन्न है। इसलिये मैं इस देहको परित्याग करूँगी। शास्त्रोंमें लिखा है, कि जो उद्दण्ड व्यक्ति किसी पतिव्रताके सामने उसके पतिकी निन्दा करे तो पतिव्रताका धर्म्म है, कि वह उस व्यक्तिका नाश कर अपना शरीर छोड़ दे। अथवा यदि ऐसा करनेकी सामर्थ्य उसमें न हो तो कानोंको बन्द कर उस स्थानसे चली जाये। अतएव हे पिता! अब मैं इस शरीरको नहीं रखूँगी। पतिकी निन्दा सुनकर जीते रहनेकी अपेक्षा मर जाना ही मेरे लिये अधिक श्रेयस्कर है।"

इतना कहते कहते सतीका शरीर और मन विशेष उत्तेजित हो गया। उस समय उनके मुखसे एक प्रकारकी तेजोमयी ज्योति निकलने लगी, जिसके प्रकाशसे समस्त यज्ञमण्डल उद्भासित हो गया। पतिव्रताका यह अद्भुत तेज देखकर उपस्थित लोग आश्चर्य्य-चकित हो गये। किसीके मुंहसे कोई बात न निकली। प्रजापति दक्ष भी वह अपूर्व्व ज्योति देखकर स्तम्भित हो गये। देखते देखते उस अपूर्व्व ज्योतिने जलती हुई आगका रूपधारण किया और क्षण भरमें सतीकी कमनीय देह जलकर भस्म हो गई!

इस तरह जगत्की पतिव्रताओंको पतिनिन्दा रूप पातकका



सतीकी देह त्याग।

देखते देखते उस अपूर्व्व ज्योतिने जलती हुई आगका रूपधारण किया और क्षण भरमें सतीकी कमनीय देह जलकर भस्म हो गई!

Durga Press, Calcutta.

(देखिये पृष्ठ—संख्या २२)

प्रायश्चित्त-विधान बताकर साध्वी सतीने अपना स्त्रीजन्म सार्थक कर दिया। इस घटनासे समस्त यज्ञशालामें हाहाकार मच गया! सभी इसके लिये दक्षको अपराधी ठहराने लगे और चारों ओर सतीके सतीत्वकी प्रशंसा होने लगी।

यथासमय यह संवाद शिवके कानोंतक पहुंचा। उन्होंने अपने प्रधान अनुचर वीरभद्रको भेजकर राजा दक्षका यज्ञ विध्वंस करा डाला और राजा दक्षका शिर भी काट डाला गया।

(२)

पार्वतीका जन्म

हमारे इस देश, भारतवर्षकी उत्तर ओर 'हिमालय' नामका एक विशाल पर्वत है। पृथिवीके जिस प्रान्तमें यह पर्व्वत अवस्थित है, वहां हिम अर्थात बरफ़ बहुत पड़ती है। इसीसे इस पहाड़का नाम हिमालय अर्थात् 'बरफ़का घर' पड़ा है। लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाईमें संसारका कोई पहाड़ हिमालयकी समता नहीं कर सकता। उसकी बहुत सी चोटियाँ या कंगूरे इतने ऊंचे हैं, कि वहां बादल भी नहीं पहुंच सकते। हिन्दुओंके प्रधान तीर्थ-स्थान हरद्वार, गङ्गोतरी, लक्ष्मणझूला, बदरिकाश्रम, कैलास और मानसरोवर आदि हिमालयमें ही अथवा उसके आसपास हैं। हिमालयके घने जंगलोंमें नाना प्रकारकी अलभ्य ओषधियां तथा कन्द, मूल और फल आदि उत्पन्न होते हैं। हिमालयकी कितनी ही कन्दराओंमें योगियोंका निवास-स्थान है। उसके घने जंगलों और भयङ्कर खोहोंमें सिंह, बाघ, भालू और भेड़िया आदि नाना प्रकारके हिंसक जन्तु रहते हैं। हिमालयके विशाल वृक्षोंपर नाना भांतिके रंगबिरंगे सुन्दर पक्षी अपनी सुहावनी बोलियोंसे मानों उसकी स्तुति करते हैं। कहीं हाथियोंका झुण्ड विचरण करता है, कहीं हिरण आदि चौकड़ी भरते दिखाई देते हैं; कहीं सिंहका गर्जन सुनाई देता है और कहीं जंगली गायोंका युत्थ दीख पड़ता

है। गंगा यमुना आदि कितनी ही छोटी बड़ी नदियां हिमालयसे निकलकर समस्त भारत-भूमिको शस्यश्यामला बनाती हैं। हिमालयमें सोने, चांदी और जवाहरातकी खाने भी मौजूद हैं। हिमालयकी गुफाओंमें कोल, भील आदि कितनी ही भांतिके मनुष्य भी रहते हैं। हिमालयके ऊंचे शिखरोंपर कितने ही बड़े बड़े प्राकृतिक सरोवर हैं, जिनमें नाना प्रकारके कमल खिलते हैं। इसके सिवा कितने ही सुहावने झरने और सोते भी हिमालयकी शोभा बढ़ाते हैं। हमारे देशके बड़े बड़े प्राचीन और नवीन कवियोंने हिमालयके सम्बन्धमें कवितायें लिखी हैं। हिमालय पर्वतकी प्राकृतिक शोभा-सम्पद अतुलनीय और अकथनीय है। इसीसे यह संसारके सब पर्वतोंका राजा माना गया है।

अति प्राचीन कालमें हिमालय प्रदेश एक राजाके अधीन था। हिमालयके राजा होनेके कारण उन्हें लोग 'हिमवान' कहा करते थे। राजा हिमवान बड़े धार्म्मिक, पण्डित, वेदज्ञ और नीतिज्ञ थे। अतुल ऐश्वर्य्यके अधिपति होकर भी वे बड़े विनम्र तथा निरभिमानी पुरुष थे। इसीसे देव, पितर और ऋषि मुनि आदि राजा हिमवानसे बहुत प्रसन्न रहते थे। उनकी विनम्रता, बुद्धिमत्ता और धार्म्मिकता आदि सद्गुणोंसे प्रसन्न होकर पितरोंने अपनी 'मेनका' नाम्नी कन्यासे उनका विवाह कर दिया था। जिस तरह राजा हिमवानमें सभी प्रकारके पुरुषोचित सद्गुण मौजूद थे, उसी तरह रानी मेनका भी स्त्रियोचित सद्गुणोंसे विभूषिता थीं।

ऐसी पतिव्रता, सुशीला और बुद्धिमती पत्नी पाकर राजा हिमवान अत्यन्त आनन्दित थे। वास्तवमें गुणवती पत्नी मिलना पुरुषके लिये बड़े सौभाग्यकी बात है। क्योंकि सब प्रकारका सुख होनेपर भी यदि पत्नी सुशीला, पतिव्रता और मधुरभाषिणी न हुई तो वह सुख किसी कामका नहीं।

राजा हिमवानकी कई सन्तानोंमें मैनाक सबसे बड़ा और पार्वती सबसे छोटी थी। जिस समय प्रजापति दक्षके यज्ञमें पति-निन्दासे दुखी होकर सतीने अपना शरीर परित्याग किया था, उसके कुछ दिन बाद ही हिमवानकी रानी मेनका गर्भवती हुईं। रानीके गर्भवती होतेही समस्त हिमालयमें नाना प्रकारके शुभ शकुन होने लगे। हिमालयके बनोंके नाना प्रकारके सुन्दर और सुगन्धित फूल खिल उठे। शीतल मन्द सुगन्ध वायुसे चारों दिशायें आमोदित होने लगीं। पशु, पक्षी, कीट पतंग आदि सभी आनन्दित होकर इधर उधर विचरण करने लगे। आकाशमें देवोंकी दुन्दुभी बजने लगी; देवाङ्गनायें हिमवानके राजमहलपर फूलोंकी वर्षा करने लगीं।

यथासमय भूत, भविष्य और वर्तमानकी बातें जाननेवाले ज्योतिषियोंने राज-दरबारमें आकर बताया, कि शिवकी प्यारी पत्नी सतीने राजा दक्षके यज्ञमें देह-त्याग किया है, वही रानी मेनकाके गर्भसे पुनर्जन्म धारण करेंगी। अतएव इस बार रानीके कन्या उत्पन्न होगी। आद्याशक्ति भगवती सतीके आविर्भावका

संवाद सुनकर राजा और रानीको असीम आनन्द हुआ। राजाने ज्योतिषियोंको बहुतसा धनरत्न देकर विदा किया और राजपरिवारमें खूब आनन्दोत्सव मनाया गया।

इसी तरह प्रायः दस मास बीतने पर एक दिन रानीको प्रसव-वेदना आरम्भ हुई। साथ साथ ही वह अनैसर्गिक आनन्द-तरङ्ग और भी बढ़ गया। राज-दम्पतिके हृदयका आनन्द भी द्विगुण बढ़ गया। देवीके आविर्भावका समय उपस्थित देखकर देवगण आकाश-पथमें आनन्दध्वनि करने लगे, अप्सरायें नाचने लगीं और गन्धर्व गण समसामयिक मङ्गल गान द्वारा आकाशमण्डलको मुखरित करने लगे।

इस तरह समस्त रात बीत जानेपर प्रातःकाल रानी मेनकाने एक दिव्य ज्योतिर्मयी कन्यारत्न प्रसव किया। बालिकाकी दिव्य ज्योतिसे मणि-प्रदीपोंकी आभा म्लान हो गई। समस्त सूतिका-गार (सौर) उस दिव्य ज्योतिसे चमक उठा। ऐसी सुन्दर और चित्तको आनन्द देनेवाली ज्योति देखकर रानी मेनका विमुग्ध हो गईं। एक अनिर्वचनीय आनन्दसे उनका हृदय उत्फुल्ल हो गया। थोड़ी देरमें यह शुभ संवाद राजमहलमें चारों ओर गूंज उठा। सारा राजमहल आनन्द कोलाहलसे मुखरित हो उठा। कन्या होनेका समाचार पाकर राजा हिमवान भी विशेष आनन्दित हुए। उन्होंने राजमन्त्रीको बुलाकर समस्त राज्यमें आनन्दोत्सव मनानेकी आज्ञा प्रदान की और देव, किन्नर, गन्धर्व्व तथा मानव

आदिका इस आनन्दोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये निमन्त्रण भेजवाया।

बारहवें दिन रानी मेनकाने सूतिकागार परित्याग किया। उस दिन समस्त राज्यमें खूब आनन्द मनाया गया। आमन्त्रित सज्जनोंके आमोद प्रमोदकी विशेष व्यवस्थाकी गई। ब्राह्मणों और साधुओंको छत्तीस प्रकारका भोजन और मनमानी दक्षिणा दी गई। याचक अयाची कर दिये गये। कई दिनोंतक राजा हिमवानके यहां खूब चहल-पहल रही। आनन्दोत्सवका कोई अङ्ग असमाप्त नहीं छोड़ा गया।

(३)

पार्वतीका बाल्यकाल और शिक्षा.

जिस तरह दूजका चांद दिन दिन बढ़ता है, उसी तरह उमरके साथ साथ राजा हिमवानकी कन्याकी रूप-ज्योति भी बढ़ने लगी। उसकी मोहिनी मूर्त्ति और मधुर हँसीने समस्त राज परिवारको मोहित कर दिया। 'जो एकवार बालिकाको अपनी गोदमें लेलेता वह फिर उसे छोड़ना नहीं चाहता था। इस तरह थोड़े ही दिनोंमें बालिका सर्व प्रिय हो गई। माता पिताकी ममता भी उसके प्रति उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। भीतरसे बाहर तक छोटे बड़े सभी बालिकाको प्राणसे भी प्रिय समझने लगे। उसकी बाल्यसुलभ चञ्चलता, भोली-भाली सूरत और उसके मुँहसे निकले हुए अर्थहीन स्फुट शब्दोंने एक साथही समस्त राज परिवारका चित्त अपनी ओर खींच लिया।

धीरे धीरे नामकरणका समय उपस्थित हुआ। राज पुरोहितने शुभ मुहूर्त्त देखकर नामकरणका समय निर्द्दिष्ट कर दिया। एकबार फिर चारों ओर आनन्दोत्सवकी धूम मच गयी। बड़ी तैयारी और बृहत समारोहके साथ बालिकाका नामकरण संस्कार हुआ। राज-पुरोहितने बहुत सोच बिचार कर कन्याका

नाम पार्वती रखा। परन्तु लोगोंने अपनी अपनी रूचिके अनुसार नाम रख लिया। किसीने उमा, किसीने भवानी और किसीने गौरी कहकर उसे पुकारना आरम्भ किया।

इस तरह अपनी बाल-सुलभ-चपलता, तोतलीं बोली तथा छोटी छोटी सहचरियोंके साथ नाना प्रकारके अभिनय और खेलकूदसे पिता माता तथा अन्यान्य परिजनोंका आनन्द बढ़ाती हुई पार्वतीने अपनी आयुके पांच वर्ष बिता दिये। उपयुक्त अवसर देखकर राजा हिमवानने पार्वतीकी विद्या-शिक्षाका प्रबन्ध किया। बहुत कर एक अच्छी गुरुआनी बुलाकर पार्वतीकी विद्या–शिक्षाका प्रबन्ध किया गया। उपयुक्त गुरुआनीके उद्योग तथा अपनी बुद्धिकी एकाग्रता और प्रखरताके कारण पार्वतीने बहुत थोड़े दिनोंमें लिखना पढ़ना सीख लिया। इसके बाद उसे गृहकार्य्य, इतिहास, भूगोल तथा धर्म्म-शास्त्र आदिकी शिक्षा दी जाने लगी। थोड़े ही दिनोंमें बुद्धिमती पार्वतीने नाना प्रकारकी विद्यायें सीख लीं। चित्र-विद्या और गान-विद्यामें भी उसने खासी निपुणता प्राप्त कर ली थी।

इन उपयोगी विद्याओंके अतिरिक्त पार्वतीकी जननीने उसे गृह कार्य्य, भोजन बनाने और परोसने आदिकी भी शिक्षा दी। प्यारी पुत्रीकी विद्या शिक्षा और उसका असाधारण गुण देखकर पिता माताको बड़ा आनन्द प्राप्त होता था। ऐसी सुशीला, सुन्दरी और गुणवती कन्या पाकर हिमवान और मेनका अपनेको परम सौभाग्यवान समझते थे।

राजमहलकी दास दासियां, तथा अन्यान्य लोग भी पार्वतीको बड़े प्रेमकी दृष्टिसे देखते थे। पार्वतीकी मीठी बोली और अच्छे व्यवहारोंने सबको विमोहित कर दिया था। इतने बड़े प्रतापी राजाकी कन्या होकर भी पार्वती साधारण लोगोंसे बड़े प्रेम और दयाका व्यवहार करती थी। इसीसे उसकी सरलता, सहृदयता आदि अपूर्व्व गुणों और असीम रुपराशिकी ख्याति समस्त देशमें फैल गई। उसे देखनेके लिये दलके दल लोग आने लगे और पार्वतीके दया-पूर्ण मधुर व्यवहारोंसे सन्तुष्ट हुए। जो एक बार बालिकाको देख लेता या उसका मधुर भाषण सुन लेता, वह बार बार उसे देखनेकी इच्छा प्रकट करता था। संगकी सहेलियोंके लिये तो पार्वती उनका जीवन-स्वरूप थी। कोई सहचरी उसे एक क्षण भी छोड़ना नहीं चाहती थी। इसके अतिरिक्त नगरकी छोटी बड़ी कितनीही बालिकायें दिन रात पार्वतीको घेरे रहती थीं। पार्वतीके गुणोंकी ख्याति सुनकर पिता माता बार बार पुलकित होते थे।

धीरे धीरे पार्वतीकी असीम रूपराशि और गुण-गरिमाकी कथा मानवलोककी सीमा नाघकर देवलोक तथा किन्नर लोक पहुँच गई। अतएव राजकन्याको देखनेके लिये कितनी ही देव कन्यायें भी आने लगीं और उसके प्रेम पूर्ण व्यवहारोंसे परम सन्तोष लाभ करने लगीं।

हरिण, कीर, कपोत आदि पशुपक्षी भी पार्वतीको देखकर

या उसकी बोली सुनकर आनन्दित हो जाते थे। यहां तक, कि कितने ही हिसंक जन्तु भी मानों उसकी रूप-प्रतिभा देखकर आश्चर्य्य चकित हो जाते थे।

नारदजीका उपदेश

इस तरह अपनी अलौकिक रूप-राशि और गुणावलीसे समस्त संसारको विमुग्ध करती हुई पार्वतीने बालावस्था बिताकर किशोरावस्थामें पदार्पण किया। बालोचित चपलता, धीरे धीरे तिरोहित होकर गम्भीरतामें परिणत होने लगी। जिस चितवनमें केवल सरलता ही भरी थी, उसमें लज्जाशीलताका संमिश्रण हो जानेसे वह मधुरसे मधुरतर हो गई। अङ्ग प्रत्यङ्गमें नव-यौवन सुलभ परिवर्त्तन दिखाई देने लगे। इस परिवर्तनने उसके रूप-गौरवको द्विगुणित कर दिया। चतुर्दशीकी चांदनीकी तरह किशोरी पार्वतीकी रूप-ज्योतिसे मानों सारा राजमहल जग-मगाने लगा। उसके अङ्गोंकी अपूर्व्व सुन्दरताकी प्रशंसा करते हुए अन्तमें महाकवि कालिदासजी लिखते हैं :—

सर्वोपमा-द्रव्य-समुच्चयेन,
यथा प्रदेशं विनिवेशितेन
सानिर्म्मिता विश्वसृजा प्रयत्ना।
देकस्थ-सौन्दर्य्य-दिदृक्षयेव ॥

भावार्थ यह है, कि मानों संसारके उपमा देने योग्य सारे पदार्थोंको एकत्र सजाकर उसका सौन्दर्य्य देखनेकी इच्छासे ही विधाताने पार्वतीको इतना सुन्दर बनाया था।

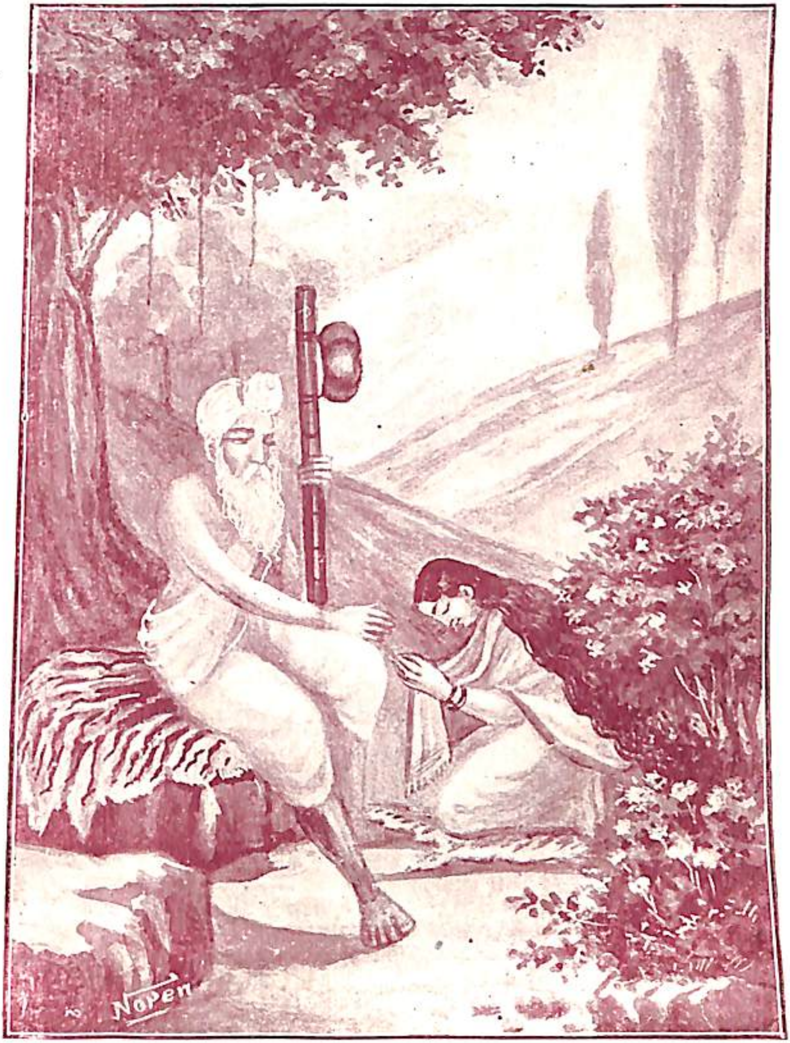
कन्याकी उमर विवाहके उपयुक्त हुई देखकर रानी मेनकाके मन चिन्ता उपस्थित हुई। अवसर पाकर उन्होंने एक दिन राजासे कहा,—"हमारी गौरी व्याहने योग्य हो गई है। अब शीघ्र ही उसके व्याहका उद्योग आरम्भ होना चाहिये।"

राजाने कहा,—"हाँ, अवश्य। अब पार्वतीके विवाहका उद्योग करना चाहिये। मैं आज ही मन्त्री महाशय तथा पुरोहितजीको बुलाकर इस सम्बन्धमें परामर्श करूंगा।"

इसपर रानी कुछ और कहना ही चाहती थीं, कि इतनेमें चोबदारने खबर दी, कि देवर्षि नारदजी महाराजके साक्षातके लिये उपस्थित हैं!

राजा हिमवानने स्वयं उठकर बड़े प्रेमसे नारदजीका स्वागत कर यथोचित आदर सत्कार किया। इसके बाद इधर उधरकी बातें आरम्भ हुईं। एक तो नारदजी त्रिकालदर्शी हैं और दूसरे भगवानका गुण गान करते हुए प्रायः तीनों लोकमें भ्रमण किया करते हैं। इसीसे संसारकी बहुतसी खबरें उन्हें मालूम रहती हैं। देवलोक, पितरलोक तथा नरलोककी कितनी ही नई और अद्भुत खबरें सुनाकर नारदजीने राजा हिमवान और रानी मेनकाको आप्यायित किया।

इस प्रकार बड़ी देर तक विविध विषयोंपर वार्त्तालाप होनेके पश्चात् राजाने देवर्षि नारदका दर्शन कर जानेके लिये अपनी प्राण-पुत्तलिका पार्व्वतीको बुला भेजा। तदनुसार अपनी जया और



नारद और पार्वती।

DURGA PRESS, CALCUTTA.

विजया नाम्नी प्रिय सहचरियों सहित भुवन मोहिनी पार्व्वतीने धीरे धीरे उस कमरेमें प्रवेश किया जिसमें नारदजी बैठे हुए राजा हिमवानसे बातें कर रहे थे। ततक्षण पार्वतीकी अलौकिक रूप-छटासे कमरा उद्भासित हो गया। मानों स्वयं चन्द्रमा राजमहलके उस छोटे कमरेमें उपस्थित हो गया हो। राज-कन्याकी अपूर्व्व कमनीय कान्ति देखकर देवर्षि चकित हो गये! ऐसी भोली भाली मोहिनी मूर्त्ति शायद नारदजीने बहुत कम देखी थी। इसीसे वे अत्यन्त स्नेहपूर्ण दृष्टिसे बड़ी देर तक रूपमयी पार्वतीकी रूप-छटा निहारते रह गये। पार्वतीने धीरे धीरे मुनिके समीप जाकर उनके चरणोंमें प्रणाम किया। देवर्षिने बड़े प्रेमसे बालिकाके सिरपर हाथ फेरकर शुभाशीर्व्वाद प्रदान किया। इसके बाद राजा हिमवानको सम्बोधन कर बोले,—"राजन्! आप बड़े सौभाग्य-शाली हैं। क्योंकि आद्या शक्ति भगवती शिवानी सतीने, अपने पिता राजा दक्षके यज्ञमें देह परित्याग कर पार्वतीके रूपसे आपके यहां पूनर्जन्म ग्रहण किया है। यह भगवान शङ्करकी अर्द्धाङ्गिनी है। जिस दिनसे सतीने शरीर त्याग किया है, उसी दिनसे भगवान भोलानाथ अपना चिर-आवास-स्थल कैलास छोड़कर, आपके हिमालयके 'योगासन' नामक शिखरपर योगासीन हैं और अपनी बिछड़ी हुई पत्नीकी पुनर्प्राप्तिके लिये अखण्ड समाधि लगाये बैठे हैं। उनके इस तरह विरक्त होकर बैठ जानेसे सृष्टि कार्य्यमें बड़ी शिथिलता उपस्थित हो गई हैं। इससे ब्रह्मा और विष्णु आदि

विशेष चिन्तित हो गये हैं और शङ्करजीको पुन दार-परिग्रह, कर संसारी बनानेका उपाय सोच रहे हैं। उन्हीं लोगोंके आदेशानुसार मैं यह संवाद देने आपके पास आया हूँ। आप अपनी कन्याको शिवजीको समर्पण कर विश्वका कल्याण साधन कीजिये।"

देवर्षि नारदका कथन सुनकर हिमवान और मेनका परम पुलकित और विस्मित हुए। स्वयं जगधात्री शिवानीने पार्वतीके रूपमें पदार्पण कर उन्हें कृतार्थ किया है, यह सोचकर वे और भी आनन्दित हुए। उन्होंने पार्वतीको शिवको समर्पण करनेका निश्चय कर लिया, परन्तु साथ ही इस बातकी चिन्ता भी उपस्थित हुई, कि इस तरह अयाचित भावसे कन्याको शिवके हाथोंमें क्योंकर समर्पित कर सकेंगे। देवादि देव महादेव क्या उनकी कन्याको ग्रहण कर उन्हें सौभाग्यशाली करेंगे ?

राज दम्पतिको इस तरह चिन्तित देखकर नारदजीने कहा—"आपलोग इसकी कोई चिन्ता न कीजिये। मैं सब ठीक कर लूंगा। तबतक आप अपनी कन्याको शिवकी परिचर्य्याके लिये योगासनशैल भेजा कीजिये और पति रूपसे भगवान शङ्करकी सेवा करनेका उपदेश दीजिये। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि पार्वतीकी सेवा तथा उसकी अलौकिक रूपराशि देखकर शिवजी अवश्य ही प्रसन्न होंगे और पूर्व्व जन्मके सम्बन्धका विचार कर स्वयं उसे पत्नी रूपमें ग्रहण करनेका प्रस्ताव करेंगे।"

इसके बाद और भी आवश्यक उपदेश देकर नारदजीने राजा हिमवानसे विदा लेकर ब्रह्मलोककी यात्रा की।

शिवकी साधना

अपनी प्रियतमा पत्नीके वियोगसे शिव अत्यन्त दुःखी हुए। क्योंकि परम विरक्त, संसारत्यागी शिवके लिये सती ही सब कुछ थीं। सतीको पाकर ही योगिराजने संन्यास छोड़कर गृहस्थाश्रमका अवलम्बन किया था। इसीसे सतीके बिना उन्हें सारा कैलास मानों सूना सा प्रतीत होने लगा। परम ज्ञानी शङ्कर इतरजीवोंकी भाँति पति-वियोगसे व्यथित हो, इधर-उधर भ्रमण करने लगे। कभी घने वनोंमें, कभी पर्वतकी ऊंची चोटियोंपर, कभी पहाड़ी झरनोंके किनारे बैठकर वे प्रियतमा पत्नीकी चिन्ता करने लगे। शिवकी ऐसी दशा देखकर, नन्दी तथा भैरव आदि अनुचरोंको बड़ी चिन्ता हुई, परन्तु उनके निकट जाकर उन्हें समझा बुझाकर शान्त करनेका साहस किसीको न हुआ। क्रमशः सतीहीन कैलास पर रहना शिवके लिये बड़ा ही कष्टकर प्रतीत होने लगा। कैलासके जिन रमणीक स्थानोंमें बैठकर वे अपनी प्राण प्यारीसे प्रेमालाप किया करते थे, वे उन्हें बड़े ही भयंकर मालूम होने लगे। इसीसे कैलास छोड़कर उन्होंने इधर-उधर भ्रमण कर समय बिताना आरम्भ किया। परन्तु इससे भी उनके व्यथित हृदयको शान्ति न मिली। सतीकी प्रेममयी मूर्ति दिन रात उनकी आँखोंके सामने नाचने लगी।

बनकी रमणीक शोभा, झरनोंकी बहार, सूर्य्यास्तके समय हिमालयकी ऊंची चोटियोंकी मनोहर शोभा, बनके पक्षियोंकी सुहावनी बोलियां आदि नाना प्रकारके प्राकृतिक दृश्य विरही शिवकी विरहाग्निको और भी भड़काने लगे। वे मन ही मन कहने लगे,— "प्रिय, शङ्करी! कहां हो? एक बार अपने भोलाकी दशा तो देख जाओ। हाय! जिसका सामान्य अपमान तुम्हारे लिये इतना असह्य हो गया था, कि तुमने अपनी देह तक छोड़ दी, उसकी यह बिरहावस्था तुम कैसे देख सकोगी? आवो, प्रेममयी! एक बार अपनी आँखोंसे मेरी दशा देख जाव। अहा, तुम धन्य हो। तुम्हारा पातिव्रत धन्य है। तुमने पतिप्रेमकी पराकाष्ठा दिखला दी। तुम्हारा आदर्श पति-प्रेम संसारकी पतिप्राणाओंके लिये आदर्श होगा। तुम्हारे आदर्शका अनुकरण कर वे अपना जीवन धर्म पालन कर सकेंगी। तुम मरी नहीं, वरन् अमर हो गई हो। तुम्हारा यह आत्मोत्सर्ग जगत्‌के स्त्री-इतिहासकी अति मूल्यवान सामग्री होगा। प्रियतमे! मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध तो जन्म जन्मान्तरका है। कोई शक्ति उस अटूट सम्बन्धको तोड़नेमें समर्थ नहीं है। मुझे विश्वास है—दृढ़ विश्वास है, कि तुम कहीं न कहीं मेरी प्रतीक्षा कर रही हो। मेरा और तुम्हारा मिलन अनिवार्य्य है। अतएव मुझे भी कहीं स्थिर होकर, तुम्हें प्राप्त करनेके लिये तपमें प्रवृत्त होना चाहिये। योगसे क्या नहीं होता?"

इसी तरहकी बातें सोचते और भ्रमण करते हुए भगवान

शङ्कर हिमालयके 'योगासन' नामक अत्युच्च शैल-शिखर पर जा पहुँचे। उस स्थानकी अनुपम प्राकृतिक छटा देखकर उनके व्यथित हृदयको किञ्चित शान्ति प्राप्त हुई। इसलिये एक साफ़ सुथरी चट्टान पर वे मृगछाला बिछाकर बैठ गये। कुछ देरके बाद प्रभुको ढूँढ़ते हुए उनके प्रभुभक्त अनुचर वर्ग भी वहां आ पहुँचे। उस शान्तिमय पवित्र स्थानमें कुछ क्षण विश्राम करनेसे शिवने विशेष शान्ति प्राप्त की। अतएव कुछ दिन वहीं ठहरकर वे योगाभ्यास करनेका विचार करने लगे।

एक ऊंची और समतल श्रृङ्गवेदी पर कमलासन मारकर योगीश्वर शिव अखण्ड समाधि लगाकर बैठ गये। भैरव तथा नन्दी आदि अपनी भयङ्कर पिशाच सेनाद्वारा उस स्थानकी शान्ति रक्षा करने लगे। इन विकट रक्षकोंकी कठोर कार्य्यतत्परताके कारण कोई जीव उस शान्तिमय स्थानकी शान्ति भङ्ग करनेका साहस नहीं कर सका।

देवाधि देव महादेवकी साधनाका संवाद पाकर शैलाधिराज हिमवानने अपने मन्त्रियोंके साथ योगासन शैलपर जाकर उनका दर्शन और यथोचित पूजन कर सन्तोष किया। इसके बाद घर लौट कर अपनी कन्या पार्वतीको बुलाकर कहा—

"बेटी, मैंने इस समय तुम्हें एक बड़े आवश्यक कार्य्यके लिये बुलाया है। तुम बड़ी समझदार लड़की हो। मेरी बातोंको खूब ध्यान देकर सुनो और संकोच छोड़कर उसीके अनुसार कार्य्य

करो। उस दिन नारदजीकी ज़बानी अपने पूर्व्व जन्मका वृत्तान्त सुन चुकी हो। देवर्षि नारद त्रिकाल-दर्शी योगी हैं। उनके मुँहसे असत्य बात कदापि नहीं निकल सकती। इसके सिवा बचपनसे ही शिवके प्रति तुम्हारी श्रद्धा-भक्ति देखकर भी मालूम होता है, कि तुम निश्चय ही भवानी शङ्करी हो। इसी विश्वासके अनुसार मैं मनही मन तुम्हें शिव-चरणोंमें अर्पण कर चुका हूँ। साथ ही मुझे यह भी विश्वास है, कि मैंने यह कार्य्य तुम्हारी इच्छा और आकांक्षाके प्रतिकूल नहीं किया है, इसीसे तुम्हारी अनुमति लेना भी आवश्यक नहीं समझा है। अब इस सम्बन्धमें तुम्हारा क्या कर्तव्य है, वही बता देनेके लिये मैंने तुम्हें यहां बुलाया है। तुम्हारे शङ्कर निकट ही, योगासन शिखर पर आकर घोर तपस्या कर रहे हैं। उनके इस तरह विश्व-कार्य्य छोड़कर दिन रात तपमें लग जानेसे सृष्टि कार्य्यकी बड़ी क्षति हो रही है। क्योंकि इस त्रिगुणात्म सृष्टिके तीन गुणोंमें एक अन्यतम गुणके वे अधिष्ठाता देवता हैं। उस दिन नारदजी यह भी कहते थे, कि भगवान शङ्करकी यह उदासीनता देखकर ब्रह्माजी और विष्णुजी बड़े चिन्तित हैं। उधर तारक नामक असुरने भी बड़ा उत्पात् मचा रखा है। उसके अत्याचारोंसे प्रजा घबरा उठी है। अतएव अब उसका नाश हो जाना परमावश्यक है। परन्तु वह बड़ा ही शक्तिशाली हो गया है। उसकी प्रबल शक्तिको दमन करनेके लिये महादेव जैसे प्रतिभावान पुरुषकी ही आवश्यकता है। इस

लिये कोई ऐसी तदबीर होनी चाहिये, जिससे वे तप छोड़कर संसारी बनें। तुम उनकी जन्म जन्मान्तरकी संगिनी हो, इस लिये उन्हें संसारी बनानेको अधिकारिणी भी तुम्हीं हो। अब तुम अपना कर्तव्य पालन करो और कलसे नित्य विश्वनाथके योगाश्रममें जाकर उनकी यथोचित सेवा टहल किया करो। अपनी प्यारी सहेलियां जया और विजयाको भी साथ ले लिया करना। वे दोनों बड़ी बुद्धिमती हैं, उनके साथ रहनेसे इस कार्य्यमें तुम्हारा चित्त भी खूब लगेगा।"

सिर नीचा कर पिताके चरणोंकी ओर देखती हुई, पार्वती बड़े ध्यानसे पिताका उपदेश सुन रही थी। पिताके चुप हो जाने पर उसने मधुर, किन्तु स्पष्ट स्वरसे कहा,—"आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य है!"



(६)

पार्वतीकी शिव-सेवा

आहार, निद्रा आदि समस्त जीवनोपयोगी व्यापारोंको छोड़ कर दत्तचित हो, शङ्करने अटल समाधि लगा दी। उनके प्रधान अनुचर नन्दी और भैरव सतर्कता सहित आश्रमकी रक्षा करने लगे। हठात् एक दिन आश्रमके निकट ही किसी रमणीके नूपुरकी झङ्कार सुनकर दोनों एक साथ ही चौंक पड़े। क्रमशः झङ्कार आश्रमके निकट प्रतीत होने लगी। इस निर्ज्जन स्थानमें रमणीके आभूषणोंका शब्द सुनकर भैरव और नन्दीको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। आश्चर्य्य चकित हो दोनों उस मधुर झङ्कारका पूरा पता लगानेकी इच्छासे उठकर खड़े हुए। इतनेमें उन्हें, अपनी दो सखियोंके साथ आती हुई, एक भुवन-मोहिनी बालिका दीख पड़ी! बालिकाका चिर प्रसन्न और प्रतिभावान मुखारविन्द देखकर दोनों और भी विस्मित हो गये। बालिका धीरे धीरे उनके अत्यन्त समीपवर्ती हो गई। एक अपूर्व्व सौन्दर्य्य-ज्योतिसे आश्रम चमक उठा। बालिकाके चेहरेपर एक अपूर्व्व मातृ-स्नेह झलक रहा था। उसको देख कर न जाने क्यों हृदयमें विचित्र श्रद्धाभक्तिका भाव उदय हो जाता था। ऐसी शान्त, तेजोमयी और गम्भीर मूर्त्ति शायद नन्दी और भैरवने कभी न देखी थी।

पवित्र मातृ-मूर्त्तिका दर्शन कर दोनों आनन्द विह्वल हो गये। हाथसे त्रिशूल आप ही आप खिसक कर गिर पड़ा, किसीके मुंहसे कोई बात नहीं निकली। मातृहीन बालकके मनकी अतीत स्मृतिकी भांति एक विचित्र भावसे नन्दी और भैरवका हृदय परिपूर्ण हो गया। मानों कोई प्रबल शक्ति अलक्ष्य भावसे, उस मातृ-मूर्त्तिके सामने सिर झुकानेके लिये नन्दी और भैरवको विवश करने लगी। दोनों भौंचकसे खड़े रह गये। बालिका धीरे धीरे, उनके सामनेसे होती हुई ध्यानमग्न शिवके निकट पहुंची। उस समय भैरव और नन्दीके मनमें स्वतः यह प्रश्न उदय होने लगा, कि तेजपुञ्ज योगिराज शङ्करके निकट निडर भावसे चली जानेवाली यह महाशक्तिशालिनी महिमामयी बालिका कौन है?

योगीश्वर शिवके निकट जाकर उनके चरणोंमें भक्ति पूर्व्वक प्रणाम करनेके बाद बालिकाने कहा,—"मैं राजा हिमवानकी कन्या पार्वती हूं। पिताकी आज्ञासे आपकी सेवा करने आई हूं। कृपाकर मुझे आज्ञा दीजिये।"

यद्यपि स्त्रियोंका रहना पूजा पाठ और जपतपके लिये विघ्न-कारक होता है, तथापि शिवने पार्वतीकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। सच तो यह है, कि चित्तमें विकार उत्पन्न करनेवाली सामग्रीके उपस्थित रहते भी जो अपने चित्तको संयत रख सकते हैं, वही सच्चे महापुरुष और सच्चे संयमी कहे जाते हैं।

भगवान शङ्करकी आज्ञा पाकर पार्वती तनमनसे उनकी सेवा

सुश्रूषा करने लगी। प्रति दिन पौ फटनेसे कुछ पहले ही वह अपनी सहेलियोंके साथ योगाश्रममें पहुंच जाती और झाड़ू देकर समस्त आश्रमका कूड़ा कर्कट साफ कर देती। इसके बाद गङ्गाजल लाकर तपकी बेदीको धो पोंछ डालती। फूल चन्दन, और यज्ञकी सामग्री आदि एकत्र कर सखियोंके साथ नहाने चली जाती। नहा धोकर, फूल चन्दन और अर्घ्य आदि नाना प्रकारके उपचारोंसे वह शिवकी पूजा करने बैठती। पूजा करते करते पार्वती तन्मय हो जाती। ध्यान मग्न शिवकी ओर टकटकी बाँध कर देखते देखते उसका समस्त बाहरी ज्ञान विलुप्त हो जाता। जिस तरह ब्रह्माण्डमें मग्न हो जानेपर प्रवीण योगी अपनेको भूल जाता है, उसी तरह पार्वती भी शिवको देखते देखते विभोर हो जाती। जिस समय सुगन्धित फूलोंके साथ चन्दन चर्चित विल्वपत्र अञ्जलिमें लेकर वह शिवके चरणोंमें अर्पण करती उस समय उसकी दशा देखकर जया-विजया भी प्रेम मुग्ध हो जातीं। उन्हें मालूम होता, मानों पार्वती पुष्पाञ्जलिके साथ ही अपना मन, प्राण और देह आदि सर्वस्व शिवके चरणोंमें समर्पित कर रही है। पार्वतीकी अपूर्व्व पूजा देखकर, उसकी सखियोंको मालूम हो जाता, कि स्त्रियोंकी सब पूजाओंका सार पति-पूजा ही है। मानों उन्हें पति-पूजाकी विधि और कर्त्तव्य सिखानेके लिये ही पार्वती यह उज्ज्वल दृष्टान्त दिखा रही है।

शिवकी पूजा करते हुए पार्वतीको मालूम होने लगता, कि

शायद इस जगतमें इस पूजासे बढ़कर कर्त्तव्य-कर्म रमणीके लिये दूसरा नहीं है। यही स्त्री जीवनका सर्व श्रेष्ठ कर्त्तव्य है, यही स्त्रीका नित्य कर्त्तब्य और यही नारी-जीवनकी एक मात्र साधना है। यह पूजा ही स्त्रियोंको गौरवान्वित करती है। जो रमणी इस कर्त्तव्यको पालन करनेमें पराङ्मुख होती है, उसका जीवन व्यर्थ हैं। इसीसे शिवकी पूजा करनेके समय पार्वती तनमनकी सुधि भूलकर उसी पूजामें ही निमग्न हो जाती थी। पूजाके समय उसे माता पिता, सखी सहेली. पढ़ना लिखना, गाना बजाना आदि सब भूल जाता। उस समय शिवकी ध्यानमग्न मूर्तिके सिवा पार्वतीको और कुछ भी दिखाई नहीं देता। उस समय एक मात्र शिवको ही वह अपना जीवन सर्वस्व समझने लगती।

इस तरह पूजा करते करते बालिका अवस्थामें ही पार्वतीने प्रकृत रमणी-जीवन लाभ कर लिया। मानों स्त्री-जीवनका कर्त्तब्य, उद्देश्य और महत्व आदि सभी पार्वतीकी समझमें आ गया। इसीसे वह संसारके स्त्री-समाजके सामने एक महान् आदर्श स्थापित करनेके उद्योगमें लग गई।

पार्वतीको आराधना करते करते बहुत दिन बीत गये। परन्तु भोलानाथ प्रसन्न नहीं हुए। प्रसन्नता तो दूर रही। उन्होंने एक बार आंखें खोलकर पार्वतीको अच्छी तरह देखा भी नहीं। वे अपनी निष्काम साधनामें ऐसे तल्लीन हो गये थे, कि बालिकाके इस अपूर्व आत्मोत्सर्गको उन्हें कुछ खबर ही न हुई। यदि

सौभाग्यवश कभी ध्यानसे विरत होकर भोलानाथ आंखें भी खोलते तो मानों उनकी दृष्टि इस नश्वर जगत्की किसी वस्तु पर पड़ती ही नहीं। किसी दूसरे ही जगत्की अनुपम शोभा देखनेसे उन्हें फुरसत नहीं थी।

भोलानाथकी उदासीनता देखकर पार्वती एक पलभरके लिये भी निराश या हतोत्साह न हुई। उसे दृढ़ विश्वास था, कि एक न एक दिन उसकी साधना अवश्य सफल होगी। उस दिन इष्टदेव निश्चय ही प्रसन्न होंगे। इसीसे वह प्रति दिन दूने उत्साह और दूनी श्रद्धाभक्तिसे शिवकी आराधनामें लग जाती।

इसी तरह कुछ दिन और बीते। परन्तु भोलानाथ टससे मस नहीं हुए। उनकी योग-निद्रा भङ्ग नहीं हुई। पार्वतीने सोचा, कोई चिन्ता नहीं, मैं अपना जीवन, प्राण प्रभुके चरणोंमें अर्पण कर मनही मन इन्हें पति स्वीकार कर चुकी हूं। इनकी पूजा करना मेरा कर्त्तव्य है। पति सदय हों या नहीं, मेरी साधना सफल हो या नहीं, मैं अपने कर्त्तव्यका पालन करती रहूंगी। पति-सेवा स्त्रीका कर्त्तव्य है, मैं उसका प्रतिदान नहीं चाहती। मैं प्रसन्नता पूर्व्वक जन्म जमान्तर तक पति-देवके चरणोंकी सेवा करती रहूंगी और कभी किसी प्रकारके प्रतिफलकी कामना नहीं करूँगी। आजसे यही मेरा जीवन-व्रत होगा।

अपूर्व्व दृढ़ता, तन्मयता और उत्साह सहित पार्वती पति-पूजा करने लगी। मानों शिवानी शिवमय हो गई थीं। बालिकाका

कठोर व्रत देखकर लोगोंको आश्चर्य होने लगा। किसे आशा थी, कि एक किशोरी इस तरह मनप्राण अर्पण कर पतिकी सेवामें लग जायेगी। कन्याका पति-प्रेम देखकर माता पिताको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। परन्तु भावी जामाताकी उदासीनताने उन्हें उदास कर दिया। पार्वती इस तरह समस्त सांसारिक भोग विलास, और आशा आकांक्षा छोड़कर शिवकी सेवा कर रही है और वे उसे आंख खोलकर देखते भी नहीं! यह क्या कम चिन्ताकी बात है। इस तरह कबतक भोला आंखें बन्द किये बैठे रहेंगे और बेचारी बालिका कबतक अपना सर्वस्व भूलकर उनकी सेवामें लगी रहेगी? अब क्या किया जाय? इतनी बड़ी लड़की आजतक कुंवारी है और कोई उपाय नहीं सूझता! इतनी दूर अग्रसर हो जाने पर अब पार्वतीको शिव-सेवासे विरत करना तो सहज नहीं है। उसने मनही मन शिवको पति बना लिया है, अब यदि उसे शिव-सेवा छोड़नेकी सलाह दी जाये, तो स्त्रीधर्मका घोर अपमान होगा। बस, अब पार्वतीको उसके भाग्यपर छोड़ देनेके सिवा और कोई उपाय नहीं है, क्योंकि बात हाथसे निकल चुकी है; पार्वती शिवकी हो चुकी है।

(७)

देवताओंका निमन्त्रण

देवराज इन्द्रके वृहत् सभा-भवनमें देव देवियोंकी महती सभा बैठी है। इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम, कुवेर, चन्द्र और सूर्य्य आदि प्रायः सभी प्रधान प्रधान देवता अपनी अपनी पत्नियों सहित सभामें उपस्थित हैं। देवताओंके अतिरिक्त यक्ष, किन्नर गन्धर्व्व और अप्सरायें भी उपस्थित हैं। बड़ी महती सभा है। ऐसी बड़ी सभा देवलोकमें बहुत कम बैठा करती है। जब देव-लोकपर कोई महान् संकट उपस्थित होता है, तभी इतनी बड़ी सभा बैठती है। इस सभामें देवराजने रतिनाथ कामदेवको भी बुलाया है। कामदेव अपनी प्यारी पत्नी रतिको साथ लिये, विचित्र चमकीले वस्त्राभूषणोंसे सजधज कर देवेन्द्रकी बगलमें बैठे हैं। कामदेवकी कमनीय कान्ति और भड़कीली पोशाकसे सभा जगमगा रही है, उनकी बाँई ओर परमा सुन्दरी स्त्री बैठी हुई है।

आज इन्द्रने रतिनाथको खास तौरपर निमन्त्रण देकर बुलाया है और बड़े सम्मानके साथ अपनी बगलमें बैठाया है। इससे रतिनाथ मदन बड़े प्रसन्न हैं। इतना बड़ा राज-सम्मान प्राप्तकर कौन प्रसन्न नहीं होता ?

समस्त सभासदोंके उपस्थित हो जानेपर देवराजने उठकर

सबका स्वागत किया। इसके बाद देव देवियोंको सम्बोधनकर बोले,—"राक्षस-राज तारकके घोर अत्याचारोंसे तीनों लोककी प्रजा घबरा उठी है। विधातासे वर प्राप्तकर उस पापीने अबाध रूपसे पृथ्वीपर पाप फैलाना आरम्भ कर दिया है। उसके भयसे ऋषियोंने यज्ञादि देव-कार्य्य करने परित्याग कर दिये हैं। ब्राह्मणोंने अपने नित्य नैमित्तिक षट कर्म्म छोड़ दिये हैं और योगियोंके योग साधनमें बाधा पड़ रही है। पृथिवीपर धर्म्मका ह्रास और नास्तिकताका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। इसलिये उस असुरके विनाशका उपाय पूछनेके लिये हमलोग भगवान ब्रह्माकी सेवामें उपस्थित हुए थे। उन्होंने हमलोगोंके प्रति सम्पूर्ण सहानुभूति दिखाते हुए कहा, कि मेरे बरदानके कारण तारक इतना उद्दण्ड हो गया है। अब किसी न किसी तरह उसका नाश अवश्य हो जाना चाहिये। उनकी राय है, कि सम्मुख युद्धमें तारकको परास्त करना ही सबसे उत्तम उपाय है; क्योंकि उसके नाना प्रकारके अत्याचारोंसे घबराकर समस्त प्रजा राजद्रोही हो गई है और विषम राज्य-क्रान्ति उपस्थित कर उसकी अधार्म्मिक और अत्याचारी राज-सभाको निर्मूल करनेके लिये प्रस्तुत है। आपलोग शीघ्र ही देव-वाहिनी तैयार करें और किसी ऐसे वीर पुरुषको सेनाध्यक्ष बनावें जो रणविद्या कुशल हो। विधाताने यह भी कहा है, कि यदि शिवके वीर्य्यसे उत्पन्न पुरुष सेनापति हो तो कार्य्य शीघ्र होगा; क्योंकि शिव या

उनसे उत्पन्न पुरुषके सिवा और कोई असुरराज तारकका मुकाबिला नहीं कर सकता।

विधाताका कथन सुनकर मैंने निवेदन किया था, भगवान! यह दोनों बातें इस समय असम्भव हैं। क्योंकि भगवान शङ्कर विश्वकार्य्य छोड़कर इस समय योग साधन कर रहे हैं। उनको इस कार्य्यसे विरत कर सेनापति बनाना बड़ा ही कठिन कार्य्य है। रही उनके वीर्य्यसे उत्पन्न दूसरे पुरुषकी बात सो वह भी इस समय असम्भव ही है। शङ्करजीको कोई पुत्र नहीं है और उनकी स्त्रीका देहान्त हो चुका है; इसलिये शीघ्र पुत्र होनेकी कोई सम्भावना भी नहीं है।

मेरी बात सुनकर विधाताजीने कहा,—"तुमने जो कुछ कहा, वह सब मैं जानता हूं। परन्तु मैंने जो कुछ कहा है, उसके अतिरिक्त तारकके निधनकी कोई तदबीर नहीं है। अतएव इसके सम्बन्धमें तुमलोगोंका कर्त्तव्य यही है, कि जिस तरहसे हो सके, शिवको विवाह करनेके लिये राजी करो। उनकी पहली स्त्री सतीने राजा हिमवानके यहां पुनर्जन्म लिया है और पार्वतीके रूपमें दिनरात उनकी सेवा कर रही है। तुमलोग जाकर शङ्करजीसे पार्वतीका विवाह कराओ; क्योंकि पार्वती और शङ्करसे जो पुत्र उत्पन्न होगा वही असुरराज तारकको निहत कर सकेगा।"

मैंने फिर निवेदन किया—"भगवन्! मान लीजिये, कि

हमलोगोंने किसी तरह शिवजीको राजीकर पार्वतीसे उनका विवाह करा दिया और उनसे कोई पुत्र भी उत्पन्न हो गया, तो क्या वह बालक तुरन्त ही तारकको परास्त करनेमें समर्थ हो सकेगा ? फिर, यह सब बातें एक दिनकी तो हैं नहीं; इसमें बहुत समय लगेगा। तबतक क्या हमलोग चुपचाप तारकका अत्याचार सहते रहें ?"

विधाताने कहा,—"देवराज, यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि तारककी राजसत्ता कितनी दृढ़ है। एक पुरानी और सुदृढ़ राजसत्ताकी जड़ उखाड़ फेंकना दो चार दिनका काम नहीं है। इसके लिये वर्षों क्या युगोंकी साधना आवश्यक होती है। इसके सिवा जबतक तारकका कर्म्मफल पूर्ण नहीं होगा, तबतक उसका नाश असम्भव है। इसलिये तुमलोग अभीसे जाकर आन्दोलन करना आरम्भ कर दो। जबतक तुम्हारे आन्दोलनकी सफलताका समय आयेगा, तबतक तारकका कर्मफल भी पूर्ण हो जायगा और शिवसे उत्पन्न बालक भी युद्ध करनेके योग्य हो जायगा। उसी समय तुमलोगोंका मनोरथ सिद्ध होगा।"

इन्द्रने कहा,—"उपस्थित देव वृन्द ! भगवान विरञ्चिका आदेश शिरोधार्य्य कर हमलोग लौट आये। अब विचारणीय विषय यह हैं, कि भगवान शङ्करको पार्वतीका पाणिग्रहण करनेके लिये किस तरह राजी किया जाय ? ऐसी कौनसी तदबीर है, जिसके द्वारा योगिराज शङ्कर गृहाश्रमी बनाये जा सकते हैं ? हमने

सोचा था, कि उनके निकट जाकर अपना दुखड़ा सुनाकर उन्हें किसी तरह राजी कर लेंगे, परन्तु उनकी अटल समाधिने उस सम्भावना पर पानी फेर दिया है। क्योंकि वे परम योगी हैं, उनका ध्यान भङ्ग करना बड़ा ही टेढ़ा काम है। हां, यदि महाशय मदन यह भार लें और चेष्टा करें तो सम्भवतः कार्य्य हो सकता है। इसीलिये हमने मदन महाशयको बुलाया है। परमात्माने इनको असाधारण शक्ति प्रदान की है। ये प्रेमके अधिष्ठाता हैं। पशु पक्षी कीट पतङ्ग आदि प्राणि मात्रके हृदयमें प्रेमका सञ्चार करना ही इनका प्रधान कार्य्य है। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि मदन देव इस संकटके समय अपनी पूर्ण शक्ति द्वारा महादेव शङ्करकी समाधि भङ्ग कर, उनके हृदयमें पार्वतीके प्रति प्रेम उत्पादन करनेकी चेष्टा करेंगे।"

देवेन्द्रके मुंहसे अपनी प्रशंसा सुनकर मदन फूल उठे। उन्होंने बड़े गर्वसे कहा,—"महामति देवेन्द्र यथार्थ कहते हैं। परमात्माकी कृपासे मुझमें ऐसी शक्ति है, कि मैं क्षणभरमें चराचरको विक्षुब्ध कर सकता हूं। योगी, यती, संन्यासी सबपर मैं अपना प्रभाव डाल सकता हूं। बड़े बड़े तपस्वी मेरे प्रभावसे बचनेके लिये नाना प्रकारकी तदवीरें किया करते हैं, परन्तु मैं इच्छा करते ही उनकी सारी तदवीरें विफलकर उनको अपने वशमें कर लेता हूं। यद्यपि मैं 'कुसुमायुध' हूं—मेरे अस्त्रशस्त्र कोमल फूलोंके हैं, परन्तु मैं अपने पुष्पवाणों द्वारा चन्द्रधारी विष्णु और पिनाक

पाणि शङ्करको भी विचलित कर सकता हूं। मेरा एक नाम पञ्चशायक भी हैं। मेरे पास पाँच शस्त्र हैं। इनकी सहायतासे मैं क्या नहीं कर सकता? यह मैं जानता हूं कि इसमें मेरी कोई बहादुरी नहीं हैं, क्योंकि मुझे यह शक्ति आपही लोगोंके आशीर्वादसे प्राप्त हुई है। आपलोग चिन्ता छोड़कर मुझे आज्ञा दीजिये। मैं अभी अपने प्रिय सहचर वसन्तकी सहायतासे शिवका ध्यान तोड़वा दूंगा।"

मदान्ध मदन गर्वके वशीभूत होकर, परिणामकी चिन्ता किये बिना ही परम आत्म संयमी शङ्करके विरुद्ध कार्य्य करनेके लिये प्रस्तुत हो गये। उन्हें खबर नहीं रही, कि आत्म-संयम सामान्य मनुष्यमें भी अमित शक्ति भर देता है, शिव तो शिव ही हैं।

मदनकी गर्व भरी बातें सुनकर इन्द्रादि देवता बड़े प्रसन्न हुए। उनलोगोंने अपना काम निकलनेके लिये उन्हें और भी बढ़ावा दिया। मदन शिवकी समाधि भङ्ग करनेके लिये तैयार हो गए। इन्द्रने प्रसन्नता पूर्व्वक सभाका विसर्ज्जन किया।

(८)

मदनकी महत्याला

देवेन्द्रकी सभासे लौटकर मदनने शिवके निकट जाने की तैयारी आरम्भ कर दी। उन्होंने अपने परम प्रिय मित्र ऋतुराज बसन्तको बुलाकर कहा,—“सखे बसन्त, हिमवानके योगासन शैल शिखरपर भगवान शङ्कर अखण्ड समाधि लगाकर तप कर रहे हैं। उनके इस तरह बैठ जानेसे सृष्टिको बड़ी क्षति पहुँच रही है। देवराजने मुझे बुलाकर शिवकी समाधि भङ्ग करनेकी आज्ञा दी है। देवताओंका संकट देखकर मैंने यह गुरु भार अपने ऊपर ले लिया है। यद्यपि ईश्वरकी दयासे मैं अपनी अमित शक्ति द्वारा बड़े बड़े योगियोंको भोगी बना सकता हूं, परन्तु भगवान शङ्कर ऐसे वैसे त्यागी नहीं हैं। इसीसे मैं इस कार्य्यमें कुछ तुमसे भी सहायता लेना चाहता हूं। तुम आज ही योगासन शिखरपर जाकर अपनी अद्भुत शक्ति द्वारा उस निर्ज्जन तपोवनको विलास-उद्यानके रूपमें परिणत कर दो। पल्लवहीन वृक्षोंको नवीन पल्लवोंसे सजा दो, सुन्दर और सुगन्धित फूलोंसे योगाश्रमके समस्त छोटे पौधोंको आच्छादित कर दो। नवीन नवीन कोमल लताओं द्वारा वनस्थलीके तमाम पेड़ोंको विजड़ित कर देना और कोकिल, पपीहा, आदि पक्षियोंको पेड़ोंपर बैठाकर निर्ज्जन योगाश्रमको खूब मुखरित कर देना। मैं सम-

भता हूं, कि यदि तुम अपनी पूर्ण शक्तिसे काम लोगे तो मैं बड़ी आसानीसे अपना काम कर सकूँगा। परन्तु देखना, यह सब काम बड़ी सावधानीसे करना। क्योंकि नन्दी ओर भैरव दिन रात अपनी प्रवल प्रेतवाहिनी द्वारा, सतर्कता पूर्व्वक, आश्रमकी रक्षा कर रहे हैं। उनकी आंखें बचाकर अलक्ष्य भावसे आश्रममें प्रवेश करना और धीरे धीरे सावधानीसे अपना कार्य्य आरम्भ कर देना। बस, अब अधिक विलम्ब न कर, जहांतक शीघ्र हो सके यात्रा कर दो। मैं अपने शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित होकर शीघ्र ही आता हूं।"

बसन्तके चले जानेपर मदनकी स्त्री रतिने आकर पतिके चरणोंमें प्रणाम कर कहा,—"प्राणनाथ! देवादिदेव महादेव परम योगी, आत्मसंयमी और जितेन्द्रिय हैं। उनका विरुद्धाचरण करनेमें आपका कल्याण नहीं होगा। आप उनके निकट न जाइये। मैंने जबसे आपकी प्रतिज्ञाका समाचार सुना है, तभीसे मेरा हृदये काँप रहा है, दाहिनी आंख बार बार फड़क रही है और तरह तरहके अपशकुन हो रहे हैं। आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर इस कठोर कार्य्यसे विरत हो जाइये। भगवान शङ्करको वशीभूत करना हँसी खेल नहीं है। आप तो क्या त्रिलोकमें ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जो भगवान रुद्रके सामने ठहर सके! अतएव आप मेरी बात मान लीजिये; क्योंकि जान बूझकर अपनेको संकटमें डालना बुद्धिमानी नहीं है।"

पत्नीका कथन सुनकर घमण्डी मदन मूछोंपर ताव देते हुए हँसकर बोले,—"वास्तवमें स्त्रियां बड़ी भीरु स्वभावा होती हैं। बात बातमें उन्हें आशङ्का ही हुआ करती है। प्रिये, तुम नाहक चिन्तामें पड़ी हो। परमात्माने मुझे जो शक्ति प्रदान की है, उसके सामने कोई ठहर नहीं सकता। जिस समय मैं शर सन्धानकर शिवके हृदयको विद्ध कर दूंगा उस समय उन्हें होश ही कहां रहेगा? शिव तो देवता हैं, चैतन्य हैं, मेरे वाणोंसे जड़ जगत् तक विक्षुब्ध हो सकता है। तुम किसी तरहकी आशङ्का न करो। भगवान सब मङ्गल करेंगे। यदि मैं शिवको अपने सम्मोहन जालमें फँसा सकूंगा तो समस्त विश्व मेरा लोहा मान लेगा। मैं देव सभामें तुम्हारे सामने ही शिवका ध्यान भङ्ग करनेकी प्रतिज्ञा कर चुका हूं। प्रण तोड़ना सत्पुरुषोंका काम नहीं है। अतएव अब मैं किसी तरह अपना संङ्कल्प परित्याग नहीं कर सकता।"

रति समझ गई, कि अब अधिक अनुरोध करना वृथा है। जो कुछ भाग्यमें बदा होगा, वही होगा। इसलिये पतिके अभिप्रायके विरुद्ध कार्य्य करना उसने उचित नहीं समझा।

परन्तु भावी अनिष्टकी आशङ्का बार बार उसके मनमें उदय होने लगी। उसने अति विनम्र स्वरसे कहा,—"मैं आपकी सहधर्म्मा स्त्री हूं। आपकी मङ्गल कामना करना मेरा धर्म है आपने जिस गुरुतर कार्य्यका भार लिया है, उसका पथ बड़ा ही कण्टकाकीर्ण है, इसीसे मेरा मन भयभीत हो रहा है। परन्तु

आपने देव-सभामें प्रतिज्ञा की है। इसलिये विशेष अनुरोध कर आपकी प्रतिज्ञा भङ्ग करना अनुचित समझती हूं। प्रार्थना केवल यही है, कि आप मुझे भी अपने साथ चलनेकी आज्ञा दीजिये। क्योंकि इस संकटके समय मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगी।"

मदनने स्त्रीकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और समयोचित सजधजके साथ बड़ी प्रसन्नतासे हिमालयकी ओर रवाना हुए। उस समय मदनके अङ्ग प्रत्यङ्गमें मानों अपूर्व्व उत्साहकी तरङ्ग उठ रही थी। बेचारेको क्या खबर थी, कि यही यात्रा उसकी 'महायात्रा' है।

---

(६)

मदनका शिव दर्शन.

एक समय ही ऋतुराज वसन्तका समागम देख नन्दीको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसने भैरवके निकट जाकर कहा,—"व्यापार कुछ समझमें नहीं आता। आज कई दिनोंसे आश्रमकी प्रकृतिमें विचित्र परिवर्तन हो रहा है। दिन रात शीतल सुगन्ध युक्त मन्द मन्द वायु चल रही है। वृक्षोंकी जिन डालियोंमें फल क्या एक सूखी पत्ती भी नहीं थी, उसमें आज नये किशलय दिखाई पड़ रहे हैं। कितने ही प्रकारके नये फूल खिल गये हैं। उनकी मधुर सौरभ चारों ओर फैल रही है। फूलोंका पराग पान करनेके लिये भौरोंकी झुण्ड इधर उधर उड़ती फिरती है। कल परसों तक यहां किसी पक्षीका नामो निशान तक नहीं था, आज जिधर देखिये उधर ही नाना प्रकारके पक्षी चहकते फिरते हैं। यह सुनसान तपोवन आजकल नन्दन वन रहा है। क्या इस ऋतु परिवर्तनका हेतु कुछ तुम्हारी समझमें आता है ?"

भैरवने कहा,—"नहीं भाई, मेरी समझमें कुछ भी नहीं आता ? मैं भी तो आज कई दिनोंसे इसी विचारमें पड़ा हूं, कि आखिर इस परिवर्त्तनका कारण क्या है। प्रकृतिहीमें क्यों मेरे तो मनमें अद्भुत परिवर्तन हो रहा है। जबसे माताजीने शरीर छोड़ा तबसे बराबर उदासी ही छाई हुई थी, परन्तु आज कल मनमें एक प्रकारकी प्रसन्नता सी मालूम होती है। केवल मेरी

हो यह दशा नहीं है। दलके भूतोंके चेहरेपर भी प्रसन्नताके चिन्ह दिखाई पड़ते हैं। तुम्हारे मनकी क्या हालत है ?"

नन्दी,—"मेरी भी ठीक वही दशा है, जो तुम्हारी हो रही है। इसीसे तो पूछता हूं, कि इसका कारण क्या है ?"

भैरव,—"मालूम होता है, कि लीलामय भगवान कोई नयी लीला आरम्भ करनेवाले हैं।"

नन्दी,—"हां, तुम ठीक कहते हो ? जब प्रभु इस तरह कठोर साधनामें लगे, तभी मैं समझ गया, कि कुछ न कुछ अवश्य ही होंनेवाला है। देखता हूं, कि आज मेरी कल्पना सत्य ही सत्यमें परिणत हो रही है।"

भैरव,–"कुछ भी हो। हमलोगोंको खूब सावधानीसे अपना काम करते रहना चाहिये और भूत प्रेतोंको भी सदैव सचेत करते रहना चाहिये।"

इस तरह बातें कर भैरव और नन्दी अपना अपना त्रिशूल धारणकर अपने अपने स्थानोंपर खड़े हो गये।

आश्रमके समीप जाकर मदनने देखा, कि भीषण मूर्त्ति भूत बैताल आश्रमके चारों ओर टहल रहे हैं और कुञ्जद्वार पर रुद्र मूर्ति नन्दी और भैरव, विराट् त्रिशूल धारण किये खड़े हैं। इन उद्भट पहरेदारोंकी कराल मूर्त्ति देखकर कामदेवका कलेजा कांप गया। सम्मुख द्वारसे जानेका साहस नहीं हुआ। कहीं ऐसा न हो, कि नन्दी और भैरव भीतर घुसने न दें या क्रुद्ध होकर

लड़नेको मुस्तैद हो जायें तो बड़ी मुशकिल होगी। इन महावीरोंसे लड़कर पार पाना सहज थोड़े ही हैं। यदि युद्धमें इन्हें नहीं जीत सका तो देवलोकमें कौन मुंह लेकर जाऊंगा। इसलिये इनको आँख बचाकर किसी तरह तपोवनमें घुस जाना ही उचित है। यह सोचकर, कामदेव आश्रमके पीछेसे सघन झाड़ियोंको पार कर, चोरकी तरह आश्रमके भीतर पहुंचे। पतिपरायण रति छायाकी भांति पतिके साथ थी।

आश्रममें प्रवेश करनेपर अपने प्रिय बन्धु वसन्तकी करामात देखकर मदनको बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने सोचा, बस अब क्या है! आधा काम तो बसन्तने ही कर दिया है। केवल एक पुष्पवाण मारकर शिवको जगा देने भरकी देर है।

इसी तरहको बातें सोंचते हुए, कुछ आगे बढ़नेपर मदनकी दृष्टि समाधि,-मग्न शिवपर पड़ी। उन्होंने देखा, एक शुभ्रवेदीपर मृगछाला बिछाये तेजःपुञ्ज योगेश्वर अटल समाधि लगाये बैठे हैं। मस्तकपर जटाजूट शोभा दे रहा है, विशाल ललाटपर सुन्दर त्रिपुण्ड रेखा चमक रही है, गलेमें रुद्राक्षकी माला लटक रही है और दोनों भुजाओंमें लिपटे हुए विषधर दोनों कन्धोंपर फण फैलाये मानों सतर्क भावसे शिव शरीरकी रक्षा कर रहे हैं। शङ्करके समस्त शरीरसे एक प्रकारकी ज्योति निकलकर चारों ओर निस्तब्धतामय प्रकाश फैला रही हैं। उस अपूर्व ज्योतिसे उद्भासित होकर आश्रमके पेड़-पल्लव और लतागुल्म आदि सभी

गम्भीरता पूर्व्वक अपने अपने स्थान पर अवस्थित हैं। मानों उसी ज्योतिसे आभान्वित होकर हवा भी संकुचित भावसे ही धीरे धीरे बह रही है। आश्रममें चारों ओर मानों निस्तब्धता और गम्भीरताका साम्राज्य स्थापित हो गया है।

धुर्ज्जटी शङ्करकी प्रशान्त और गम्भीर मूर्त्ति देखकर मदन सहम गये। आगे बढ़नेका साहस नहीं हुआ। ऐसी गम्भीर और भयावन् मूर्त्ति उन्होंने कभी नहीं देखी थी। शङ्करको देखते ही मदनका सारा जोशो खरोश हवामें उड़ गया। विषम आशङ्का और भयसे उनका हृदय बार बार काँपने लगा और चेहरेपर हवाइयाँ उड़ने लगीं। वे मनही मन समझ गये, कि शंकर साधारण योगी नहीं हैं। मदनने कितने ही तपस्वियोंका तप भङ्ग किया है। कितने ही संसार त्यागी ऋषियोंके हृदयोंमें क्षोभ उत्पन्न कर उन्हें पुनः संसारी बना दिया है। विश्वामित्र और पराशर आदि बड़े बड़े ऋषियोंको काम अपने दांवमें फँसाकर तपभ्रष्ट कर चुके हैं। परन्तु शंकरको विचलित करना सहज नहीं। एक मदन क्या, सहस्र सहस्र मदन भी शंकरको विचलित नहीं कर सकते। इन्द्रकी सभामें जो गर्व भरी बातें कहकर मदनने अपनी शेखी बघारी थी, उन्हें सोचकर वे मनही मन अतीव लज्जित हुए। रतिने ठीक कहा था, कि भगवान शंकरको वशीभूत करना तुम्हारी शक्तिसे बाहरकी बात है। ऐसे दुष्कर कार्य्यमें हाथ डालकर वास्तवमें मैंने बुद्धिमानी नहीं की है। अब

मान रहे चाहे जाये, लोग हंसी उड़ावें या प्रशंसा करें और देवता लोग सन्तुष्ट हों अथवा असंतुष्ट हों, मैं यह कार्य्य नहीं करूँगा। जान बूझकर आगसे खेलना बुद्धिमानीकी बात नहीं है।

अनुशोचना, आशंका और पश्चात्तापने मदनको इतना विह्वल कर दिया, कि उनके हाथका पुष्प-धनुष सरककर भूमिपर गिर गया; परन्तु मदनको इसकी जरा भी खबर न हुई।



(१०)

मदन दहन.

भगवान शङ्करकी समाधि भङ्ग करना साध्यातीत समझ कर मदनने घर लौट जानेका विचार किया। भूमिपर गिरा हुआ धनुषवाण धीरेसे उठाकर जिस राहसे आये थे, उसीसे वापस लौट जानेको उद्यत हुए, इतनेमें शैलराजसुता पार्वतीने अपनी दोनों सखियोंके साथ आश्रममें प्रवेश किया। सहसा पार्वतीके नूपुरकी मधुर ध्वनिसे विस्मित हो मदन ठहर गये। पहले तो उन्होंने समझा, कि शायद इन्द्रने मेरी सहायताके लिये अप्सराओंको भी भेज दिया है। परन्तु सामनेसे धीरे धीरे आती हुई पार्वतीपर दृष्टि पड़ी तो उनके आश्चर्य्यका ठिकाना ही न रहा। ऐसी कमनीय कान्ति, ऐसी अलौकिक रूप छटा और ऐसी मनोहर शोभा उन्होंने कहीं देखी थी या नहीं, इसमें उन्हें सन्देह होने लगा। उस दिन पार्वतीको उसकी सखियोंने पुष्पाभरणोंसे सजाया था। चोटीसे एँड़ी तकके सभी आभूषण, नाना प्रकारके रङ्ग बिरङ्गे फूलों द्वारा बनाये गये थे। इससे उसकी स्वाभाविक शोभा और भी बढ़ गई थी। हाथमें पूजाकी सामग्रीसे भरा हुआ थाल लिये, धीरे धीरे चलती हुई पार्वती पुष्पवती लताकी भांति मालूम होती थी। मदन निश्चल भावसे खड़े होकर उसकी

अनुपम सुन्दरता देखने लगे। पार्वतीको देखकर मदनके भयभीत हृदयमें साहसका सञ्चार हुआ। थोड़ी देर पहले तपमें मग्न योगिराज शंकरकी अवस्था देखकर, उनके मनमें जो भय छा गया था, वह पार्वतीको देखकर दूर हट गया। विश्वनाथको विजय कर सर्व विजयी बननेकी उत्कट अभिलाषा एकबार फिर मदनके हृदयमें जाग उठी। उन्होंने सोचा, ऐसा स्वर्ण सुयोग पाकर भी यदि मैं शिवका ध्यान नहीं भङ्ग कर सका तो वास्तवमें मेरे लिये बड़ी ही लज्जाकी बात होगी। अतएव यह अवसर चूकनेका नहीं है। इस रूपसीको शिवके सामने खड़ी कर लक्ष्य भेद कर मैं अवश्य ही कृतकार्य्य होऊंगा। मालूम होता है, कि विधाताने मुझपर सदय होकर ही इस रमणी-रत्नको यहां भेजा है। अब चिन्तामें वृथा समय नष्ट करना उचित नहीं है। इस तरह आशासे उत्तेजित होकर मदनने अपने पुष्प-धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर ठीक कर लिया और एक वृक्षकी ओटमें छिपकर खड़े हो गये।

इधर पार्वती अपनी सखियोंके साथ धीरे धीरे महादेवके निकट पहुंची और नित्य नियमानुसार पूजाका थाल एक साफ जगह स्थापित कर उसने भक्ति पूर्व्वक विश्वेश्वरके चरणोंमें प्रणाम किया। उसे तथा उसकी साथिनोंको कामके करामातको बिलकुल ही खबर न थी?

भगवान शंकरके लिये यज्ञादिकी सामग्री अलग रखकर

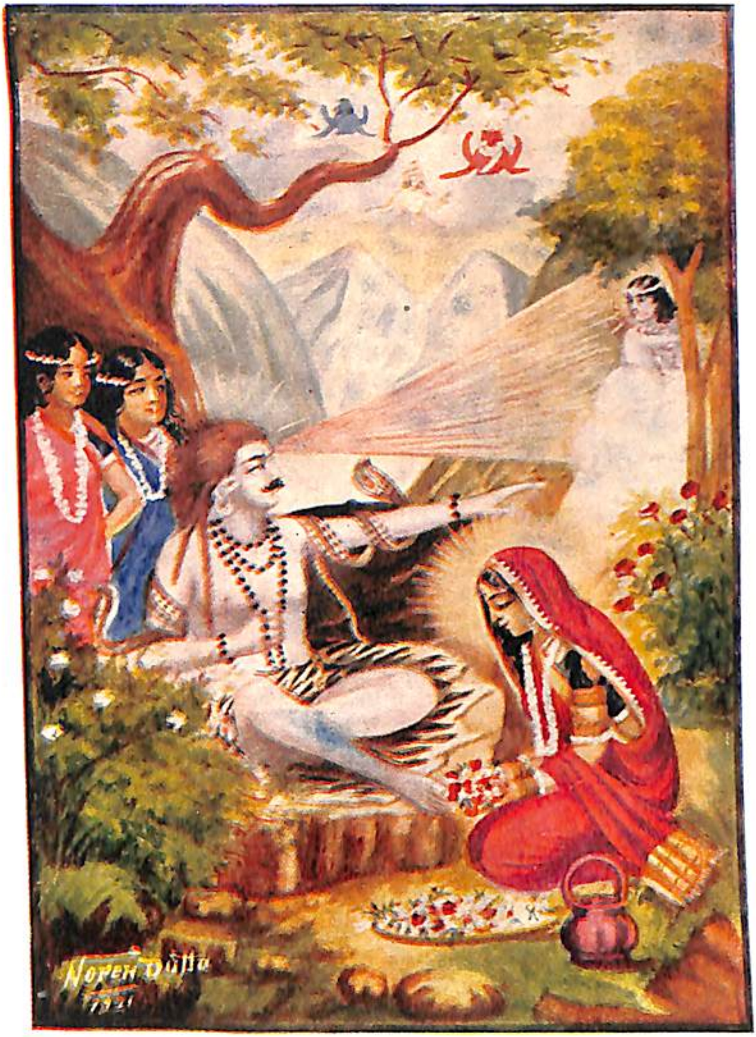
पार्वती, उनके चरणोंके निकट बैठकर श्रद्धाभक्ति पूर्व्वक ध्यान मग्न शिवकी पूजामें प्रवृत्त हुई।

पेड़की आड़में छिपकर मदन बड़ी उत्सुकता पूर्व्वक उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षा कर रहे थे। एक एक क्षण उन्हें एक एक युगकी भांति मालूम होता था। अधीरताके कारण बार बार उनका दिल दहल रहा था। बड़े कष्टसे चित्तको संयतकर उन्होंने धनुषपर सम्मोहन नामक तीक्ष्णवाण संयोजित किया। इधर पार्वती परम श्रद्धाभक्ति पूर्व्वक शिवके चरणोंमें पुष्पाञ्जलि प्रदान करनेके लिये उठकर खड़ी हुईं। ठीक इसी समय मदनने योगिराजका हृदय लक्ष्यकर अपना तीक्ष्णवाण छोड़ दिया!

प्रवल तूफानके कारण जिस तरह महासिन्धु विक्षुभित हो जाता है उसी तरह भगवान शंकरका समस्त शरीर चञ्चल हो उठा। शरीरके रोंगटे खड़े हो गये, भौंहें फड़क उठीं, गलेमें पड़ी हुई रुद्राक्षकी माला हिल गई और शरीरसे लिपटे हुए भुजङ्ग क्रुद्ध हो फण फटकार कर खड़े हो गये। साथ ही साथ शङ्करकी अटल समाधि टूट गई। आँखें खोलकर उन्होंने सामने पार्वतीको खड़ी देखा। इसके बाद तीव्र दृष्टिसे चारों ओर देखते हुए अपने क्षोभके कारणका पता लगाने लगे। इतने हीमें उनकी दृष्टि पेड़की आड़से निकलते हुए मदन पर जा पड़ी। विजय-गर्वित मदन बड़ी प्रसन्नतासे मुस्कराते हुए, पेड़की ओटसे निकल रहे थे। उन्होंने आज जो असम्भव कार्य्य कर दिया था, उसके लिये वे

मनही मन अपनेको विशेष गौरवान्वित समझ रहे थे। मदनको देखते ही शिवके हृदयमें भयंकर क्रोधका संचार हो आया और तीनों नयनोंसे भीषण अग्नि ज्वाला निकलने लगी।

कामदेवकी करामात देखनेके लिये इन्द्रादि देवता अपने अपने विमानों पर बैठ कर, पहले ही आकाशमें आ गये थे। भगवान शङ्करके नेत्रोंसे निकली हुई प्रलयङ्करी अग्नि-ज्वाला देखकर उन लोगोंके होश पैंतरा कर गये। उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया कि अब वेचारे मदनकी खैर नहीं। इसीसे सभी एक साथ ही "त्राहि त्राहि" पुकारने लगे और मदनको क्षमा करनेके लिये शिवसे प्रार्थना करने लगे। परन्तु उनकी पुकारका कोई फल न हुआ। क्रुद्ध शङ्करकी आखोंसे निकली हुई ज्वालाने देखते देखते कामदेव की सुन्दर देहको जला कर भस्म कर दिया।



शिवका मदनको भस्म करना ।

क्रुद्ध शङ्करको आँखोंसे निकली हुई ज्वालाने देखते देखते कामदेवको सुन्दर देहको जलाकर भस्म कर दिया ।

Durga Press, Calcutta. (देखिये पृष्ठ—संख्या ६६)

(११)

उपेक्षिता पार्वती

मदनको उसकी ढिठाईका समुचित दण्ड प्रदान कर देनेके बाद शङ्करजीकी दृष्टि पार्वतीपर पड़ी। विश्व-विमोहिनी किशोरीकी अनुपम सौन्दर्य्य शोभा देखकर उनका क्रोध कुछ शान्त हो गया। रूद्र भाव तिरोहित हो कर चेहरेपर धीरे धीरे प्रसन्नता आने लगी। वे प्रेमभरी दृष्टिसे बारबार पार्वतीको देखने लगे। उस समय उनके मनकी अवस्था बड़ी ही विचित्र हो गई। पार्वतीको देखकर, बहुत दिनोंकी परिचित एक अपूर्व्व सौन्दर्य्यमयी मुख-छवि उनकी आंखोंके सामने नाचने लगी। उसके साथही मानसपटपर कितनी ही अतीत घटनाओंके अस्पष्ट चित्र अङ्कित और विलीन होने लगे! पार्वतीके रूप रङ्गमें अपनी पूर्व्व पत्नी सतीका प्रतिबिम्ब देखकर भोलानाथके मनमें एक अनिर्वचनीय भावका उदय हो आया। आनन्द और शोकके ओत प्रोत आवेशमें आकर थोड़ी देरके लिये वे अपनेको भूल गये।

इतने दिनोंकी आराधनाके बाद आज प्रसन्न चित और स्नेह दृष्टिसे शिवको अपनी ओर देखते देखकर पार्वतीने भी अद्भुत आनन्द अनुभव किया। हार्दिक हर्ष और नारी सुलभ लज्जाके कारण उसके चेहरे पर लालिमा छा गयी। सारे शरीरमें आनन्द-

की बिजली दौड़ गई, मन और प्राण पुलकित हो गये। हृदयमें बारबार मधुर स्पन्दन होने लगा। शरीर रोमाञ्चित हो गया। मानों किसी मन्त्र-शक्तिके प्रभावसे उसके समस्त शरीरमें एक प्रकारकी मधुर मादकता सी छा गई। अदमनीय आनन्दके साथ लज्जा और संकोचने मिलकर उसकी स्वाभाविक सुन्दरताको और भी सुन्दर बना दिया। अपने बायें पैरके अंगूठेसे मिट्टी खोदती हुई अवनतमुखी पार्वती मूर्त्तिमती शोभाकी तरह शिवके सामने खड़ी रही। एक बार प्राणपति शङ्करको देखनेकी उत्कट अभिलाषासे उसका हृदय अधीर हो रहा था, परन्तु साहस नहीं हुआ। लज्जा, भय और सङ्कोचके कारण वह अपनी आन्तरिक अभिलाषा पूरी नहीं कर सकती थी। बार बार उद्योग करनेपर भी अवनत दृष्टि ऊपर नहीं उठ सकी। मानों वह कुछ निश्चय न कर सकी, कि यहांसे चली जाय या इसी तरह खड़ी रहे। शङ्कर और पार्वतीका यह अलौकिक प्रेम-भाव देखकर जया और विजया भी आनन्दसे विह्वल हो गईं। पार्वतीकी भांति वे दोनों भी आनन्दसे अधीर होने लगीं।

पार्वतीको भर आंख देख लेने पर सहसा महादेवके मुखका भाव बदल गया। प्रसन्नताकी जगह कठोर गम्भीरताका आविर्भाव हो गया। वे एकाएक उठ कर खड़े हो गये और किसीसे कुछ न कह कर चुपचाप एक ओर चल पड़े। शङ्करजी को जाते देखकर उनके अनुचर भी उनके पीछे चले गये।

शङ्करका यह काण्ड देखकर पार्वती और जया-विजयाको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। हठात् उनके उठकर चले जानेका कारण उनकी समझमें नहीं आया। जानेके समय शिवने पार्वतीको ओर एक बार देखा तक नहीं। इससे उसे और भी दुःख हुआ।

शङ्करके इस कठोर व्यवहारसे पार्वतीको बड़ा कष्ट हुआ। उसकी समझमें नहीं आया, कि एक बार सदय हो कर भगवान क्यों इस तरह निर्दय होकर उसकी उपेक्षा कर चले गये। उससे कौनसा ऐसा अपराध हो गया, जिससे असन्तुष्ट हो कर प्रभुने इस स्थानको सदैवके लिये परित्याग कर दिया। पार्वतीको यह भी मालूम नहीं हुआ, कि वे कहां और क्यों चले गये? इसीसे उसके कोमल हृदयको कठोर आघात लगा। बेचारी रो पड़ी। हजार चेष्टा करने पर भी वह अपनी रूलाई रोक नहीं सकी। आंखोंसे प्रवल अश्रुधारा निकल कर उसके कमलाननको भिजाने लगी। जया और विजयाने अपनी प्यारी सखीको समझा बुझा कर चुप करानेकी बड़ी चेष्टा की; परन्तु कोई फल नहीं हुआ। संयोगके पहले ही वियोगके विषम आघातने पार्वतीको व्याकुल कर दिया। उसकी आराधना, उसका प्रेम और उसकी भक्ति आज एक साथही व्यर्थ हो गई। वह मन ही मन शंकरको अपना पति स्वीकार कर चुकी थी। यहां तक कि उसके पिता माताने भी उसे इस कार्य्यके लिये आज्ञा और उत्साह प्रदान किया था। इसीसे प्राणपति शंकरकी उपेक्षा उसके लिये असहनीय हो गई।

वह जानती थी, कि लोक तथा परलोकमें पति ही स्त्रीका सर्वस्व है। स्त्रीका जीवन धन, प्राण और शरीर सभी पतिके लिये होता है। यहां तक कि पतिको छोड़ कर अन्य किसी देवताकी पूजा और उपासना तक भी स्त्रीके लिये आवश्यक नहीं। पतिको छोड़कर अन्य किसी पुरुषकी चिन्ता तक भी पतिव्रताके लिये महापाप है। अतएव जिस स्त्रीका पति उसे परित्याग कर दे, उसका मर जाना ही उचित है। क्योंकि यदि पतिव्रता पतिकी सेवा ही नहीं कर पाई तो उसका जीना किस कामका।

इसी तरहकी बातें सोच सोच कर पार्वती और भी अधीर हो उठी। उस समय यदि उसकी मृत्यु हो जाती तो बेचारी इस दुःखसे छुटकारा पा जाती। इस दुःखसे घबरा कर पागलकी भांति उसने अपने शरीरके समस्त पुष्पाभरणोंको उतार कर फेंक दिया। इससे कुछ देर पहले जिन आभरणोंको उसने बड़े चावसे पहना था, वे अब उसे भारसे मालूम होने लगे। पार्वतीकी यह शोचनीय अवस्था देख कर उसकी सखियोंको बड़ा दुःख हुआ। वे उसे उठाकर घर ले चलीं। धीरे धीरे यह खबर राजमहल तक पहुंच गई। राजा हिमवानने सुना, कि कामदेवको अपनी क्रोधाग्निसे भस्म कर शंकर एकाएक योगासन शिखरसे उठाकर न जाने कहां चले गये। यह सुनकर वे तुरन्त ही अपने मन्त्रियों तथा अनुचरोंके साथ योगासनकी ओर चले, रास्तेमें उन्हें जया और विजयाके साथ आती हुई पार्वती मिली। उस समय

उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा वह रही थी। विषम सन्तापके कारण वह साक्षात शोककी मूर्त्तिसी दीख पड़ती थी। पार्वतीकी यह अवस्था देखकर राजाको बड़ा दुःख हुआ। वे स्वयं कन्याका हाथ पकड़ कर उसे घर लाये और समझा बुझा कर शान्त करनेकी चेष्टा करने लगे। पार्वतीकी माता तथा भौजाईने भी उसे बहुत कुछ समझाया बुझाया। इस दुर्घटनाके कारण समस्त राज परिवारमें उदासी छा गई। छोटे बड़े सभी पार्वतीके दुःखसे दुःखी हो गये। पार्वतीके भविष्यकी चिन्ताने सबको व्याकुल कर दिया। यदि भोलानाथने पार्वतीका पाणि ग्रहण न किया तो बड़ा अनर्थ होगा। पार्वतीको आजन्म कुंवारी रहना पड़ेगा; क्योंकि यह उनको अपना पति मान चुकी है; उनके चरणोंमें आत्म समर्पण कर चुकी है और उनकी हो चुकी है। स्त्री-धर्मकी मर्य्यादाकी रक्षाके लिये बालिकाको आजन्म ब्रह्मचारिणी बनकर जीवन बिताना पड़ेगा। यह क्या कोई कम सन्तापकी बात है?

—

पार्वती

दूसरा पर्व्व ।

(१)

पार्वतीका संकल्प

हिन्दूशास्त्रोंमें तपकी बड़ी महिमा गायी गई है। तपके द्वारा कठिनसे कठिन कार्य्य भी सहज हो जाते हैं। तप असम्भव-को सम्भव और असाध्यको सुसाध्य बना देता है। संसारकी कोई ऐसी शक्ति नहीं, जिसने तपके आगे मस्तक नहीं नवा दिया हो। तप द्वारा ही विधाता सृजन करते हैं, तपके बलसे ही विष्णु इस अनन्त विश्वका पालन करते हैं और तपके द्वारा ही महेश संसारका संहार करते हैं। तपोबल द्वाराही नारदजी बीणा बजाते हुए ब्रह्माण्ड भरमें विचरण किया करते हैं। तपोबल द्वारा ही आज तारकने तीनों लोकके प्राणियोंको हैरान कर रखा है और बड़े बड़े वीर उसका नाम सुन कर थर्रा जाते हैं। भग-वान शम्भुने उस दिन जिस अद्भुत तेजद्वारा क्षण भरमें कामदेवको जलाकर खाक कर डाला था, वह तपकाही प्रभाव नहीं तो क्या था ? तपमें बड़ी शक्ति है, तपकी महिमा अपार है और तपही अभीष्ट सिद्धिका सर्वश्रेष्ठ साधन है। पार्वतीने तपकी कितनी ही कहानियां सुनी थीं। तपको असीम शक्ति पर उसका अटल विश्वास था। इसी लिये उसके मनमें कठिन तप द्वारा शंकरको प्राप्त करनेकी अभिलाषा उत्पन्न हुई। उसने सोचा, यदि तप

द्वारा बहुतसे असाध्य कार्य्य सुसाध्य हो जाते हैं, तो क्या मैं अपने बिछड़े हुए शंकरको नहीं प्राप्त कर सकूंगी? मेरा रूप, मेरी सेवा और प्रेम यदि उन्हें रिझा न सका तो क्या मेरी तपस्या भी सफल नहीं होगी? चाहे कुछ भी हो, मैं एक बार उन्हें प्रसन्न करनेके लिये घोर तप करूँगी। सर्वत्यागी उदासीन योगिराजको प्रसन्न करनेके लिये मैं भी सर्व-त्यागिनी, उदासीना योगिनी बनूंगी।

मनमें इस तरहके विचारोंके उत्पन्न होते ही पार्वतीकी निराशा दूर हो गई। मुखपर प्रसन्नता और उत्साह दिखाई देने लगा। उसने मनही मन कठिन तप करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया।

कन्याके संकल्पका संवाद पाकर माता मेनकाको बड़ा दुःख हुआ। इस किशोरावस्थामें तमाम भोग विलासको छोड़ कर पार्वती योगिनीकी भांति जीवन बितावेगी, यह उसकी स्नेहमयी माताके लिये अत्यन्त असह्य बात हुई। इसीलिये पार्वतीके इस कठोर संकल्पकी बात सुन कर उसका कलेजा कांप गया। जिस पार्वतीको वह अपने प्राणसे भी अधिक प्रिय समझती थी, जिसकी सुख-स्वच्छन्दताके लिये अपना सर्वस्व विसर्ज्जन कर देनेको प्रस्तुत थी, और जिसको एक क्षणके लिये अपनी आंखोंकी ओट होने देना भी उसे अभीष्ट नहीं था, वही प्राण पुत्तलिका, समस्त राज-भोग परित्याग कर भिखारिनीकी भांति कठोर संयम

करेगी! यह उसकी माता कैसे सह सकती थी? संसारमें ऐसी कौन सी माता होगी जो अपनी प्यारी सन्तानकी ऐसी अवस्था देखकर निश्चिन्त रह सकेगी। पार्वतीकी छोटी उमर, शरीरकी सुकुमारता और तपस्याके कठोर नियमोंका विचार कर मेनका और भी चिन्तित हुई। नाना प्रकारके व्यञ्जन खानेवाली, अत्यन्त कोमल सेज पर शयन करनेवाली और मणिमुक्ता जड़ित मूल्यवान वस्त्राभूषण धारण करनेवाली राजदुलारी, मोटा वस्त्र पहन, शरीरमें भस्म लपेटकर कड़ी भूमिपर कुशकी सांथरी बिछा कर सोयेगी तो कितने दिन जीती रह सकेगी? कोमल पैरोंमें कुशके नोंक चुभ जानेसे जो बालिका रो देती है, जरासी गर्मी सर्दी जिसे असहनीय हो जाती है, ठीक समय पर भोजन न पानेसे जिसके सिरमें पीड़ा हो जाती है और कितनी ही दासियां सदा जिसकी सेवामें लगी रहती हैं, वह कुसुम कोमलाङ्गी बिना खाये पीये हिमालयकी पथरीली और बरफीली भूमिपर क्योंकर विचरण कर सकेगी?

इसी तरहको बहुतसी बातों पर विचार कर मेनकाका मातृ-हृदय बारबार व्याकुल होने लगा। वास्तवमें विधाताने माताओंके हृदयोंको बड़े ही प्रेमपूर्ण कोमल उपादानोंसे गढ़ा है। विश्वकी किसी वस्तुसे मातृ-हृदयकी उपमा नहीं दी जा सकती। अपना सब कुछ विसर्जन कर भी माता सन्तानको सुखी रखनेमें यत्नवती रहती है। अपना तमाम सुख दुःख भूल कर वह सन्तान

की भलाईको चिन्ता किया करती है। हजारों विपत्तियोंसे वह अपनी सन्तानको बचाती रहती है। मातृ-हृदयकी भांति उदार महान, पवित्र और निःस्वार्थ हृदय दूसरा नहीं हो सकता। सन्तान-की सुख कामना ही माता अपना सर्वप्रधान कर्तव्य समझती है।

इसीसे पार्वतीके संकल्पकी कथा सुनकर मेनकाका मातृ-हृदय अत्यन्त व्याकुल होगया। उसने कन्याको अपने निकट बुलाकर बड़े स्नेहसे पूछा—"बेटी, मैंने सुना है, कि तुम हम लोगोंको छोड़कर तपस्या करनेके लिये, बनमें जाना चाहती हो, क्या यह बात सच्ची है?"

पार्वतीने बड़े संकोचसे कहा,—"हाँ।"

मेनका—नहीं बेटी, ऐसा न कर मैं अपने जीते जी तुझे अपनी आंखोंकी ओट नहीं होने दूंगी।

पार्वती—नहीं मां, मुझे मत रोको। मैंने तप करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया है। वृथा स्नेहमें पड़ कर मेरा संकल्प तोड़नेकी चेष्टा न करो!

मेनका—तुझे किस बातकी कमी है? कौन ऐसा सुख है जो यहां नहीं है और जिसकी प्राप्तिके लिये तू सर्वस्व छोड़ कर बैरागिनी बनेगी? बेटी, हठ छोड़ दे। तेरे चले जानेसे यह घर सूना हो जायगा। तेरा न रहना हम लोगोंके लिये असहनीय हो जायगा। तेरे पिताको भी तेरे चले जानेसे बड़ा दुःख होगा। तू बड़ी सुकुमारी है। तुझसे तपका कष्ट नहीं सहा जायगा।



मेनकाका पार्वतीको समझाना।

बेटी, मैंने सुना है, कि तुम हम लोगोंको छोड़कर तपस्या करनेके लिये, बनमें जाना चाहती हो, क्या यह बात सच्ची है?

Durga Press,—Calcutta.

(देखिये पृष्ठ संख्या—७८)

तप बड़ा कठिन काम है। उसके लिये बड़े त्याग और संयमकी आवश्यकता होती है। तू इस झमेलेमें न पड़। जिद्द छोड़ दे जो बात बीत गई, उसे भूल जा। वृथा अपने जीवनको नष्ट न कर।"

इस तरहकी बहुतसी बातें कह कर माताने कन्याको समझानेकी चेष्टा की परन्तु कुछ फल न हुआ। पार्वतीने अत्यन्त मधुर स्वरसे माताकी तमाम युक्तियोंका प्रतिवाद किया और यह बतानेकी बड़ी चेष्टाकी कि मेरे लिये अब यही एक मात्र उपाय है।

परन्तु मेनकाका मातृ-हृदय किसी तरह सन्तुष्ट नहीं हुआ। सन्तानके प्रति माताकी अद्भुत ममताने एक न सुना। कन्याको गोदमें ले कर जननीने रोते रोते कहा—"बेटी पार्वती, तू असामान्या सुन्दरी है। नर, नाग, देव, किन्नर और गन्धर्व लोकमें तेरी जैसी रूपवती स्त्री दूसरी नहीं है। रूपके साथ ही विधाताने तुझे गुण भी यथेष्ट दिया है। तू पढ़ी लिखी भी खूब है। समाज शास्त्र, धर्म शास्त्र, नीति शास्त्र, और संगीत शास्त्र आदि सभी विद्यायें तू जानती है। तेरी जैसी सर्व-गुण-सम्पन्ना स्त्री पानेके लिये कौन लालायित नहीं होगा? तेरे जरासा इशारा करतेही सहस्र सहस्र देवता तेरा पाणि-ग्रहण करनेके लिये दौड़े आवेंगे। तू एक संसार त्यागी पागलके लिये तपस्या कर अपनी जिन्दगी क्यों बरबाद करेगी? तुझे पानेके लिये तो बड़े बड़े

रूपवान, गुणवान और शक्तिशाली देवता स्वयं साधना करेंगे। तू क्यों वृथा तपस्या करने जायगी? तैंतीस कोटि देवताओंमें जो तुझे पसन्द हो, उसीको वरण कर ले और तप जप पूजा पाठका विचार छोड़ दे। माता पिताको कष्ट देकर तपस्या करनेकी वासना परित्याग कर दे।"

सती-धर्मके विपरीत मातृ-उपदेश सुनकर पार्वतीको विषम मनोकष्ट होने लगा। उसके शरीरमें रोमांच हो गया, हृदय कांप गया और आंखें आंसुओंसे भर गईं। उसने स्नेहमयी जननीके गलेमें बाहें डाल कर अत्यन्त कातर स्वरसे कहा—"मां, तुम क्या कह रही हो? सब कुछ समझ कर भी अबूझकी तरह क्यों मुझे विपथ-गामिनी होनेका उपदेश दे रही हो? मालूम होता है कि स्नेहके वशीभूत हो कर तुम सनातन नारी-धर्मको भूल रही हो और इसीसे इस तरहका अनुचित उपदेश दे रही हो। उदासीन महेश्वरके हाथोंमें तो तुम्हीं लोगोंने मुझे सौंप दिया है। स्वयं तुमने और पिताजीने मुझे योगासन पर जा कर उनकी आराधना करनेका उपदेश दिया था। क्या उस बातको तुम भूल गई हो? मैं बाल्यावस्थासे उन्हें आत्मसमर्पण कर चुकी हूं। जिस हृदयको एक वार शिवको दान कर चुकी हूं, उसे फिर किसी दूसरेको कैसे दूंगी? अब वे चाहें, अच्छे हों, या बुरे हों, त्यागी या संसारी हों, पागल हों या पण्डित हों, मेरे लिये वेही सर्वस्व हैं। उन्हें छोड़ कर अब मैं किसी दूसरेकी कदापि नहीं हो सकती।

मां, पवित्र पतिव्रता धर्मका उपदेश देते हुए, तुमने मुझे बार बार समझाया है, कि पति ही स्त्रीका सर्वस्व है। पति ही स्त्रीका इहकाल और परकाल है। पति ही उसका जीवन-सहचर है। पतिमें अनन्त अवगुण मौजूद हों तो भी वह पत्नीके लिये परम पूज्य और सर्वश्रेष्ठ है। आज क्यों ऐसा पापपूर्ण उपदेश देती हो? मेरी देहकी कोमलता और दुर्वलता देखकर तुम घबरा रही हो। मां, इसमें तुम भूल कर रही हो; क्योंकि मनकी दृढ़ता ही वास्तविक दृढ़ता है। किसी भी कठिन कार्य्यकी सफलता मनोबल द्वारा ही हुआ करती है। मां, तुम सती हो; सतीत्वकी महिमा खूब जानती हो। तुम्हारे मूल्यवान उपदेशोंको सुन कर और तुम्हारे विशुद्ध आचरणोंको देखकर मेरा मन अत्यन्त दृढ़ हो गया हैं। तुम्हारे आशीर्वादसे मैं अवश्य सफलता प्राप्त करूंगी। वृथा शोक और मिथ्या मोह छोड़ कर प्रसन्नता पूर्व्वक मुझे अपना कर्तव्य पालन करनेका आदेश दो। तुम्हारी जैसी सती माताका आशीर्वाद मुझे अवश्य सफल मनोरथ करेगा, मेरा दृढ़ विश्वास है।"

मेनका चुप हो गई। पार्वतीकी उक्तियोंके विपरीत कोई युक्ति या तर्क उसे सूझ नहीं पड़ा। अनन्योपाय होकर उसने कन्याको अपना कर्त्तव्य पालन करनेकी अनुमति दे दी। भगवान शंकरके प्रति कन्याका अटल अनुराग देखकर राजा हिमवानने भी कोई वाधा न दी।

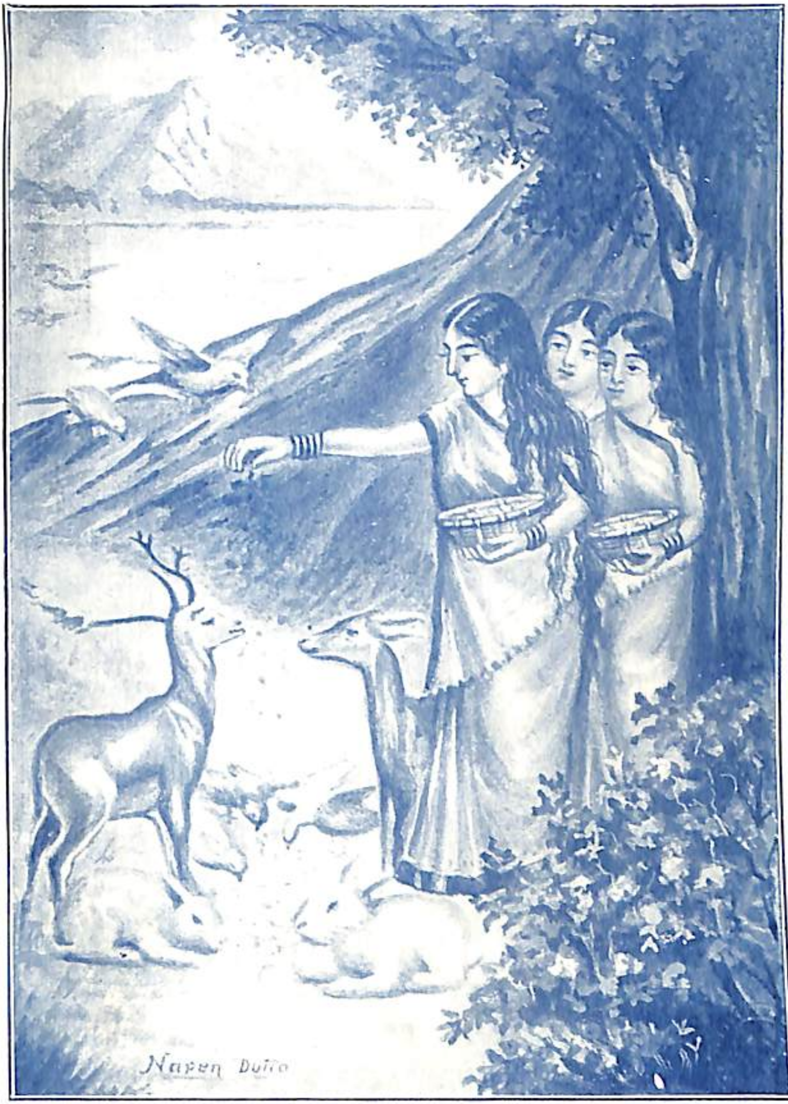
———

(२)

तपारम्भ.

राजनन्दिनी पार्वतीने समस्त मूल्यवान वस्त्राभूषण और श्रृंगार परित्याग कर योगिनीका वेष धारण किया। गलेमें हीरेके हारोंकी जगह रुद्राक्षकी माला शोभा पाने लगी। कारचोबीके कामकी बेशकीमत साड़ी उतार कर उसने मोटा गैरिक वसन पहना। सुन्दर लम्बे और घुंघराले बालोंको जटा रूपमें परिणत कर दिया। बगलमें मृग-चर्म और हाथोंमें कमण्डल ले कर बालब्रह्मचारिणी वेषसे मातासे विदा लेने गई।

यद्यपि मेनकाने पार्वतीको तप करने जानेकी अनुमति दे दी थी, तथापि उसका यह वेष देखकर उसे कष्ट हुआ। वह कन्याको कलेजेसे लगाकर फूट फूट कर रोने लगी। माताका रोना देख, पार्वती भी अपनी रूलाई रोक न सकी। माता और पुत्रीका यह कारुणिक मिलन देखकर समस्त राज-परिवारमें कुहराम मच गया। पार्वतीने बड़े कष्टसे सबको समझा कर शान्त किया। इसके बाद पूज्य पिताके चरणोंमें प्रणाम कर जानेको तैयार हुई। राजा हिमवानने बहुतेरा चाहा, कि पार्वती अपने साथ कुछ आवश्यक चीजें और कुछ दास दासियां भी ले ले; परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया। केवल जया और विजयाने किसी तरह अपनी प्यारी सखीका साथ छोड़ना



छोटे छोटे मृगछौने पार्वती आदिके साथ आत्मीयकी भाँति हिल मिल गये ।

स्वीकार न किया। पार्वतीने उन्हें बहुत समझाया भी, परन्तु वे उससे अलग रहनेको राजी न हुईं। उन दोनोंने साफ कह दिया, कि यदि राजकुमारी हमें छोड़ेंगी, तो हम दोनों ही अपना शरीर छोड़ देंगी। सब प्रकार समझा बुझा कर थक जाने पर पार्वतीने उन दोनोंको अपने साथ ले लिया।

हिमालयके एक निर्जन और ऊंचे शिखरपर जाकर पार्वतीने अपना तपाश्रम स्थापित किया। जिस दिनसे पार्वती उस शिखर पर जा कर रहने लगी, उसी दिनसे लोगोंने उसका नाम "गौरी शिखर" रख दिया। गौरी शिखर पहुंच कर नवीना योगिनीने अपनी सखियोंकी सहायतासे एक पर्ण कुटीर बनाया और उसके निकट ही एक यज्ञकुण्ड भी स्थापित किया। जया और विजयाने आश्रमके निकट तरह तरहके फूलोंके पौधे लगा दिये।

इस तरह कुछ दिनोंमें वह निर्ज्जन शिखर अत्यन्त सुहावना मालूम होने लगा। नाना प्रकारके मृग, पशु और पक्षी उसके आस पास आकर रहने लगे। छोटे छोटे मृगछौने पार्वती आदिके साथ आत्मीयकी भाँति हिलमिल गये। नवीना तपस्विनीके आनेका समाचार पाकर, हिमालयके निर्ज्जन प्रदेशोंमें विचरण करने वास्ते कितने ही योगी और महापुरुष भी उस स्थानपर आने-जाने लगे। पार्वतीने अपनी सखियोंकी सहायतासे अभ्यागतोंके आहार तथा विश्राम आदिका यथोचित प्रबन्ध कर दिया था।

पार्वतीका शास्त्रज्ञान और धर्म्मालोचना देखकर बड़े बड़े योगीराज भी दङ्ग रह जाते थे। इस छोटी ही उमरमें बालिकाने इतनी विद्या-बुद्धि अर्जित करली है; यह देखकर उन लोगोंको बड़ा आश्चर्य्य होता था। इस तरह नवीना योगिनीकी प्रशंसनीय नियम-निष्ठा, व्रतपूजा और कठोर आत्मसंयम आदिकी कथा थोड़े ही दिनोंमें दूर दूर तक फैल गई।

संन्यास व्रत धारण कर पार्वती अपने पहलेके समस्त अभ्यासोंको भूल गई थी। उसकी रहन-सहन देखकर कोई नहीं कह सकता था, कि यह शैल-राज हिमवान जैसे महाराजकी कन्या है। बलकल बसन पहन, कठोर भूमिपर सोकर, तथा फल मूलादि आहारकर दिन रात कठोर व्रतपूजामें लगी रहकर पार्वतीने थोड़े ही दिनोंमें इस बातको अच्छी तरह प्रतिपादित कर दिया, कि मनकी दृढ़ता ही वास्तविक दृढ़ता है। शरीर कोमल हो या कठोर, बलवान हो या निर्बल, यदि मनुष्यका मन दृढ़ है, तो वह कठोरसे कठोर संयम और नियमोंका प्रतिपालन कर सकता है।

प्रति दिन प्रातःकाल उठकर, स्नानादिसे निवृत्त होकर पार्वती पार्थिव पूजनके फूल तथा विल्वपत्र आदि संग्रह करती। उसके बाद भक्ति भावसे बैठकर शिव-पूजन करती। पार्थिव पूजन समाप्त कर जप आरम्भ कर देती। इसके बाद होमकी बारी आती। विधिपूर्व्वक हवन कार्य्य समाप्त करनेपर, योगासन लगाकर इष्ट देवताका ध्यान करने बैठ जाती। उस समय उसका बाहरी ज्ञान

बिल्कुल विलुप्त हो जाता। तन मनकी सुधि भूलकर, एकाग्र चित्तसे वह शिवके चरणोंका ध्यान करती। उस समय उसे देखकर यह पहचानना कठिन हो जाता था, कि वह सजीव है।

सारा दिन ध्यान धारणामें बिताकर शामको वह अपने वीणा-विनिन्दत मधुर स्वरसे शिव-स्तोत्र गान करती। उस समय उसकी मधुर कण्ठध्वनिसे समस्त दिशायें मुखरित हो जातीं। आश्रमके निकटके ऋषिमुनि तथा पशु पक्षी यह सुमधुर स्तोत्र—गान सुनकर मुग्ध हो जाते।

स्तोत्र समाप्तकर पार्वती आश्रमके पशुपक्षियोंके भोजन आदिकी सुधि लेती। इसके बाद अभ्यागतोंकी सेवा सुश्रूषामें लग जाती। सबको परितुष्ट करनेके बाद वह स्वयं थोड़ा फलमूलादि आहारकर एक पत्थरकी चट्टानपर अपनी बाहोंकी तकिया लगाकर सो जाती। जया और विजया भी उसके निकट ही सोतीं। पार्वती की देखा देखी उनके भीतर भी पवित्र सात्विक सत्यका संचार हो गया था। वे भी धीरे धीरे योगिनी हो चली थीं।

इसी तरह नवीना तपस्विनीका प्रथम काल अतिवाहित होने लगा।

(३)

कठोर तपश्चर्य्या

दिनपर दिन, महीनेपर महीने बीत गये, धीरे धीरे वर्ष भी समाप्त हो गया, तथापि पार्वतीकी कठोर साधना समाप्त नहीं हुई; इष्ट-लाभ नहीं हुआ। उसका अदम्य उत्साह, और अटल विश्वास एक क्षणके लिये भी कम नहीं हुआ। वह उत्तरोत्तर मनोयोगपूर्व्वक कठोर तप करने लगी। नैराश्य और दुर्बलताको भूलकर वह दिनरात तपश्चर्य्यामें व्यतीत करने लगी। एक छोटी उमरकी स्त्रीका ऐसा सुदृढ़ विश्वास, अद्भुत मनोबल और अपूर्व्व उत्साह देखकर बड़े बड़े प्रवीण योगेश्वर लोग हैरान हो गये।

गरमीके दिनोंमें पार्वतीने पञ्चाग्नि तापना आरम्भ कर दिया। एक शिलाखण्डपर चारों ओर अग्नि-कुण्ड जलाकर उसने अचल समाधि लगा दी। चारों ओर आगकी गर्म्मी और ऊपरसे सूर्य्यका प्रखर उत्ताप सहते सहते उसकी कमनीय कान्ति मलिन हो गई। सूर्य्यकी गर्म्मीसे मुरझाये हुए कमलकी भांति उसके मुखकी शोभा विचित्र सी दिखाई देने लगी। प्रचण्ड पञ्चाग्निसे सन्तप्त होनेपर भी वह प्रसन्नता पूर्व्वक इष्ट देवताके ध्यानमें निमग्न रहने लगी।

गरमीका मौसिम बीतनेपर वर्षाकाल आरम्भ हुआ, सावन

भादोंका महीना आया। एक तो बरसातका मौसिम, दूसरे पहाड़ी स्थान। स्वभावतः ही पहाड़ोंपर वर्षा अधिक होती है। घनघोर घटा छाकर मूसलाधार वर्षा होने लगी, बारबार बिजली चमक कर दिल दहलाने लगी। पहाड़ोंपर बादल निकट ही होते हैं, इससे उनका घोर गर्ज्जन भी वहां बड़ा ही भयावह प्रतीत होता है। ऐसे विकट समयमें रातको कुटीसे बाहर, मैदानमें समाधि लगाकर पार्वती तप करने लगी। बादलोंका घोर गर्ज्जन, अपार वृष्टि और तुन्द हवाके झोंके मानों बराबर चेष्टा कर भी उसे विचलित नहीं कर सके। वर्षा कालके तमाम असहनीय उत्पातोंको सानन्द सहती हुई बाल योगिनी पत्थरकी मूर्त्तिकी भांति निश्चल भावसे बैठकर भगवान शङ्करके चरणोंका ध्यान करने लगी।

बरसात बीतनेपर शरद् ऋतुका आविर्भाव हुआ। इसके बाद शिशिर ऋतु आई। प्रबल शीतके कारण जीवमात्र घबरा उठे। बरफकी बाहुल्यतासे हिमालय वास्तविक हिमालय बन गया। दिन रातकी तुषार-वृष्टिने वनस्थलीके छोटे छोटे कोमल पौधोंको नष्ट कर दिया। जलाशय कमलहीन हो गये और पर्वतोंपर बड़ी बड़ी बरफकी चट्टानें दिखाई देने लगीं। शीतकी प्रबलता प्राणिमात्रके लिये असहनीय हो गई। यहां तक कि यात्रा करनेके समय यात्री भी आगकी अङ्गीठी लेकर चलने लगे। इस तरहके प्रबल शीत-कालमें पार्वती तमाम रात एक जलाशयके भीतर, गर्दन तक जलमें डूबाकर मनोयोग पूर्व्वक शिवनामकी माला जपने लगी।

जलके ऊपर उभरा हुआ पार्वतीके गलेका ऊपरी भाग देखकर मालूम होता था, मानों जलाशयमें एक सुन्दर कमल खिला हुआ है।

गरमी, बर्सात और शीतकालके असहनीय कष्टोंको सहन करनेके साथ साथ पार्वतीने फलमूलादि खाना भी छोड़ दिया। जीवन धारण करनेके लिये केवल पेड़ोंकी सूखी पत्तियां चबा लिया करती थी। कुछ दिनके बाद उसने इसे भी छोड़ दिया। दिनरात निराहार रहकर वह विकट योगसाधन करने लगी।

यथा नियम कठोर साधना करते करते पार्वतीने मानों तपस्याको अपने अधीन कर लिया। नाना प्रकारके कठोर कष्टोंको वह हंसते हंसते सह लेने लगी। उसकी घोर तपश्चर्य्याकी ख्याति चारों ओर फैल गई। दूर दूरसे कितने ही ऋषिमुनि उसकी तपस्या देखनेके लिये आने लगे। मृदुप्रकृति कोमलाङ्गी राजकिशोरीको अद्भुत साधनाने देखनेवालोंको आश्चर्य्य चकित कर दिया। उसकी कुसुम-कोमल देह और ऐसा कठोर व्रत देख देवताओंने भी दांतों अंगुली काटी। किसीको स्वप्नमेंभी विश्वास नहीं था, कि एक राज-भोग-विलासिनी बालिका अपने तपाचरणसे बड़े बड़े ऋषि मुनियोंको भी परास्त कर देगी।

पार्वतीको इस प्रकार घोर तप करते हुए बहुत दिन बीत गये, परन्तु अभीष्ट सिद्धिका कोई लक्षण दिखाई न दिया। सखीकी अभीष्ट सिद्धिमें इतना बिलम्ब देखकर जया विजयाको बड़ी चिन्ता

पार्वती



दिन रात निराहार रहकर पार्वती विकट योग साधन करने लगी।

Durga Press, Calcutta.

(देखिये पृष्ठ—संख्या ८८)

हुई। परन्तु पार्वतीने इसकी कुछ भी परवा न की। वह उत्तरोत्तर नये उत्साहके साथ घोरसे घोरतर तप करने लगी। उसने अपनी सखियोंसे स्पष्ट कह दिया, कि जबतक मेरी मनोकामना पूरी न होगी तबतक मैं तपस्या नहीं छोड़ूंगी। जबतक देहमें प्राण रहेगा, तबतक बराबर तप करती रहूंगी। मुझे दृढ़ विश्वास है, कि एक न एक दिन मेरा मनोरथ अवश्य ही सिद्ध होगा।

वास्तवमें जब मनुष्य एकाग्र चित्त होकर किसी वस्तुको प्राप्त करनेके लिये साधना करने लगता है, तब अवश्य ही कृतकार्य्य होता है। किसीकी एकान्तिक साधना कभी विफल नहीं होती।

ज्यों ज्यों समय बीतने लगा और पार्वतीकी अभीष्ट सिद्धिमें देर होने लगी; त्यों त्यों उसके चित्तकी दृढ़ता, मनकी एकाग्रता और शरीरकी कष्ट सहिष्णुता मानो उत्तरोत्तर अधिकसे अधिकतर बढ़ने लगी। मालूम होने लगा, मानों एक मात्र तपस्या ही उसके जीवनका उद्देश्य है; मानो विधाताने इसी कार्य्यके लिये उसे बनाया है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि कन्याको तपके लिये वनमें भेजकर राजा हिमवान और रानी मेनका निश्चिन्त नहीं थे। वे बराबर अपने अनुचरोंको भेजकर उसकी खबर लिया करते थे। पार्वतीकी उत्कट तपस्याका सम्बाद पाकर माता मेनका अत्यन्त दुःखी हुईं। उसे किसी तरह विश्वास नहीं हुआ, कि कोमलाङ्गी पार्वती इतना कष्ट सह सकेगी। उसने पतिके निकट जाकर पार्व-

तीको एक बार देखनेकी इच्छा प्रकट की। पत्नीकी इच्छानुसार एक दिन राजा उसे साथ लेकर स्वयं 'गौरीशृङ्ग' पर गये। प्राणाधिका पुत्रीको अवस्था देखकर माताका हृदय विदीर्ण होने लगा। वह व्याकुल होकर पृथिवीपर गिर पड़ी। पार्वतीने माताको उठाया और बहुत कुछ समझा बुझाकर शान्त किया। माताकी भाँति ही पिता भी कन्याकी अवस्था देखकर दुःखी हुए; परन्तु पुरुषोचित सहिष्णुताके कारण उन्होंने अपना मनोदुःख प्रकट नहीं किया।



(४)

अद्भुत अतिथि

सन्ध्याका समय समीप है। सूर्य भगवान बड़ी तेजीसे अस्ताचल शिखरकी ओर बढ़ रहे हैं। उनकी किरणोंने स्वाभाविक प्रखरता छोड़ कर सन्ध्या कालीन स्निग्धता धारण की है। पक्षीगण अपने अपने घोंसलेकी ओर लौट रहे हैं। सन्ध्याके समय खिलनेवाले फूलोंकी मधुर सौरभसे पार्वतीका योगाश्रम महक उठा है। सूर्य्यास्तका समय सन्निकट समझ कर कमलिनी संकुचित हो रही है।

पार्वती अपनी सखियोंके साथ आश्रमके सामने बैठी हुई, आश्रमवासी पक्षियों और मृगोंको खिला रही है। पशुगण आहार करते करते स्नेहमयी योगिनीकी ओर आंखें उठाकर इस तरह देखते हैं, मानों किसी अव्यक्त भाषामें अपने हृदयकी कृतज्ञता और आनन्द प्रगट कर रहे हैं। पार्वती किसीसे बातें करती है, किसीके शिरपर हाथ फेरती है और किसीको प्यारसे अपनी गोदमें बिठा कर उसका मुँह चूम लेती है! पशुगण स्नेहपूर्ण व्यवहारसे मानों प्रेम विह्वल हो रहे हैं। जया और विजया पार्वतीके कार्य्यमें सहायता देती हैं और पशुओंका स्नेहभाव देखकर विमोहित हो रही हैं।

ऐसे समय एक दिव्य-मूर्त्ति ब्रह्मचारीने आश्रममें प्रवेश किया। इस समय पार्वतीकी तपस्या देखने तथा उसके साथ शास्त्रालाप करनेके लिये प्रायः कितने ही ऋषिमुनि आया करते थे। कितने ही यात्री भी रात्रियापन करनेके लिये आश्रममें पधारा करते थे। बात यह थी, कि यहां अतिथि-सेवाका विशेष प्रबन्ध था। पार्वती स्वयं अतिथियोंकी सेवा किया करती थी। अतिथियोंके ठहरने तथा जल आदिकी भी यहां अच्छी व्यवस्था थी। आश्रमको शोभा बड़ी विचित्र थी। यहां आते ही यात्रियोंका पथश्रम मानों अनायास ही दूर हो जाता था। इसीसे प्रति दिन संध्याके समय यहां अतिथि अभ्यागतोंका खूब समागम हुआ करता था।

अतः आश्रममें उपर्युक्त ब्रह्मचारीका आना कोई आश्चर्य्यकी बात न होने पर भी उसका तेजपुञ्ज शरीर और मुखकी उज्ज्वल ज्योतिने एक साथ ही पार्वती तथा जया विजयाका चित अपनी ओर आकर्षित कर लिया। ब्रह्मचारीका उन्नत मस्तक जटा जूटसे आच्छादित था। कमरमें मृगछाला लिपटी थी और हाथमें एक सुदीर्घ पलाश-दण्ड दिखाई दे रहा था। बदन मण्डल एक विचित्र प्रतिभाराशिसे आच्छादित था। उसे देखनेसे मालूम होता था, मानों स्वयं ब्रह्मचर्य्य ही देह धारण कर आश्रममें आ पहुंचा है। ब्रह्मचारीकी अवस्था ढल चुकी थी, उसके चेहरे पर ब्रह्म-तेज और ज्ञानकी प्रतिभा चमक रही थी; परन्तु गम्भीरताकी कमी थी, क्योंकि उसकी चितवन बालकोंकी भांति चञ्चल थी,

होठोंमें मधुर हंसी छिपी हुई थी और बातें मधुरतासे परिपूर्ण थीं। उसके आगमनके साथ ही मानो योगाश्रममें एक प्रकारकी अपूर्व्व प्रसन्नता छा गई। किसी छिपी हुई आकर्षण शक्ति द्वारा सबका चित्त उसकी ओर आकृष्ट हो गया।

ब्रह्मचारीको देखते ही न जाने क्यों पार्वतीके मनमें एक अद्भुत आनन्द-प्रवाह बह गया। उसने कुछ अग्रसर हो, बड़े आदरसे ब्रह्मचारीका स्वागतकर उपयुक्त आसन प्रदान किया और समयोचित परिचर्य्या कर आहार आदिकी व्यवस्था करने लगी।

पार्वती प्रतिदिन अतिथि सत्कार करती थी। कितने ही सिद्ध महापुरुष तथा योगी यती उसके आश्रममें आकर विश्राम करते थे और वह प्रसन्नता पूर्व्वक उनकी सेवा किया करती थी। परन्तु आज इस ब्रह्मचारीको देखकर न जाने क्यों उसका हृदय विशेष आनन्दित हो रहा था। सर्वत्यागिनी उदासीना योगिनीके हृदयमें न जाने क्यों बार बार आनन्दकी तरंगे उठतीं और विलीन हो जाती थीं। कभी कभी मंगलसूचक बायां अंग फड़क उठता था और मुख पर गम्भीरताकी जगह प्रसन्नता दिखाई देती थी। मानों कल्प कल्पान्तरको वाञ्छनीय वस्तु देखकर उसका अन्तरात्मा आनन्दसे अधीर हो रहा था। पार्वतीने अपने मनके इस अद्भुत परिवर्त्तन पर बहुत विचार किया, परन्तु कोई कारण उसकी समझमें नहीं आया।

पार्वतीके अतिथि सत्कार और सेवासे प्रसन्न हो कुछ काल

विश्राम कर लेनेके बाद ब्रह्मचारीने सरलता पूर्व्वक मधुर स्वरमें उसका कुशल आदि पूछा। पार्वतीने भी उपयुक्त उत्तर देकर अतिथि को सन्तुष्ट किया। इसके बाद पार्वतीकी ओर कुछ देर तक स्थिर दृष्टिसे देखकर ब्रह्मचारीने कहा—"शुभे, तुम्हारा आश्रम तो बड़ा ही सुहावना है। ये सुन्दर सुन्दर वृक्ष क्या तुमने ही लगाये हैं ?*

पार्वतीने कहा—जीहां, मैंने ही अपनी सखियोंकी सहायतासे इन्हें लगाया है।

ब्रह्मचारीने थोड़ी देर ठहरकर फिर पूछा,—"यहांका जलवायु तो अच्छा मालूम होता है। तुम लोगोंको स्नान आदिके लिये प्रचुर जल मिलता है या नहीं ? तुम्हारे आश्रमके पशु पक्षी तुमसे बहुत हिले मिले जान पड़ते हैं, इन्हें भोजन आदि क्या तुम स्वयं दिया करती हो ?"

पार्वतीने कहा—"हां।"

इसके बाद कुछ देर मौन रहकर ब्रह्मचारीने फिर कहा—"तप व्रत आदि अपने शरीरकी शक्ति और अवस्थाके अनुसार ही करना चाहिये। कठोर धर्म साधन करनेके लिये शरीरकी रक्षा बहुत जरूरी है। तुम इस बातकी अवहेलना तो नहीं करती हो ?"

पार्वतीने बड़ी बिनम्रतासे उत्तर दिया। उसकी सरल और मधुर बातें सुन कर ब्रह्मचारीने प्रसन्नता पूर्व्वक कहा—"तुम्हारी

* देखो शिवपुराण।

शान्त और सुन्दर मूर्त्ति देखनेसे तुम्हारी सब बातें सच्ची मालूम होती हैं। तुम्हारा सुन्दर आचरण देखकर और बात चीत सुनकर मालूम होता है, कि तुम बड़ी विवेकमयी हो। तुम्हारी जैसी सुशीला और पुण्यवती पुत्री पाकर तुम्हारे पिता माता भी धन्य हो गये होंगे।"

ब्रह्मचारीके मुँहसे अपनी प्रशंसा सुनकर पार्वती लज्जावती लताकी भांति संकुचित हो गई। उसके कपोलोंपर सुन्दर लालिमा छा गई। वह अत्यन्त संकुचित भावसे पृथिवीकी ओर देखने लगी, मानों लज्जित होकर छिप जानेका स्थान ढूँढ रही है। पार्वतीका यह संकुचित भाव देखकर ब्रह्मचारीने मुस्कराते हुए कहा—"सुन्दरी, तुमने अपने सुन्दर आचरणों और स्नेहपूर्ण व्यवहारोंसे मुझे अपना लिया है। इसलिये मुझे आशा है, कि तुम मुझे अपनेसे बिलग न समझोगी। सुधीजनोंका कहना है, कि आपसमें केवल सात बातोंके आदान प्रदान करनेसे ही मनुष्योंका पारस्परिक भेद भाव मिटकर बन्धुत्व स्थापित हो जाता है। अतः इतनी देर तक बात चीत करनेके कारण हमलोगोंमें भी वह सम्बन्ध अवश्य ही हो गया है। इसके सिवा तुम्हारी बातोंसे मुझे मालूम होगया है, कि तुम बड़ी क्षमाशीला हो। देवि, मैं चपलमति बाचाल ब्राह्मण हूँ। कौतूहल वश दो चार बातें तुमसे पूछना चाहता हूं। आशा है, मेरी ढिठाई क्षमा करोगी।"

पार्वतीने कहा—"आप जो पूछना चाहें, प्रसन्नता पूर्व्वक

पूछिये। मैं असन्तुष्ट नहीं होऊंगी।"

ब्रह्मचारी—भद्रे, तुम नगराज हिमवानकी पुत्री हो। परमात्माने तुम्हें, रूप, गुण, विद्या बुद्धि, धन, ऐश्वर्य्य और यशख्याति यथेष्ट दिया है। संसारके सारे सुख तुम्हें प्राप्त हैं। परन्तु समझमें नहीं आता है, कि इस नई उमरमें तुम किस वस्तुकी प्राप्तिके लिये ऐसा कठोर तप कर रही हो? यह भी सम्भव नहीं, कि किसीने तुम्हारा अपमान किया हो और उसीका बदला लेनेके लिये तुमने यह पुरश्चरण आरम्भ किया हो। तुम्हारी यह यौवन-पूर्ण सुन्दर देह अच्छे अच्छे आभूषण पहनने योग्य है! परन्तु उसके बदले तुमने पेड़ोंकी कड़ी छाल पहन रखी है। ऐसा बल्कल वस्त्र बूढ़ोंको भले ही अच्छा लगे, तुम्हारी जैसी कमनीय कान्तिवाली सुन्दरीके अंगोंपर तो वह तनिक भी नहीं जंचता! यदि मान लूँ, कि तुम स्वर्ग पानेके लिये तप कर रही हो तो इस पर विश्वास नहीं होता; क्योंकि तुम्हारे लिये वह कोई ऐसी अलभ्य वस्तु नहीं है। यदि तुम पति पानेकी आकांक्षासे तप कर रही हो, तो मैं तुम्हें सलाह देता हूं, कि अभी यह कर्म्म छोड़ दो, क्योंकि रत्न कभी ग्राहक ढूँढने नहीं जाता, ग्राहक स्वयं उसके पास आता है।"

ब्रह्मचारीके मुखसे पति शब्दका उल्लेख सुनते ही पार्वतीने संकुचित हो, ठंढी सांस लेते हुए सिर नीचा कर लिया। उसकी समझमें नहीं आया, कि वह इस अद्भुत अतिथिके प्रश्नोंका क्या उत्तर दे

पार्वतीको संकुचित और मौन देखकर ब्रह्मचारी फिर कहने लगा,—"सुन्दरी, तुम्हारा हाव भाव और संकोच देखकर मालूम होता है कि तुम पतिलाभके लिये ही तप कर रही हो। परन्तु तो भी मेरा आश्चर्य्य दूर नहीं होता; क्योंकि संसारमें ऐसे पुरुषका होना असम्भव है, जिसकी प्राप्तिके लिये तुम्हारी जैसी सर्व-गुण सम्पन्ना रमणीको इतनी कठोर तपस्या करनी पड़े। शैलकुमारी, तुम्हारा तप करना देख कर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। इस युवावस्थामें भोगविलास और ऐशो आराम छोड़कर तुमने इस प्रकारका विकट वैराग्य लिया है। घोर तपके कारण तुम दुबली हो गई हो, बल्कल आदि पहन कर तुमने अपनी देहकी दुर्गति कर डाली है। इसलिये मेरी राय है, कि अब तुम तप करना छोड़ कर अपने घर चली जावो। मैं बाल ब्रह्मचारी हूं। मैंने बहुत तप किया है। उसका आधा फल मैं तुम्हें प्रदान करता हूं। मुझे विश्वास है, कि अपने और मेरे तपके फलसे तुम अवश्य ही अपना अभीष्ट फल पाजावोगी। साथ साथ तुम उस महापुरुषका नामधाम भी मुझे बता दो। यदि वह तुम्हारे योग्य होगा, तो मैं उसे प्राप्त करनेकी तद्बीर भी बता दूंगा।"

ब्रह्मचारी की बातें सुनकर पार्वतीका चेहरा लज्जासे लाल हो गया, उसके मुंहसे कोई बात नहीं निकली। हृदय बार बार हिलने लगा और शरीरसे पसीना निकलने लगा। वह मनही मन

सोचने लगी कि यह बाचाल ब्राह्मण कौन है ! मैं इसके प्रश्नोंका क्या उत्तर दूँ ?



(५)

प्रेम-परीक्षा

लज्जा और संकोचके कारण ब्रह्मचारीके प्रश्नका उत्तर देना पार्वतीको दोभर मालूम होने लगा। अतः उसने उत्तर देनेके लिये विजयाकी ओर इशारा किया।

सखीके मनका भाव समझ कर विजयाने कहा"–ब्रह्मचारीजी! हमारी सखी पिनाक-पाणि भगवान शंकरको पति बनानेके लिये तप कर रही हैं। इसी उद्देश्यसे उन्होंने इस युवावस्थामें सारे सुखोंको छोड़कर वैराग्य धारण किया है और रात दिन आहार विहार भूलकर केवल उन्हींके चरणोंकी चिन्तना किया करती हैं। इन्होंने अपना मन, प्राण और शरीर शंकरकी सेवामें अर्पण कर दिया है।"

जयाका उत्तर सुनकर ब्रह्मचारीके चेहरे पर खुशीके चिह्न दिखाई देने लगे। हृदयमें आनन्दकी तरंगें उठने लगीं। सारा शरीर प्रसन्नतासे पुलकित हो उठा। उसने एक बार बड़े प्रेमसे पार्वतीकी ओर देखा और अपने मनके भावोंको बल पूर्वक छिपा कर व्यंगकी हंसी हंसने लगा। इसके बाद फिर मानों अत्यन्त उदास हो कर बोला—"शुभे, मैं सरल चित्त वृद्ध ब्राह्मण हूं। तुम्हारे सरल व्यवहारोंसे विमोहित हो कर, मेरे हृदयमें तुम्हारे

प्रति सहानुभूतिका संचार हो गया है, इसीसे मैंने तुम्हारे तपका कारण जानना चाहा है। इस दशामें मेरे साथ परिहास करना तुमलोगोंको उचित नहीं है। यदि किसी कारणवश मेरा प्रश्न तुम्हें अनुचित जान पड़ा हो और मेरी बातें तुम्हें अप्रीतिकर मालूम हुई हों तो साफ साफ कह दो।"

पार्वती उस समय हाथमें रुद्राक्षकी माला लिये मन ही मन शिवनाम जप रही थी। लज्जावश वह स्वयं ब्रह्मचारीको उसके प्रश्नका उत्तर नहीं दे सकी थी। परन्तु जब उसने देखा, कि जयाकी बातका ब्रह्मचारीको विश्वास नहीं होता तब बोलनेके लिये बाध्य हुई। उसने कहा—"महाशय, आप अन्तर्यामी हैं। आपसे किसीका मनोभाव छिपा नहीं रह सकता। मेरी सखीने जो कुछ निवेदन दिया है, वह बिल्कुल सच है। मेरा यह अकिञ्चन मन वास्तवमें बड़ी अलभ्य वस्तुकी कामना कर रहा है। मैं समझती हूं, कि मेरे वाञ्छित फलकी महत्ताके सामने मेरी तपस्या कुछ भी नहीं है। तथापि मन नहीं मानता। इसीसे मैं इस असम्भव कार्य्यमें लगी हूं।"

पार्वतीका कथन सुनकर ब्रह्मचारीने दुःखित स्वरमें कहा, "यदि सचमुच तुम शङ्करको पति बनानेके लिये तप कर रही हो तो बड़ी भूल कर रही हो। क्योंकि वे संसार त्यागी हैं, दिन रात भंग और धतूरेके नशेमें चूर रहते हैं और पागलोंकी तरह इधर उधर भटकते फिरते हैं। अतः शंकरको पति बनानेसे तुम्हें



पार्वती उस समय हाथमें रुद्राक्षकी माला लिये मन ही मन शिवनाम जप रही थी।

Durga Press, Calcutta. (देखिये पृष्ठ—संख्या १६०)

कोई सुख प्राप्त नहीं होगा। मेरी तो समझमें ही नहीं आता, कि तुमने उनके किस गुणपर रीझकर उन्हें अपना पति बनानेका विचार किया है। मालूम होता है कि तुम्हें किसीने बहकाया है। इसलिये मैं तुम्हें यह सलाह देता हूं, कि तुम हठ छोड़कर दूसरे किसी देवताको अपना पति बनाओ। इन्द्र, यम, कुवेर, अग्नि और वरूण आदि देवगण शङ्करकी अपेक्षा हजार दर्जे अच्छे हैं। इनमेंसे जो तुम्हें पसन्द हो उसीका पाणि-ग्रहण कर सकती हो। मेरी बात मान लो। वृथा भ्रममें पड़कर अपना जीवन न वरबाद करो।

इतना कहकर ब्रह्मचारी तीक्ष्ण दृष्टिसे पार्वतीकी ओर देखने लगा। इधर उसकी बातें सुनकर पार्वतीका चित्त चञ्चल हो रहा था। यह प्रसङ्ग उसे नितान्त अनुचित मालूम होता था। परन्तु उसने अपने मनके आवेगको रोककर गम्भीरता पूर्व्वक कहा—"हे विप्र ! देवर्षि नारदजीने मुझे महादेवकी आराधना करनेका उपदेश दिया है। इस सम्बन्धमें वही मेरे गुरु हैं। मैं उन्हींके आदेशानुसार तप कर रही हूं। अब उनके आदेशकी अवहेला न करना मेरे लिये सम्भव नहीं हैं।"

ब्रह्मचारी—बस, अब मैं अच्छी तरह समझ गया कि नारदके बहकानेसे ही तुम एक पागलको पति बनानेके लिये अपना जीवन नष्ट कर रही हो। नारद ऊपरसे तो बड़े साधु और सीधे मालूम होते हैं, परन्तु उनका हृदय बड़ा कलुषित है। वे खुद भिखारी

हैं और दूसरोंको भी भिखारी बनाना चाहते हैं। उन्होंने कितने ही भोले भाले व्यक्तियोंको बहकाकर उनका सत्यानाश करा दिया है। अच्छा होता, यदि तुम उनकी बातोंमें न आतीं। खैर, अभी भी समय है। क्योंकि दिनभरका भूला हुआ यदि शामको घर पहुँच जाये, तो वह भूला नहीं कहलाता। इसलिये तुम अब बिना विलम्ब यह खटराग छोड़कर अपने घर चली जावो और नारदकी बात पर भविष्यमें कभी विश्वास न करना।

ब्रह्मचारीकी इस तरहकी बातें सुनकर पार्वतीका चित्त ऊब गया था। वह चाहती थी, कि अब इस विषयमें अधिक बातें न हों तो अच्छा है। परन्तु संकोचवश अपने मनका भाव प्रगट नहीं कर सकती थी। उसने फिर उसी तरह धीरेसे कहा--"ब्रह्मचारीजी, मैं पहले ही निवेदन कर चुकी हूं, कि इस सम्बन्धमें नारदजीको मैं अपना गुरु मानती हूं। इसलिये उनके कथनपर विश्वास करना मेरा धर्म्म हैं। क्योंकि गुरुकी बातोंपर जो विश्वास नहीं करता उसका कभी कल्याण नहीं होता। नारदजी अच्छे हों या बुरे हों, मुझे उनके कथनपर अटल विश्वास है। इसलिये यदि स्वयं शंकरजी भी आकर कहें तो भी मैं अपना विचार नहीं बदल सकती। आप कृपाकर इस प्रसंगको आगे न बढ़ाइये।"

इतना कहकर पार्वती चुप हो गई। उसके मौनावलम्बन करने पर ब्रह्मचारी फिर कहने लगा—"शुभे, मैं तुम्हारे भलेके लिये

ही तुम्हें तपस्या छोड़ देनेका परामर्श दे रहा हूं। यदि मेरी बात मान लोगी, तो सुख पावोगी। मैं सर्व देवोंमें श्रेष्ठ वैकुण्ठनाथ विष्णुसे तुम्हारा विवाह करा दूंगा। यह तो तुम जानती ही हो, कि विष्णु भगवान सर्वशक्तिमान देवता हैं। वेद उनका गुण गान करते हैं। वे बड़े ही सुन्दर और सब गुणोंके आगार हैं। उनसे उत्तम वर तुम्हें त्रिलोकमें दूसरा नहीं मिलेगा। उनकी पत्नी बनकर तुम परम सुख प्राप्त कर सकोगी। इसलिये जिद छोड़कर तुम मेरी बात मान लो। अवगुण निधान शिवको पति बनानेकी कुवासना परित्याग करो। रूपगुण, कुलशील मानमर्य्यादा, धनऐश्वर्य्य यही चार बातें विवाहके सम्बन्धमें विचारणीय होती हैं। मैं जहां तक जानता हूं, इनमें एक बात भी शिवमें नहीं पायी जाती। रूप और गुण जैसा उनमें है, वह सभी जानते हैं। संसारमें सबकी दो आँखें होती हैं; उन्हें तीन हैं। गुण यह है, कि दिनरात नशेमें चूर रहते हैं। कुलशीलके बारेमें तो कुछ पूछना ही नहीं, है, क्योंकि आज तक किसीको मालूम ही नहीं हुआ, कि वे किसके पुत्र हैं और किस वंशमें उनका जन्म हुआ है। मान मर्य्यादा भी उनकी सबसे अधिक भूतों हीमें हैं। ऐश्वर्यका हाल यह है कि लज्जा ढँकनेके लिये शरीर पर एक लँगोटी भी नहीं। अब तुम्हीं बताओ, कि ऐसे व्यक्तिसे विवाह कर तुम कहां तक सुख पावोगी?"

ब्रह्मचारीके मुँहसे बार बार शिवकी निन्दा सुनकर पार्वतीका

मन उद्विग्न हो रहा था। उसने इस प्रसंगको रोकनेकी बड़ी चेष्टा की ; परन्तु ब्रह्मचारी मानों उसे चिढ़ानेके लिये बार बार शिवकी निन्दा कर रहा था। इसलिये उसकी बातें सुनकर पार्वती बहुत नाराज हुई। क्रोधसे उसकी भौंहें चढ़ गईं और आंखें लाल हो गईं। अब वह किसी प्रकार भी अपनेको सम्भाल न सकी। सच है, पतिकी निन्दा सुनकर कौन पतिव्रता चुप बैठी रह सकती है ?

पार्वतीने किञ्चित उत्तेजित स्वरसे कहा—"ब्रह्मचारीजी महाराज ! अब आप कृपाकर अपना उपदेश अपने पास रहने दीजिये, मैं उसे सुनना नहीं चाहती। अफ़सोस है, कि आप इतने बड़े विद्वान और ज्ञानी होकर भी महादेवके सम्बन्धमें कुछ नहीं जानते। यदि आपको उनके अलौकिक चरित्रका कुछ भी ज्ञान होता तो उनके सम्बन्धमें इस तरहकी बेतुकी बातें न करते। मैं अपना जीवन महादेवके चरणोंमें अर्पण कर चुकी हूं। मुझे अब उनके गुणों और अवगुणोंपर विचार करनेका अवसर नहीं है :—

महादेव अवगुन भवन, विष्णु सकल गुण धाम।
जेहिकर मनु रम जाहि सन, तेहि तेही सन काम॥

यदि उनमें सहस्रों अवगुण हों तो भी मुझे कुछ चिन्ता नहीं। अब मेरे भावों और विचारोंमें किसी तरहका परिवर्तन होना असम्भव है। संसारकी कोई शक्ति, कोई उपदेश और कोई

ज्ञान मुझे अपने निश्चयसे च्युत नहीं कर सकता।

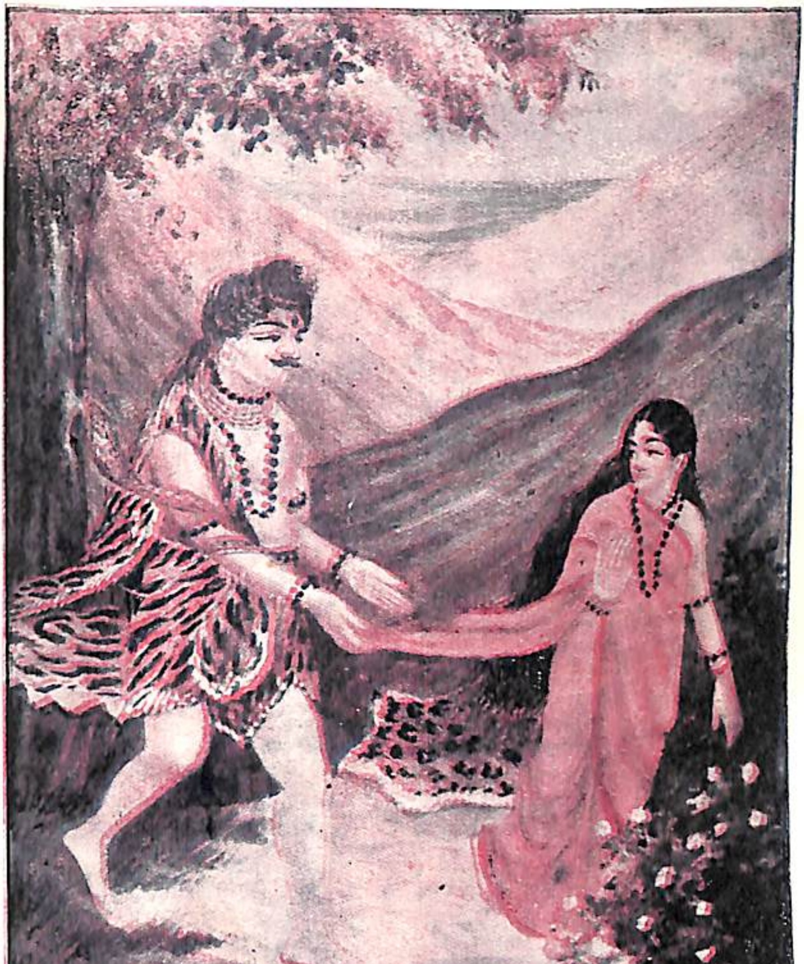
जनम कोटि लगि रगरि हमारी,
बरउँ संभु नतु रहउँ कुआँरी।

अतएव आप अब इस प्रसंगको यहीं समाप्त कीजिये। अब मुझे अधिक कष्ट न दीजिये।

पार्वती, तुम धन्य हो। तुम्हारी जैसी सती साध्वीके मुंहसे ऐसी ही बातें शोभा देती हैं। तुम्हारा यह हठ, तुम्हारी यह "रगरि" ही तुम्हारे जीवनकी महत्ता है। इसीने तुम्हें विश्वकी पतिव्रताओंमें अग्रस्थान प्रदान किया है। तुमने मनही मन शिवको पति बनाया है। अपना पवित्र हृदय शिवके चरणोंमें अर्पण कर दिया है। अब एक विष्णु क्या सहस्र सहस्र विष्णुका रूप, गुण और ऐश्वर्य्य भी तुम्हें डिगा नहीं सकता। जिस हृदय सिंहासनपर तुमने शिवको बैठाया है, उसपर कैसे कोई दूसरा बैठ सकता है। पार्वतीका उत्तर सुनकर, मन ही मन उसकी दृढ़ पति-भक्तिकी प्रशंसा करता हुआ, ब्रह्मचारी परम आनन्दित हुआ। क्षणभर चुप रहकर फिर बोला,—"पार्वती, मैं तुम्हें चिढ़ानेके लिये शिवकी निन्दा नहीं करता। तुम्हारा उनका विवाह नितान्त असंगत होगा और उनकी पत्नी बननेसे तुम्हें बहुत कष्ट भोगना पड़ेगा। इसीसे मैं तुम्हें यह दुराग्रह छोड़नेके लिये बार बार अनुरोध कर रहा हूं। तुम राज-राजेश्वरकी कन्या हो, सुखसे पली हो और कभी कष्ट भोगनेका अवसर तुम्हें नहीं प्राप्त हुआ है। हठात्

शिवकी पत्नी बननेपर तुम्हें बड़ा दुःख होगा। इसीसे मैं तुम्हें पहले ही सावधान कर देना चाहता हूं। तुम मंगलमयी परमा सुन्दरी हो और शिव अमंगल वेष धारी, सारे शरीरमें राख लपेटे रहते हैं। उनकी भुजाओंमें विषधर सर्प लिपटे रहते हैं। बैलपर चढ़े सींगकी तुरुही बजाते फिरते हैं। कभी नङ्गे रहते हैं और कभी कमरमें बाघकी छाल लपेट लेते हैं। उनके रहनेका कोई ठीक नहीं, कभी घने बनोंमें घूमते हैं और कभी मरघटमें धुनी रमा कर बैठ जाते हैं। ऐसे पागलसे विवाह करनेपर लोग तुम्हारी हंसी करेंगे। शिवके सारे आचरण अत्यन्त अमंगल मूलक हैं। बिना सोचे विचारे ऐसे दरिद्र और निकम्मे व्यक्तिको पति बनानेके लिये इतनी कठोर तपस्याकर तुम नाहक अपना श्रम और समय नष्ट कर रही हो। मेरी बात मानकर शङ्करसे विवाह करनेकी अनुचित अभिलाषा अपने हृदयसे निकाल दो। इसीमें तुम्हारा कल्याण है।"

बार बार पतिकी निन्दा सुनते सुनते पार्वती घबरा गई। वह ज्यों ज्यों इस अप्रिय प्रसंगको रोकनेकी चेष्टा करती थी, ब्रह्मचारी त्यों त्यों उसे आगे बढ़ाने लगा। इससे पावती अत्यन्त विरक्त हो गई। उसने क्रुद्ध होकर ब्रह्मचारीसे कहा—"बस अब बहुत हो चुका। अब तुम अपनी जबान बन्द करो। मैं पतिव्रता हूं। पतिकी निन्दा सुनना मेरे लिये पाप है। इस-लिये तुम्हारे साथ वृथा वकवास करना मैं अच्छा नहीं समझती।



पार्वतीकी प्रेम-परीक्षा।

पार्वतीने मुंह फेरकर अत्यन्त आश्चर्य्य सहित देखा, कि स्वयं भगवान शङ्कर खड़े मुस्कुरा रहे हैं

Durga Press,—Calcutta.

(देखिये पृष्ट सख्या—१०७)

शङ्करजी भले हैं, या बुरे हैं। इससे तुमसे क्या मतलब ? 'तुम आपन कामते काम करो, कोऊ आपन भागि कुवां गिरिहें।' विश्वपति महादेव मंगलमय हैं। उनके लिये राजमहल और मरघट एकसां है। मूल्यवान आभूषण, विषधर सर्प तथा चन्दन और चिता भस्ममें उनके लिये कोई अन्तर नहीं। वे बैल और हाथीको बराबर मानते हैं। वे स्वयं विश्वमूर्त्ति हैं। सांसारिक वस्तुओंकी विभिन्नता उनके लिये नहीं है। मैंने स्वेच्छापूर्व्वक शङ्करजीको अपना हृदय सौंप दिया है। मुझे लोकापवादकी कुछ पर्वाह नहीं है। तुम्हारे निन्दा करनेसे मेरा मन नहीं डिग सकता। इसलिये अब तुम इस सम्बन्धमें मुझसे कुछ न कहो।"

पार्वतीकी फटकार सुनकर ब्रह्मचारी फिर कुछ कहना चाहता था। यह देखकर पार्वतीने अपनी सखियोंसे कहा—"यह बकबादी ब्राह्मण फिर कुछ कहना चाहता है। तुम लोग इसे मना कर दो। क्योंकि महात्माओंकी निन्दा करनेवाले और उसे सुननेवाले समान पापके भागी होते हैं। अतएव यदि वह अपनी जबान नहीं रोकेगा, तो लाचार हो मैं यह स्थान परित्याग करूंगी।"

यह कहकर पार्वती उस स्थानसे चली जाने लगी। इतनेमें ही पीछेसे किसीने उसका शिथिल वस्त्र पकड़ लिया। पार्वतीने मुंह फेरकर अत्यन्त आश्चर्य्य सहित देखा, कि स्वयं भगवान शङ्कर खड़े हुए मुस्करा रहे हैं!

---

(६)

साधनका फल

सिद्धि प्राप्त करनेपर साधकके मनकी जो अवस्था होती है, सुदीर्घ कालका वियोग-व्यथित हृदय अपनी वाञ्छित वस्तु पाकर जो अलौकिक आनन्द अनुभव करता है, पतिव्रता साध्वी पतिको देखकर जितना हर्ष प्राप्त करती है तथा प्रथम पति-दर्शनके समय पतिको पाकर नवोढ़ाके हृदयकी जो दशा होती है, वही दशा पार्वतीकी भी हुई। ब्रह्मचारीके स्थानपर हठात् चिराराध्य शिवको खड़ा देखकर वह एक साथ ही चकित, स्तम्भित, लज्जित तथा पुलकित होकर खड़ी हो गई; उसके पैरोंमें आगे बढ़नेकी शक्ति न रही। पार्वतीकी उस समयकी अवस्थाका वर्णन जरा महाकवि कालिदासके शब्दोंमें सुनिये :—

तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसाङ्गयष्टि-
निक्षेपणाय पदमुद्धृत मुद्वहन्ती।
मार्ग चलव्यतिकरा कुलितेव सिन्धुः
शैलाधिराज तनया न ययौ न तस्थौ।

भावार्थ यह, कि शिवको उपस्थित देखकर पार्वतीकी देह थरथर कांपने लगी। सारे शरीरमें पसीना हो गया। चल-

नेके लिये उठा हुआ एक पैर उठाही रह गया। रास्तेमें पहाड़ पड़ जानेसे जिस तरह नदीका प्रवाह रुक जाता है, उसी तरह पार्वती भी रुक गई। न तो उसे वहांसे जाते ही बना और न स्थिर होकर खड़ी ही रह सकी।

कुछ देरके बाद पार्वतीने अपनेको संभाला। वह शङ्करजीको देखकर अपना सब कष्ट भूल गई। मानापमान, नैराश्य और सन्ताप भूलकर उसका हृदय आनन्दसे परिपूर्ण हो गया। मानों एक अपूर्व्व आनन्द-प्रवाहने आकर उसके मनकी दृढ़ताको बहा दिया। महा आनन्दसे उसका ज्ञान विलुप्त हो गया। समस्त संसार उसकी आंखोंके सामने मानों आनन्दसे नाचने लगा। शोक, सन्ताप और जरा मरणमय संसार उसे परम आनन्दमय प्रतीत होने लगा। बहुत दिनोंकी तपस्याकी तकलीफ सहते सहते पार्वतीके शरीर और स्वभावमें कठोरता आगई थी। उज्ज्वल कान्ति कुछ मलीन सी हो गई थी। कोमल शरीर कृश तथा कर्कश हो गया था। परन्तु उस अनैसर्गिक आनन्द-प्रवाहने एक क्षणमें उसकी अवस्थाको बदल दिया। उसका मुख-कमल अपूर्व्व आनन्दसे खिल उठा, रोम रोमसे हर्ष-प्रवाह जारी होगया, उस समय उसे देखकर कौन कह सकता था, कि यह वही कठोर साधना करनेवाली तपमूर्त्ति किशोरी है, जिसने अपनी अपूर्व्व दृढ़ता और पतिभक्तिके कारण एक असम्भव कार्य्यको सम्भव कर दिखाया है। विश्वविजयी काम अपना अमूल्य जीवन

उत्सर्ग कर भी जो न कर पाया था, उसे पार्वतीने कर दिखाया। आज उसने संसारकी नारियोंको अच्छी तरह बता दिया है, कि तुम अबला नहीं हो। तुम्हारा प्रेम-बल अपरिमेय और तुम्हारा सतीत्व अजेय है। संसारकी कोई शक्ति तुम्हारे सत्यबलके सामने टिक नहीं सकती। अस्तु,

सहसा शङ्करजीको सामने देखकर पार्वतीके मुंहसे कोई बात न निकली। वह लज्जासे सिर नीचाकर चुपचाप खड़ी रह गई। महादेवने उसका हाथ पकड़कर कहा—"गिरीश नन्दिनी! तुमने अपनी तपस्याके बलसे मुझे खरीद लिया है। आज से मैं तुम्हारा क्रीतदास हूं।"

शङ्करका वचन सुनकर लज्जावती पार्वती और भी लज्जित हुई। इधर महादेव भी अवनत मुखी पार्वतीकी सुन्दरता देखकर विमुग्ध हो गये। सारा त्याग और वैराग्य भूलकर वे स्थिर दृष्टिसे अपनी प्रेयसीको देखने लगे। बहुत दिनोंकी बिछड़ी हुई शक्तिको पाकर वे भी अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त कर रहे थे। इसी तरह कुछ मौन रहकर फिर कहने लगे :—"प्रिये, मैंने तुम्हारे प्रेमकी परीक्षा लेकर तुम्हें जो कष्ट दिया है, उसे क्षमा करना। तुम मेरी सनातनी पत्नी हो। मैं सर्वथा तुम्हारे अधीन हूं; क्योंकि त्रिलोकमें तुमसे बढ़कर प्रिय मेरे लिये दूसरा नहीं है।"

भगवान शङ्करकी प्रेम-भरी मधुरवाणी सुन कर पार्वती और

भी आनन्दित हुई। पतिके इन वचनोंके उत्तरमें कुछ बोलनेकी इच्छा रहते हुए भी लज्जावश उसके मुंहसे कोई बात नहीं निकली। कुछ देरके बाद धीरे धीरे शङ्करके हाथोंसे अपना हाथ छुड़ा कर उसने विजयासे कहा :—"ऐ सखी, विश्वेश्वरसे कह दे, कि जिस तरह आपने दर्शन दे कर कृतार्थ किया है; उसी तरह, लोकरीतिकी रक्षाके लिये अनुग्रहकर मेरे पितासे मुझे मांग लीजिये। क्योंकि अनूढ़ा कन्याके ऊपर पिताका ही अधिकार होता है।"

पार्वतीका लज्जा बिजड़ित मधुर वचन सुनकर शङ्करने कहा—"सुन्दरी, यद्यपि मैं कभी किसीसे कोई वस्तु नहीं मांगता तथापि तुम्हारे पिताके पास सन्देशा भेज कर तुम्हें प्राप्त करूंगा। अब तुम किसी बातकी चिन्ता न करो।"

इतना कहकर शङ्करजी उस स्थानसे जानेके लिये तैयार हुए। परन्तु प्रेममयी पार्वतीको छोड़कर जानेकी इच्छा नहीं हुई। सतृष्ण दृष्टिसे बार बार उसको देखते हुए, बड़े कष्टसे उन्होंने उस स्थानसे प्रस्थान किया।

———





पार्वती

तीसरा पर्व ।

(७)

प्रत्यागमन

राजा हिमवानकी राजधानीमें आज महा आनन्दकोलाहल मचा है। छोटे बड़े सभी प्रसन्न दिखाई देते हैं। राज-महलके द्वारपर दुन्दुभी बज रही है। प्रत्येक नगर निवासी अपनी अपनी शक्तिके अनुसार खुशियां मना रहा है। ब्राह्मणोंके आशीर्वाद और बन्दी मागधोंके स्तुति-गानसे राजपुरी मुखरित हो रही है। राज महिषी मेनका नाना प्रकारकी मांगलिक वस्तुएं लिये पुरनारियों सहित राजद्वार पर खड़ी हैं। युवतियां मंगल गान कर रही हैं।

शैलराज किशोरी पार्वतीने अपनी घोर तपस्या समाप्तकर दी है। स्वयं भगवान शङ्करने उपस्थित होकर उसे वाञ्छित वर प्रदान किया है। आज वह गौरीश्रृङ्गसे अपनी प्यारी सहेलियोंके साथ घर लौट रही है। रथ आदि लेकर दलबल सहित मन्त्री महाशय उसे लेने गये हैं। अब पार्वतीके आनेमें विशेष विलम्ब नहीं है, सवारी पुरद्वारके निकट आगई है। ज्यों ज्यों समय निकट आ रहा है, त्यों त्यों नगरनिवासियोंकी उत्सुकता बढ़ रही है। दर्शकोंकी भीड़से राजपथ भर गया है। शान्तिकी रक्षा करनेवाले सिपाही इधर उधर टहलते हुए, नम्रता पूर्व्वक लोगोंको

सावधान कर रहे हैं। पुरनारियां पुष्प चन्दन आदि लिये अपनी अपनी अटारियों पर बैठी हुई बाल-योगिनीके आगमनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। अपने पतिको प्राप्त करनेके लिये किशोरी पार्वतीने जो कष्ट सहा है, जैसी घोर तपस्या की है और जो अपूर्व्व दृढ़ता दिखाई है, उससे उसका महत्व बहुत ही बढ़ गया है। हिमालय प्रदेशकी स्त्रियोंने पार्वतीकी कठोर तपस्यासे बड़ी शिक्षा पाई है। इसीसे और भी आग्रह तथा उत्सुकता पूर्व्वक पतिप्राणा पार्वतीको देखना चाहती हैं।

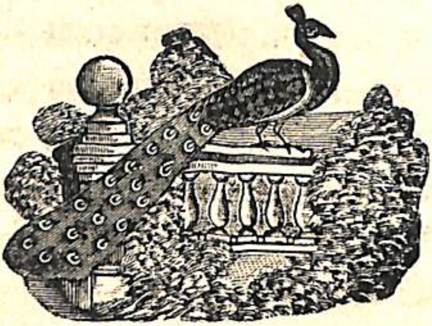
देखते देखते पार्वतीका रथ राज-पथ पर आ गया! चारों ओरसे जय-ध्वनि होने लगी। ऊँचे महलोंकी अटारियोंपर बैठी हुई पुरमहिलाओंने पार्वतीके ऊपर फूलोंकी वर्षाकी। विविध राज-पथोंसे होता हुआ रथ राज-महलकी देवढ़ी पर पहुंचा। माता मेनकाने दौड़कर कन्याको गलेसे लगा लिया। मातासे मिलकर पार्वती अपनी सहेलियों तथा अन्यान्य महिलाओंसे मिली। राजकुमारी पार्वतीके चले जानेसे राजमहल सूना हो गया था। उसकी समवयस्का सहेलियां बड़े कष्टसे दिन बिता रही थीं। आज अपनी प्यारी सखीको पाकर उनका हृदय आनन्दसे गद्गद हो गया। पार्वतीने यथायोग्य सबका सम्मान किया।

पार्वतीके आनेसे समस्त राजधानीमें अपूर्व्व आनन्द छा गया। पार्वतीकी अद्भुत तपस्या, अपूर्व्व पातिव्रत और अलौकिक सतीत्वकी चर्चा घर घर होने लगी। कन्याकी

सुख्याति सुनकर राजा और रानीने विशेष गौरव अनुभव किया।

दीर्घ कालकी कठिन तपस्याके बाद मनोवाञ्छित फल पा कर भी पार्वती निश्चिन्त नहीं हुई। घर आकर भी वह नित्य प्रेम पूर्व्वक शिवकी आराधना करने लगी। अवकाशके समय शिवके चरणोंकी चिन्ता ही उसका प्रधान कार्य था। वास्तवमें पार्वती शिवमय हो गई थी। वह समझती थी, कि स्त्रीका जीवन पतिके लिये ही हैं। पतिहो उसका सर्वस्व, पतिही उसका इष्टदेव पतिही परम गुरु और पतिही परम बन्धु है। जो स्त्री कपट छोड़कर सच्चे दिलसे पतिकी सेवा करती है; देवताकी भांति उसका स्मरण, चिन्तन और पूजन किया करती है, उसे किसी दूसरे देवताकी आराधना और पूजा करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। केवल एक पति-पूजा ही उसकी सारी आकाङ्-क्षाओंको पूरा करती है। पति सामने मौजूद हो या नहो, पतिव्रता सदैव उसीकी चिन्तामें लगी रहती है। उसे वह सर्वज्ञ और अन्तर्य्यामी समझकर सदैव अपने निकट मौजूद समझती है। शास्त्रोंमें लिखा है, कि पति यदि सामने मौजूद न हो तो पतिव्रताको सब प्रकारका शृंगार और सुख छोड़कर पतिका चिन्तन करना चाहिये। इसीसे पार्वती शिखरसे वापस आने-पर सोते जागते सदैव अपने प्राणपतिके चरणोंका ध्यान किया करती थी। उस समय यही उसके जीवनका प्रधान कर्त्तव्य था।

पार्वती निरभिमानिनी थी, अपनेको राजकुमारी समझ कर छोटोंसे मिलना जुलना पाप नहीं समझती थी। इसीसे नगरकी छोटी छोटी बालिकायें, अनूढ़ा किशोरियां तथा उसकी समवयस्कायें सदैव उसे घेरे रहती थीं। वह उनसे बड़े प्रेमसे मिलती थी और अपनी विद्या बुद्धिके अनुसार विविध शास्त्रोंका प्रमाण देकर उन्हें पति-भक्ति तथा पति-सेवाका उपदेश दिया करती थी। यही उसकी दिन-चर्य्या थी।



(८)

विवाहकी बातचीत

बहुत दिनोंके बाद आज कैलास शैलने फिर अपनी पहली शोभा धारणकी है। कैलासनाथने फिर अपने कैलास-पर आकर उसे सुशोभित किया है। जिस दिन शङ्करने अपनी प्रियतमा पत्नी सतीके शरीर त्यागनेका संवाद पाया था; उसी दिन उन्होंने कैलासको भी छोड़ दिया था। उनके साथ ही उनका अनुचर वर्ग भी चला गया था। उसी दिनसे कैलास सूना पड़ा था। उसकी मनोहर रमणीयता नष्ट हो गई थी। वह निर्ज्जन महास्मशान भूमिकी भांति शोभाहीन हो गया था।

शिवके दुःखसे दुःखी होकर मानों कैलास भी उदास हो गया था। शंकरकी योगवेदीके निकटका विल्व वृक्ष फलभारसे झुक कर मानो उनकी चिन्तामें लगा था। जिन कुञ्जोंमें बैठकर वे अपनी प्रियमताके साथ प्रेमालाप करते थे, उसके फूल मानों उनके वियोगसे दुःखी होकर झुक गये थे। अपने मधुर कल-नादसे बनस्थलीको मुखरित करनेवाले सुहावने झरने अपना स्वाभाविक मधुर गान छोड़कर शङ्करके पत्नि-वियोगकी शोकमयी कथायें सुनाकर विलाप कर रहे थे। वायु व्याकुल होकर सतो शङ्करको ढूंढ़ रही थी और न पानेपर हाहाकार करती फिरती

थी। शिवके चले जानेसे मानों पक्षियोंका गान, फूलोंकी हंसी, पौधोंका झूमना, चांदनीकी चमक और प्रकृतिकी प्रसन्नता न जाने कहाँ चली गई थी। शिव दर्शनार्थी ऋषि मुनि तथा देवताओंने भी कैलासका आना छोड़ दिया था। फलतः शिवके न रहनेसे कैलास निर्जन, निस्तब्ध और निर्जीव सा हो गया था।

आज कैलासनाथके लौट आनेसे निर्जीव कैलासमें पुनः सजीवता आ गई है। हवाने अपने मधुर हलके झोंकोंसे बनस्थलीके वृक्षोंको हिला डुलाकर शिवके शुभागमनका संवाद सुना दिया है। पक्षीगण आनन्दित होकर मधुर स्वागत संगीत गा रहे हैं। छोटे छोटे पहाड़ी झरने पुनः मधुर स्वरसे शिवस्तोत्र पाठ करने लगे हैं। फूलोंने दिल खोलकर हंसना आरम्भ कर दिया है। याचककी भांति भौंरें भी उनके निकट आकर गुनगुनाने लगे हैं। शिवके लौट आनेकी खबर पाकर दूर दूरसे ऋषि मुनि भी उनके दर्शनार्थ कैलासपर आने जाने लगे हैं। फलतः भगवान शङ्करके आते ही कैलासने फिर अपनी शोभा—सम्पद प्राप्त कर ली है।

सरल हृदय भोलानाथने अपने अनुचरोंको भी पार्वतीका हाल सुना दिया है और यह भी समझा दिया है, कि सतीने ही पुनर्जन्म लेकर पार्वती नाम धारण किया है। जिस दिनसे अनुचरोंने यह शुभ समाचार पाया है, उसी दिनसे आनन्द मना रहे हैं। जगन्माता शिवानीके दर्शनके लिये उनका चित्त लाला-

यित हो रहा है। जिस समय वह सतीके रूपमें वहाँ विराजमान थीं, उस समय इन अनुचरोंको पुत्रवत् प्यार करती थीं। इसी लिये भगवान शङ्करके मुखसे यह शुभ संवाद सुनकर नन्दी आदि-के हृदयमें बहुत दिनोंकी सोई हुई स्नेहधारा फिर बहने लगी है। वे बड़ी खुशीसे उछल कूद मचाने लगे। शिवजीके दर्शनके लिये उनका चित्त अत्यन्त अधीर हो उठा।

जिस दिनसे भगवान शङ्करने पार्वतीका पाणि-ग्रहण करनेकी प्रतिज्ञा की है, उसी दिनसे उनका चित्त भी चञ्चल हो रहा है। योग, वैराग्य, आहार, निद्रा भूलकर वे दिन रात पार्वतीकी ही चिन्तामें लगे हैं। अपने प्रति उसका अनुराग और अनन्य प्रेम देखकर बार बार आनन्दित हो रहे हैं। पार्वतीके बिना एक क्षण उन्हें एक युगकी तरह बीत रहा है। इससे पहले वह उसे देखनेके लिये दो बार, भेष बदलकर हिमवानके घर भी जा चुके हैं। एक बार नटका रूप धारणकर और दूसरी बार वृद्ध ब्राह्मण बनकर उन्होंने राजा हिमवान और रानी मेनकाकी भी परीक्षा ले ली है। कहीं ऐसा न हो, कि पार्वती केवल अपनी ही इच्छासे उन्हें वरण करना चाहती हो और उसके पिता-माता असन्तुष्ट हों। इसीसे वे ब्राह्मण बनकर हिमवानसे खूब अपनी निन्दा कर आये हैं।

एक दिन सन्ध्याके समय शङ्करजी विल्व-वृक्षके नीचे बैठे हुए मन ही मन पार्वतीकी सुन्दरताकी चिन्ता कर रहे थे। इतनेमें नन्दीने आकर कहा, कि इन्द्र, अग्नि, कुवेर तथा यम आदि देवता

आपके दर्शनके लिये आये हैं। यदि आज्ञा हो तो उन्हें आपके निकट लाऊँ।

शिवजीने प्रसन्नता पूर्व्वक कहा-"हाँ, देवताओंको आने दो।"

प्रभुकी आज्ञा पाकर नन्दीने देवताओंको शिवके पास पहुँचाया। देवताओंने एक एककर शिवको अभिवादन किया। फिर कुशल प्रश्नके बाद नाना प्रकारकी बातें होने लगीं। देवताओंके साथ देवर्षि नारदजी भी आये थे। बड़ी देरतक इधर उधरकी बातें होनेपर नारदजीने कहा—"हे, विश्वेश, आप परम योगी अन्तर्य्यामी हैं। इस समय यह देव-मण्डली जिस उद्देश्यसे आपकी सेवामें उपस्थित है, वह आपसे छिपा नहीं है। तथापि मैं यह प्रगट कर देना उचित समझता हूँ, कि आजकल विधाताकी सृष्टि बड़े सङ्कटमें हैं। राक्षसराज तारकके अत्याचारोंसे पृथिवी घबरा उठी है। यज्ञयागादि पुण्य-कर्म बन्द हो रहे हैं, ब्राह्मणोंने धर्म्म कर्म्म छोड़ दिया है, ऋषि मुनियोंकी तपस्यामें बाधा उपस्थित हो रही है, गोवंश सङ्कटमें पड़ा है, पतिव्रताओंका पातिव्रत नष्ट हो रहा है और चारों ओर पापका प्रचार हो रहा है। ब्रह्माजीने आज्ञा दी है, कि एक मात्र भगवान शङ्करका भावी पुत्र ही तारकका विनाश कर सकता है। इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है। इसीसे हमलोग आपकी सेवामें उपस्थित हैं। उधर हिमवानकी पुत्री पार्वतीने भी आपके चरणोंकी दासी बननेके लिये घोर तप किया है। उसे आप अभिलषित

वर भी प्रदान कर चुके हैं। अतएव, अब ऐसा कीजिये, जिसमें हमलोग शीघ्र ही आपका विवाहोत्सव देख सकें। पूज्य विधाता तथा विष्णुजीकी भी यही अभिलाषा है।"

शङ्करने मुस्कराते हुए कहा—"अच्छा, अब आप लोग चिन्ता न कीजिये। मैं शीघ्र ही वृद्ध विधाताजी की आज्ञाका पालन करनेकी तदबीर करूँगा।"

भगवान पिनाकपाणिका सन्तोषजनक उत्तर सुनकर देवगण अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनकी स्तुतिकर सानन्द देवलोक चले गये।



(६)

लग्न-पत्रिका

प्राचीन कालके महात्माओंमें सप्तर्षि बड़े विख्यात हैं। इस मण्डलमें वशिष्ठ तथा अङ्गिरा आदि सात महातेजस्वी महर्षि थे। ये सदैव एक साथही रहा करते थे और त्रिकालज्ञ थे। शिवजीके कैलासपर लौट आनेका सम्वाद पाकर इन लोगोंने भी कैलास यात्रा की थी। देवताओंके चले जानेके कुछ देर बाद ये भी वहां पहुंच गये। वशिष्ठजीकी स्त्री अरुन्धती देवी भी साथ थीं। सप्तर्षियोंके आनेकी खबर पाकर शिवजी बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रेमसे उनका आदर सत्कार किया। बहुत दिनोंके बाद शङ्करजीका दर्शनकर सप्तर्षियोंने भी आनन्द पाया और भक्ति पूर्व्वक प्रणामकर स्तुति की। शङ्करजीने भी उनके अलौकिक त्याग, लोक-सेवा और धार्म्मिकताकी यथोचित प्रशंसा की।

इसके बाद उन्होंने देवताओंके आनेका जिक्र करते हुए कहा,—"इस समय आप लोगोंका आना बड़ाही अच्छा हुआ। मैं अभी आपलोगोंको स्मरण कर रहा था। बात येह है, कि ब्रह्माजीका वरदान पाकर दुरात्मा तारकने बड़ा उत्पात मचा रखा है। उसने प्रजाको बड़ा कष्ट पहुंचाया है। इसलिये अब उसका

विनाश हो जाना अत्यावश्यक है। ब्रह्माजीकी आज्ञा है, कि मैं इसके लिये गृहस्थ बनकर सन्तान उत्पन्न करूँ। उधर शैलजा पार्वतीने भी मेरे लिये कठिन तप किया है। इसलिये उसका मनोरथ पूर्ण होना भी आवश्यक है। इसके सिवा मैं उसका पाणि-ग्रहण करनेकी प्रतिज्ञा भी कर चुका हूं। एक बार छुट्टी पानेपर फिर विवाह-बन्धनमें फसनेकी इच्छा तो नहीं थी, परन्तु लाचारी है। इस लिये राजा हिमवानके यहां जाकर आपलोग सब वातचीत पक्की कर आइये।"

सप्तर्षियोंने कहा,—"आपकी यह यत्किञ्चित सेवाकर हम लोग अपनेको धन्य समझेंगे। हमें यह शुभ और लोकोपकारी कार्य्य सौंपकर आपने हमारा सम्मान बढ़ाया है। हम लोग बहुत शीघ्र राजा हिमवानसे मिलकर सब बात ठीक कर लेंगे।"

इसके बाद शीघ्रगामी विमानपर सवार हो, आकाश मार्गसे सप्तर्षियोंने हिमालयकी यात्रा की। यथासमय विमान राजा हिमवानकी राजधानीके निकट जा पहुंचा। ऋषियोंने उतरकर नगरमें प्रवेश किया और उसकी सुन्दर शोभा देखते हुए राज-महलके समीप जा पहुंचे।

सप्तर्षियोंके आनेका संवाद पाकर राजा हिमवान बड़े हर्षित हुए। उन्होंने स्वयं उठकर उनकी अगवानी की और यथाविधि पूजन कर खूब सम्मान प्रदर्शित किया। राजाकी भक्ति और नम्रता देखकर ऋषियोंने भी उनकी बड़ी प्रशंसा की।

ऋषियोंके कुछ देर विश्राम करलेनेपर राजा हिमवानने बड़ी नम्रतासे कहा—"आपके चरणोंका दर्शनकर मैं अपनेको परम भाग्यवान समझता हूँ। आपने बड़ी कृपा की जो दर्शन दिया। अब मुझे अपना अनुचर समझ, मेरे योग्य जो कुछ सेवा हो, कृपा कर बताइये।"

ऋषियोंने कहा,—"राजन्! आप धन्य हैं। आपकी विनम्रता और सज्जनताकी जहांतक प्रशंसा की जाये, थोड़ी है। हम लोग वस्तुतः आपकेही कार्य्यके लिये यहां आये हैं। आपकी कन्याकी तपस्यासे सन्तुष्ट होकर शिवजीने उसे पत्नी-रूपमें ग्रहण करनेका वर प्रदान किया है और इस सम्बन्धमें आपका क्या अभिमत है, यही जाननेके लिये उन्होंने हमलोगोंको आपके पास भेजा है। हमें पूरी आशा है, कि आप अवश्य ही यह सम्बन्ध स्वीकार करेंगे।"

राजाने कहा,—"आपकी तथा शिवजीकी आज्ञा शिरोधार्य्य है। मैं तो यह परम पवित्र सम्बन्ध पहलेही स्वीकार कर चुका हूं। परन्तु दुःख है, कि पार्वतीकी माता नहीं स्वीकार करती। कई दिन हुए एक वैष्णव यहां आया था। उसने एकाएक शिवजीकी निन्दा करनी आरम्भ कर दी। तभीसे उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो रही है। किसी तरह मानती ही नहीं।"

देवी अरुन्धतीने कहा—"आपलोग इसकी कोई चिन्ता न करें, मैं बहन मेनकाको समझा लूंगी।"

राजा—"आपके समझानेसे वह अवश्य ही समझ जायेगी।"

इसके बाद अरुन्धती देवी रानीके पास गईं। रानीने भक्ति पूर्व्वक प्रणामकर उन्हें उचित आसन प्रदान किया। उनके बैठ जाने पर स्वयं भी बैठीं। इसके बाद देवीने कहा—"बहन, मैंने सुना है, कि तुम शिवको कन्या दान करनेसे इन्कार करती हो। क्या यह बात सच है? पार्वतीने उनके लिये ऐसा कठोर तप किया है, अपना तन मन उनको सौंप चुकी है और एक प्रकारसे उनकी स्त्री हो चुकी है। अब वह दूसरे पुरुषकी अर्द्धाङ्गिनी कैसे हो सकती है?"

मेनका—"देवि, यह तो मैं भी समझती हूं, परन्तु क्या करूं मन नहीं मानता। एक राज-कन्याको भिखारीके हाथमें कैसे सौंपू? जो उमा राजमहलोंमें पली है, जिसकी मैंने आँखकी पुतलीकी तरह रक्षा की है, वही एक धनहीन स्मशानवासी योगीकी पत्नी होगी। यह देखकर मैं कैसे जीती रहूंगी। उस दिन एक वैष्णव ब्राह्मण आये थे; उन्होंने कहा, कि शिवजी तो बिल्कुल पागल हैं, उनके रहनेका घर भी नहीं है, भूत प्रेतोंके बनोंमें फिरा करते हैं। यहां तक कि खानेका भी ठिकाना नहीं है। इसलिये तुम अपनी कन्याका विवाह उनसे कदापि न करो।"

अरुन्धतीने कहा—बस बहन, मैं सब समझ गई? भगवान शिव बड़े लीलामय हैं। उन्होंने तुम लोगोंकी परीक्षाके लिये स्वयं वैष्णव बनकर तुम लोगोंको भ्रमाया है। नट बनकर भी

वही यहां आये थे। अब तुम भ्रममें मत पड़ो। वे अमित ऐश्वर्य्य शाली हैं, अलकापुरीके राजा कुबेर उनके दास हैं। सर्व शक्तिमान मंगलमय परमेश्वर हैं। पार्वती उनकी जन्म जन्मान्तरकी अर्द्धाङ्गिनी है। वही उसके पति हैं। यदि तुम विवाह न करने दोगी तो भी पार्वती उन्हींकी होगी। तुम मेरी बातोंपर विश्वास करो और शिवके सम्बन्धमें जो भ्रान्त धारणा तुमने मनमें पोषित की है, उसे निकाल डालो और प्रसन्नता पूर्व्वक शिवको कन्या-दान देकर सुयश भागिनी बनो।"

परम पतिव्रता और सत्यवादिनी अरून्धती देवीका उपदेश सुन कर मेनकाका भ्रम दूर हो गया। उसने बड़ी विनम्रतासे कहा—"देवि, आप महात्मा वशिष्ठजीकी धर्मपत्नी, परम विदुषी और सत्यवादिनी हैं। आपके कथनपर मुझे पूर्ण विश्वास है। मुझे दृढ़ धारणा है, कि आपके द्वारा हमारी पार्वतीका कोई अनिष्ट नहीं होगा। अतः मैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य करती हूँ।"

मेनकाकी स्वीकृति पाकर अरून्धती देवीने अपने पति वशिष्ठजीके पास जाकर कहा, कि मैंने रानीको राजी कर लिया। अब आपलोग राजाजीसे अन्यान्य बातें तय कर लीजिये।

रानीकी सम्मति मिल जानेपर राजा तथा सप्तर्षियोंको बड़ी प्रसन्नता हुई। हिमवानने उसी समय कन्याको बुलाकर ऋषियोंको प्रणाम कराया और बोले—"यह बालिका आपही लोगोंकी है। अब, आपलोग इसके बारेमें मुझे जो आज्ञा प्रदान करेंगे,

उसका पालन करूंगा।"

ऋषियोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजीने कहा—"राजन्, आप धन्य हैं। हमारा प्रस्ताव स्वीकारकर आपने पार्वती और शङ्करका जो उपकार किया है, वह तो किया ही है। अपनी उदारतासे आपने हमलोगोंको भी कृतज्ञ बना लिया है। आपकी सुशीला कन्या-को हमलोग आन्तरिक आशीर्व्वाद प्रदान करते हैं। अब आप इस शुभ-कार्य्यमें बिलम्ब न कर, अपने पुरोहितजीसे लग्नपत्रिका लिखवा कर शीघ्रही शङ्करजीके पास भेजवाइये। अब हमलोग शिवजीको यह शुभ संवाद देने जाते हैं।"



(१०)

विवाहका आयोजन

देवी अरुन्धती सहित सप्तर्षियोंको बड़े सम्मानसे विदाकर राजा हिमवानने अपने कुल पुरोहित गर्गजी तथा ज्ञाति कुटुम्बियोंको बुला भेजा।

पुरोहितजीने गणनाकर बताया, कि आजके चौथे दिन बहुतही उत्तम लग्न पड़ता है। इसी लग्नमें पार्वतीका शुभ विवाह होना चाहिये ; क्योंकि ऐसा उत्तम मुहूर्त्त दूसरा नहीं है।

राजाने वही लग्न स्वीकार कर लिया तथा उसी समय श्री शङ्करजीके पास भेजवा दिया।

श्रीशङ्करने बड़ी प्रसन्नतासे तिलक स्वीकार किया और तिलक लानेवालोंकी खूब खातिरदारी की।

इसके बाद दोनों ओरसे विवाहकी तैयारियां आरम्भ हुईं। दिन बहुत थोड़े थे, इसलिये राजा हिमवानने मन्त्री महाशयको बुलाकर एक साथ ही सब कार्य्य आरम्भ कर देनेकी आज्ञा दे दी। देवता, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, अप्सरायें, ऋषिमुनि, सांन्यासी, पण्डित, गायक, बादक तथा ज्ञात-कुटम्बियोंको बुलावा भेज दिया गया। चारों ओरसे निमन्त्रित स्वजनों तथा हित-मित्रोंके आगमनसे राजा हिमवानका राजमहल भर गया। सिंहद्वारपर

शहनाई बजने लगी। राजअन्तःपुर महिलाओंके हास्य कौतुक और गाने बजानेसे मुखरित हो उठा। सब लोग नये उत्साह और आनन्दसे विवाह सम्बन्धीय आयोजनोंमें लग गये। बालक बालिकाओंके चित्कार, युवक युवतियोंके कलरव, प्रौढ़ प्रौढ़ाओंके शासन और बूढ़े बूढ़ियोंके अयाचित उपदेशोंसे राजपुरीमें विषम कोलाहल मच गया। कहीं घरोंकी सजावट होने लगी, स्वयं विश्वकर्म्मा अपने दलबल सहित मण्डप बनाने लगे। मण्डपकी तैयारियां होने लगी, कहीं नाना प्रकारकी मिठाइयां बनने लगीं। रोशनी और पानीका भी यथोचित प्रबन्ध किया गया।

भीतरी तैयारियोंके साथही बाहरी तैयारियां भी अनवरत हुईं। बारातियोंके ठहरनेके लिये तथा जनवासेके लिये सुन्दर स्थान बनवाया गया। उस जमानेके सभी नामी नामी कारीगर बुलाये गये। बड़ी धूम-धामसे सब कार्य्य होने लगे। बूढ़े मन्त्री महाशय नवयुवककी भांति बड़े उत्साहसे चारों ओर घूम घूमकर सब कामोंका तत्वावधान करने लगे। अपने राजाके घर मंगलानुष्ठान होते देखकर प्रजाने भी अपने अपने घरोंमें मंगल कार्य्य आरम्भ कर दिया। हाटबाट, गली, कूचा और बड़ी बड़ी सड़कें खूब सजाई गईं। विविध रंगकी पताकायें और बन्दनवारोंसे राजपथकी अपूर्व्व शोभा बन गई। हिमवानकी राजधानीकी शोभा-के सामने स्वर्गकी शोभा फीकी पड़ गई। प्रजाने अपनी इच्छासे इस शुभ-कार्य्यमें भाग लिया। सारा नगर एक परिवारकी भांति

प्रतीत होने लगा। भीतर बाहर अपूर्व चहल-पहल मच गई।

यह जानकर, कि प्यारी पार्वती हमसे बिछड़ जायेगी, उसके माता पिता तथा उसकी सहेलियोंको बड़ा कष्ट होने लगा। छोटी छोटी बालिकायें, किशोरियां तथा पार्वतीकी हमजोलियोंने उसे घेर लिया। अपने अलौकिक गुणोंके कारण उमा सबकी प्यारी हो गई थी, इसीसे वियोगके कष्टकी चिन्ताकर छोटे बड़े सभी व्याकुल हो गये।

यह तो हुई राजा हिमवानकी तैयारीकी बात। अब जरा महादेवजीका हाल सुन लीजिये। जबसे उनके अनुचरोंने प्रभुके विवाहकी खबर पाई तभीसे उछल कूद मचाने लगे। कोई नाचने लगा, कोई गाने लगा, कोई चिल्ला चिल्लाकर शोर मचाने लगा, कोई नाना प्रकारके फूलोंकी माला पहनकर खुद दुलहा बनकर अपने साथियोंकी पीठपर चढ़ने लगा। कोई आनन्दके मारे अपने साथीकी देहपर लोटने लगा। उनकी चिल्लाहट और शोरसे घबराकर कितने ही पशु पक्षी भयभीत होकर भागने लगे! भैरव तथा नन्दीने उन्हें संयत करनेकी चेष्टा की। परन्तु उस समय वहां उनकी सुनता कौन है? सब अपनी अपनी इच्छानुसार इधर उधर दौड़ धूप करने लगे। मानों उन्होंने सारा कैलास ही सिरपर उठा लिया। सब अपनी अपनी इच्छानुसार बारातकी तैयारी करने लगे।

नारदजीने आ कर ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि सारे बड़े बड़े देव-

ताओं, किन्नरों, यक्षों और मनुष्योंको बारातका नेवता दे दिया। शिवजीके घर कोई स्त्री थी नहीं, इसीलिये ब्रह्माणी, लक्ष्मी तथा इन्द्राणी आदि * सप्तमातृकाओंने आकर विवाह सम्बन्धीय कार्य्य आरम्भकर दिया। ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, गौतम और बृहस्पति आदि बहुतसे ऋषियों और कर्मकाण्डियोंने आकर विधिवत सब कार्य्य आरम्भ कर दिये। फलतः शिवजीके यहां भी विवाह सम्बन्धीय आचार व्यवहार बड़ी धूम-धामसे होने लगे।

देखते देखते वर-यात्राका समय आया। सप्त मातृकाओंने शिवजीको वर वेषमें सजानेके लिये विवाह सम्बन्धी मंगल वस्तुएं तथा तरह तरहके सुन्दर गहने और वस्त्रादि लाकर उनके आगे रख दिये। उन मूल्यवान चीजोंको देखकर शिवजीने हँसते हँसते कहा—"मैं नित्य जो चीजें व्यवहार करता हूं, वही आज भी रहेंगी। मुझे इन सुन्दर गहनों और आभूषणोंकी जरूरत नहीं है।"

फलतः उनकी इच्छानुसार ही उनका वेष बनाया गया। समस्त शरीरमें शुभ्र विभूति लगाई गई। बिखरी हुई जटायें समवेत कर बाँध दी गईं। कमरमें बाघम्बर बाँधा गया। ओढ़-नेके लिये विशाल गजचर्म लाकर रखा गया। ललाटमें त्रिपुण्ड

* सप्त मातृका—ब्राह्मी, वैष्णवी, ऐन्द्री, रौद्री, बाराहिकी, कौवेरी और कौमारी।

चमकने लगा। बाजूबन्द, विजायट और हारका काम बड़े बड़े विषधर सर्पोंसे लिया गया। चूड़ामणिकी जगह चन्द्रमा चमकने लगा।

इस तरह विचित्र साजबाजसे सजधजकर शिवजी तैयार हो गये।

नन्दीने उनके वाहन बैलकी पीठपर मृगछाला बिछाकर पहले ही ठीक कर रखा था। जिस समय शिवजी सजधजकर उसपर चढ़ने आये, उस समय प्रभुको देखकर बैलने भी आनन्द पाया। वह स्वयं उनके निकट जाकर खड़ा हो गया। शिवने बड़े प्यारसे उसकी पीठ पर हाथ फेरा।

इसके बाद शिवजीने अपने प्रधान प्रधान अनुचरोंको बुलाया। देखते देखते भूत, प्रेत और पिशाचगण दलके दल आकर खड़े हो गये। किसीने भंगकी झोली उठाई, किसीने बिल्वपत्रका गट्ठर अपने ऊपर लादा और किसीने धतूरेकी टोकरी लेली। शिवजीने कुछ अनुचरोंको कैलासपर छोड़कर बाकीको साथ चलनेकी आज्ञा दी।

इस तरह आवश्यक व्यवस्थाकर उन्होंने बैलपर चढ़कर हिमालयकी ओर यात्रा की। उनके पीछे नन्दी और भैरव अपने अपने वाहनोंपर सवार होकर चले। इनके बाद तुरही, शंख, डमरू और श्रृङ्गी आदि विचित्र बाजे बजाते हुए विकटानन, अग्निमुख, सन्नाह, सुमन्त्र, शंखकर्ण, सर्वान्तक और कुण्डक आदि

अगणित दलपति अपनी अपनी प्रेत वाहिनियों सहित चले।

शिवजीके इस अद्भुत समाजका वर्णन करते हुए भगवान तुलसीदासजीने लिखा है :—

कोऊ मुखहीन विपुल मुख काहू,
बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू।
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना,
रिष्ट पुष्ट कोउ अति तनखीना।
तनखीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरे।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरे॥
खर-स्वान-सुअर सृगाल-मुख गन वेष अगनितको गनै।
वहु जिनि सप्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै॥
नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी, भूत सब।
देखत अति विपरीत, बोलहिं बचन बिचित्र बिधि।
जस दूलह तस बनी बाराता, कौतुक विविध होहि मग जाता।

आकाशमें विमानों पर बैठी देवांगनायें शिवजीकी बारात देख कर हँसते हँसते लोट पोट हो गईं। बारात क्या थी, भूतोंकी पलटन थी।

शिवजीके दलके पीछे सप्त मातृकायें अपने अपने वाहनोंपर सवार होकर चलीं। उनके पीछे ब्रह्माजी, भगवान विष्णु, देव-राज इन्द्र, देवर्षि नारद आदि अपनी अपनी टोलियोंके साथ अपने अपने वाहनों पर सवार होकर चले।

हाथी, घोड़े और तरह तरहके सुहावने बाजे आदि सभी सामानोंसे बारात सजीधजी थी। देवांगनायें ऊपरसे फूलोंकी वर्षा कर रही थीं। बाजोंकी झनकार, हाथियोंकी चिंघाड़ और घोड़ोंकी हिनहिनाहट और बारातियोंके कोलाहलसे मेदिनी परिपूर्ण हो गई।

देखते देखते यह विशाल बारात राजा हिमवानकी राजधानी ओषधिप्रस्थके निकट जा पहुंची।



(११)

विवाह

राजा हिमवान अपने ज्ञाति कुटुम्बियों तथा सरदार सामन्तों सहित सजधजकर वरके शुभागमनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बाजोंकी आवाज आदि सुनकर उनलोगोंको पहले ही मालूम हो गया था, कि बारात आरही है। इसलिये वे लोग बारातकी अगवानीके लिये आगे बढ़ आये। उधर समस्त राजधानीमें बारातके आनेकी खबर फैल गई। चारों ओर तरह तरहके मांगलिक बाजे बजने लगे। शंख, भेरी और दुन्दुभीका घोर शब्द होने लगा। राज-द्वारपर खड़ी, वरांगनायें परिछन करनेकी सामग्री लिये मंगल गान करने लगीं, ब्राह्मणगण स्वस्ति पाठ करने लगे और बन्दीलोग वरपक्ष तथा कन्यापक्षका सुयश गान करनेमें प्रवृत्त हुए।

धीरे धीरे विविध राजपथोंसे होती हुई बारात राजा हिमवानके द्वार पर आलगी। राजाने वरका हाथ धर कर बाहनसे उतारा। शिवजीने ससुरको प्रणाम किया, शिवजीको प्रणाम करते देखकर राजा हिमवानका सिर आपही आप झुक गया। इसके बाद वे शिवजीको लेकर द्वारकी ओर बढ़े। द्वारपूजाका कृत्य समाप्त हो जानेपर वरके परिछन करनेकी बारी आई। रानी मेनका

अन्यान्य पुरस्त्रियों सहित सोनेकी थालोंमें परिछनकी सामग्री लिये हुए पहलेसे ही तैयार थीं। जामाताको देखनेके लिये उनका हृदय उत्सुक हो रहा था। थोड़ी देरके बाद ही मन्द मन्द मुस्कराते हुए सदाशिव सासके सामने आ, प्रणाम कर खड़े हो गये। शङ्करजीका शरीर विभूति भूषित था, सिर पर जटा बंधी थी, हाथोंमें पिनाक लिये थे, मृगचर्म्म पहने हुए थे और गलेमें तथा बाहोंपर सांप लिपटे हुए थे। उनकी ऐसी विकराल मूर्त्ति देखकर परिछनके लिये आई हुई स्त्रियोंका होश उड़ गया। वे सभी चिल्लाकर घरोंमें भाग गईं। वेचारी मैनका भावी दामादका यह विकट मूर्त्ति देखकर मूर्च्छित हो गई। शिवजी जनवासे चले गये। इसके बाद स्त्रियोंने मेनकाको होशमें लानेकी चेष्टा की। बड़ी बड़ी मुशकिलोंसे उसे होश हुआ। उसने उसी समय अपनी प्यारी पुत्रीको बुला कर अपनी गोदमें ले लिया और फूट फूट कर रोने लगी—हाय! नारदजीने हमारा बसा घर उजाड़ दिया। उन्हींके बहकावेमें आकर पार्वतीने एक पागलके लिये अपना जीवन नष्ट कर दिया। मालूम होता है, कि नारदनेही राजाकी मति गति भी हर ली है, इसीसे वे भी जान बूझकर कन्याको पानीमें डालनेके लिये तैयार हैं! जो हो, मैं अपने जीते जी उमाको उस पागल के हाथोंमें नहीं सौंपूँगी। उसे लेकर आगमें जल जाऊँगी, पर्वतसे गिर कर प्राण देदूंगी अथवा नदीमें जाकर डूब जाऊँगी। परन्तु अपनी प्राणप्यारी कन्याको शिवके साथ नहीं व्याहूंगी।

चाहे मुझे यश हो या अपयश हो। लोग निन्दा करें या स्तुति करें। मैं जीते जी कदापि ऐसा अनर्थ न होने दूंगी। हाय, माता हो कर मैं अपनी कन्याको ऐसे वरके हाथोंमें कैसे सौंप सकूंगी।

रानीकी व्याकुलता और उसका विलाप करना देखकर रनिवासकी सब स्त्रियां चिन्तित हुईं। कुछ बूढ़ियोंने शिवकी महिमाका वर्णनकर उसे समझाना चाहा, परन्तु कोई फल न हुआ। वह पूर्व्ववत् कन्याको गोदमें लिये हुए विलाप करने लगी।

जननीको इस प्रकार व्याकुल होकर विलखते देख पार्वतीने कहा—"मां, तुम बुद्धिमती हो कर क्यों भ्रममें पड़ी हो? विधाताने मेरे भाग्यमें जो कुछ बदा है, वह मुझे अवश्य ही भोगना पड़ेगा। तुम्हारे दुःख करनेसे विधिके अङ्क तो मिटेंगे ही नहीं, फिर तुम नाहक क्यों कलङ्क ले रही हो? दुःख सुख जो कुछ मेरे भाग्यमें होगा, वह किसीके टाले नहीं टल सकता। इसलिये तुम शोक छोड़ दो।"

पार्वतीका वचन सुनकर मेनकाका हृदय करूणासे और भी भर आया। शोकाग्नि धधक उठी। उसने पार्वतीको वाधा देकर कहा—"बेटी, तेरी तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई। नारदके कहनेमें आकर तूने अपने हाथसे अपने पैरोंमें कुल्हाड़ी मारी है। जान बूझकर तूने कांचन छोड़ कांच ग्रहण किया हैं। मैंने तुझे कितना समझाया था, परन्तु तूने जिद्दवश मेरी बात न मानी। आज उसीका फल तुझे भोगना पड़ रहा है।" रानीका विलाप देखकर सारे

महलमें कुहराम मच गया। राजा तथा अन्यान्य लोग भी वहां आ गये। सबने यथामति उसे समझाना बुझाना आरम्भ किया। इतनेमें यह खबर जनवासेमें पहुंची। सप्तर्षियोंको साथ ले नारदजी भी वहां आगये। नारदको देखते ही मेनकाका शोक और भी बढ़ गया। वह रोते रोते नारदको सम्बोधन कर कहने लगी —"मुनिराज, मैंने तो समझा था, कि तुम साधु हो। पार्वतीकी भलाईके लिये उसे शिवकी आराधना करनेका उपदेश दे रहे हो, परन्तु आज मुझे मालूम हो गया, कि तुम बड़े कपटी हो। तुमने जान बूझकर हमारा बसा बसाया घर उजाड़ा है। वह सत्यवादिताका मान करनेवाली अरून्धती कहां है, जिन्होंने नाना प्रकारकी लम्बी चौड़ी बातें बनाकर मुझे बहकाया था। हाय, इस तरह मेरी कन्याका सत्यानाश कर तुमलोग फिर भी यहां आये हो। तुम लोग साधुवेशधारी कपटी हो। मैं ऐसे कपटियोंका मुंह नहीं देखना चाहती। तुम लोग अब यहांसे चले जाओ। तुमलोगोंने मिल कर मेरी कन्याका सत्यानाश किया हैं।"

इसी तरह नाना प्रकारकी बातें कहकर रानी मेनका विलाप करने लगी। उसे इस तरह क्षुभित देखकर राजा हिमवानने कहा—"रानी, तुम भूलती हो। तुम्हारी मति मारी गई है। तुम भगवान शङ्करको नहीं जानती हो। इसीसे उनका वेश देखकर घबरा रही हो और परम पूज्य ऋषियोंको वृथा दोष दे रही हो। तुम्हारी जैसी बुद्धिमतीके लिये यह लज्जाकी बात है। हमारे बड़े

सौभाग्यसे भगवान शङ्कर कन्यादान ग्रहण करनेके लिये हमारे यहां आये हैं। वे लीलामय हैं। इन्द्र आदि बड़े बड़े देवता उनकी भक्ति करते हैं। तुम भ्रम छोड़ दो।"

राजाके सिवा अन्यान्य ऋषियों तथा देवताओंने रानीसे शिवकी महिमा सुनाई। अन्तमें ब्रह्मा तथा विष्णुने भी आकर बहुत कुछ समझाया ; परन्तु रानी मेनका किसी तरह कन्याका विवाह शिवके साथ करनेको तैयार न हुई। उसने साफ कह दिया, कि मैं ऐसी रूपवती और सुशीला कन्याको एक पागलके हवाले कदापि न करूंगी।

सब समझाना बुझाना विफल हो जानेपर विष्णुजीने शङ्करके पास जाकर कहा—"कन्याकी माता आपका विकट वेश देखकर डर गई हैं और किसी तरह आपके साथ कन्याका विवाह करना नहीं चाहतीं, अतएव आप कृपाकर अपना यह अद्भुत वेश बदल डालिये। थोड़ी देरके लिये मृगछाला और गजचर्म अलग रखिये और अपने प्यारे सांपोंको भी किसी झोलीमें छिपा रखिये। नहीं तो विवाह नहीं होगा।"

विष्णुजीकी बात सुनकर शङ्करजीने हंसते हंसते कहा—"बहुत अच्छा, यही सही।"

इसके बाद वे सुन्दर वर-वेश धारणकर मण्डपमें उपस्थित हुए। भावी जामाताका सुन्दर रूप और मनोहर बेश देखकर रानीका भ्रम दूर हो गया। उसने बड़े स्नेहसे उनका परिछन किया।

परिछन आदि हो जानेपर विवाह कार्य्य आरम्भ हुआ। स्वयं ब्रह्माजीने पुरोहितका आसन ग्रहण कर शास्त्र-विधिसे शिव और पार्वतीका शुभ विवाह कराया। राजा हिमवानने आनन्द चित्तसे शिवको कन्यादान किया। इस समय एक मजेदार दिल्लगी हुई। कन्या पक्षके पुरोहितोंने वरके पिताका नाम तथा गोत्र आदि पूछा। बेचारे भोलानाथ बड़ी मुशकिलमें पड़े। परन्तु चतुर ब्रह्माजीने संभाल लिया। उन्होंने कहा—"वरका नाम स्मरण, उसके पिता का नाम पूरहर, पितामहका नाम संहर, प्रपितामहका नाम हर, गोत्र शिव और प्रवर शङ्कर है।"

शिवजीका वंश-परिचय सुनकर लोग हँस पड़े। इसके उपरान्त स्त्री-आचार आरम्भ हुआ। पुरमहिलायें बर वधूको कोहबरमें ले गईं। वहां पार्वतीकी भौजाइयों और समवस्यका सहेलियोंने नाना प्रकारकी हंसी दिल्लगी आरम्भ की। नवीनाओंके साथ हास परिहास कर शिव बड़े प्रसन्न हुए।

इन्द्राणीके साथ कामदेवकी विधवा भी विवाहोत्सव देखने आई थी। उपयुक्त अवसर देखकर वह शिवके चरणोंपर गिर कर रोती हुई बोली,—"हे दीनबन्धु-शङ्करजी, जिस पार्वतीको पाकर आप इस समय प्रसन्न हैं, उन्हींके साथ आपका शुभ संयोग करानेकी मेरे पतिने चेष्टा की थी। परन्तु आपने अपने क्रोधसे उन्हें जला डाला। अब इस शुभ अवसरपर मेरे पतिको जिला कर मेरा वैधव्य दूर कीजिये, जिसमें मैं भी आपके विवाहके शुभ



शिवका विवाह।

ब्रह्माजीने पुरोहितका आसन ग्रहणकर शास्त्र-विधिसे शिव और पार्वतीका शुभ विवाह कराया।

Durga Press, Calcutta.

(देखिये पृष्ठ—संख्या १४२)

महोत्सवका आनन्द लाभ कर सकूं। हे दयामय! देवताओंने मुझे आश्वास न दिया था, कि भगवान शङ्कर बड़े करुणामय हैं, वे तेरी अभिलाषा पूर्ण करेंगे, इसीसे उस समय पतिके साथ सती नहीं हुई। अब आप मेरे प्राणनाथका जीवन-दान देकर मुझे सौभाग्यवती बनाइये। आपके इस विवाहोत्सवके अवसरपर सभी प्रसन्न हैं, केवल मैं अभागिनी ही एक दुखिया हूँ। हे भगवान! अब आप कृपा कर मेरे दुःख दूर कीजिये।"

यह कहकर रतिने कामदेवकी चिता-भस्म शिवके सामने लाकर रख दी और रोने लगी। उसका रोना देखकर पार्वती सहित सभी रमणियोंको बड़ा दुःख हुआ। सभी कामदेवको जिला देनेके लिये शिवजीसे अनुरोध करने लगे।

भगवान शङ्करने रतिपर कृपाकर उसके पतिकी चिता भस्म-पर दया-दृष्टिसे देखा। उसी समय कामदेव जी उठा। पतिको प्राप्तकर रति बहुत प्रसन्न हुई। उसने बार बार शिवके चरणोंमें प्रणाम किया। इसके बाद कामने शिवजीको प्रणाम किया।

बड़े आनन्द समारोह सहित विवाह-कार्य्य समाप्त हुआ। राजा हिमवानके सुयोग्य मन्त्रीने बारातियोंके भोजन विश्राम आदि-का यथोचित प्रबन्ध किया था। किसीको किसी वस्तुका अभाव नहीं हुआ। उनके इस उत्तम प्रबन्धकी सबने प्रशंसा की। याचकों तथा ब्राह्मणोंने खूब दान दक्षिणा पायीं। रानी मेनकाने राशि राशि रत्न गहने और वस्त्रादि लुटा दिये।

बारातियोंके मनोरञ्जनके लिये राजा हिमवानने नाच गान, नाटक, तथा अन्यान्य प्रकारके खेल तमाशोंका भी यथोचित प्रबन्ध किया था। अतएव विवाह हो जानेपर कई दिनों तक बारात टिकी रही। नित्य नये नये नाटक, बाजीगरी और नाच गान आदि होते रहे। जब कई दिन बीत गये तब विष्णुने राजा हिमवानसे जाकर कहा—"राजन्, आपने हमलोगोंका विधिवत आदर सत्कार किया है। इसलिये हमलोग आपके कृतज्ञ हैं। अब आप कृपाकर हम लोगोंको जानेकी आज्ञा दीजिये।"

राजाने कहा,—"प्रभो, मेरे बड़े सौभाग्यसे आपलोगोंने मेरे यहां पदार्पण किया है। कृपा कर कुछ दिन और रहिये!"

विष्णु बोले—"राजन्, आपको तो अच्छी तरह मालूम है, कि हमलोगोंको कर्तव्यका कितना गुरुतर भार सौंपा गया है। अतएव अब अधिक रहनेसे सृष्टि-कार्य्यको बड़ी क्षति पहुंचेगी। इस लिये अब आप कृपाकर हमलोगोंको छुट्टी दीजिये।"

विष्णुजीके बहुत कहने सुननेपर राजाने विदा स्वीकार की।

(१२)

विदा.

जगतकी चिरप्रथाके अनुसार संयोगके बाद वियोगका समय उपस्थित हुआ। इतने दिनोंतक जो चहल पहल और धूमधाम मची थी, उसके अवसानका समय निकट आ गया। दूसरे दिन सवेरा होते ही बारातियोंने अपने डेराडण्डा उठाना आरम्भ कर दिया। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, यम और कुवेर आदिके अनुचरोंने उनके वाहनोंको सजसजाकर ठीक कर दिया। सब लोग एक एककर राजा हिमवानसे विदा लेने लगे। राजाने सब-के प्रति यथायोग्य सम्मान और उपटोकन देकर विदा किया। सब देवताओं, दिकपालों तथा अन्यान्य प्रधान पुरुषोंकी विदाईके बाद वर-कन्याके विदाका समय आया। शिवजी विदा लेनेके लिये सासके पास आये। सारे महलमें गंगा यमुनाकी सम्मिलित धाराकी भांति शोक और आनन्दकी धारा बह चली! पार्वतीको सहेलियां, भौजाइयां और अन्यान्य समवयस्कायें उसे गले लगा कर रोने लगीं। उस समय सारे महलमें कुहराम मच गया। अभी क्षणभर पहले जहां आनन्दकी नदी बह रही थी, वहां शोक-का समुद्र उमड़ आया। पार्वतीके वियोगकी खबर सुनकर रानी मेनका मूलहीन वृक्षकी भांति पृथिवीपर गिर पड़ी। हाय ! जिस

पार्वतीको वह प्राणोंसे प्रिय समझती थी, जिसके सुखके लिये सब कुछ करनेको तैयार रहती थी, वही प्राण-पुतली कन्या आज सदैवके लिये उससे विदा होती है। इससे बढ़कर दुःख और क्या होगा? स्नेहमयी जननी बड़ी चेष्टासे अपनेको संभालकर पार्वतीको कलेजेसे लगाकर रोने लगी। पार्वती भी माताकी छातीमें मुंह छिपाकर रोने लगी। माता और कन्याका प्रेममय मिलन देखकर परम धीर राजा हिमवानकी धीरता भी थोड़ी देरके लिये विलुप्त हो गई। इधर पार्वती पिताको देखतेही उनके चरणोंमें आकर लिपट गई। पिताने स्नेहसे अधीर होकर कन्याके सिरपर हाथ फेरा। उस समय उनकी आंखोंसे अश्रुधारा बहने लगी। कन्याके वियोगकी बात स्मरणकर हृदय व्यथित होने लगा। बड़ी मुशकिलसे अपने दुःखित चित्तको संयतकर राजाने कन्याको संक्षेपमें ही स्त्रीधर्मके सम्बन्धमें कुछ उपदेश दिया।

पिताका उपदेश मनोयोग पूर्व्वक सुनकर पार्वती फिर अपनी माताके निकट गई। जननीने उसे अपनी गोदमें बैठाकर उसकी आंखोंके आंसू पोंछे और फिर रूँधे हुए गलेसे कहने लगी,— "बेटी, तू परम बुद्धिमत्ती है, अपनी कौमार्य्यावस्थामें पतिके प्रति तूने अपने हृदयका अटल प्रेम दिखाकर संसारको एक नया आदर्श दिखा दिया है। तथापि मैं स्त्रीधर्मके सम्बन्धमें दो चार बातें बता देना अपना कर्त्तव्य समझती हूँ। बेटी, इस शोकसन्तापमय नश्वर संसारमें पतिव्रता स्त्रियां ही धन्य हैं। पतिव्रतायें सब

लोकोंको पवित्र करनेवाली तथा सब पापोंको दूर करनेवाली होती हैं। जो स्त्री मन वचन, और कर्मसे अपने पतिकी सेवा करती है, वह चिरकालतक संसार सुख भोगकर अन्तमें पवित्र पतिलोंकको जाती है। सावित्री, लोपामुद्रा, अनुसूया, शतसूया, शांडिल्या, और लक्ष्मी आदि प्रातःस्मरणीया स्त्रियोंने अपने पातिव्रतके बलसे ही संसारकी स्त्रियोंमें सबसे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है। श्रुतियों तथा स्मृतियोंमें पातिव्रत धर्मके पालन करनेकी जो विधि लिखी है, उसे मैं संक्षेपमें सुनाती हूं। उस विधिके अनुसार पतिकी सेवा करनेवाली स्त्री वह शक्ति प्राप्त कर सकती है, जो बड़े बड़े तपस्वी और देवता भी प्राप्त नहीं कर सकते। स्त्रीको चाहिये, कि वह पतिकी सब आज्ञाओंका प्रसन्नता पूर्वक पालन करे, पतिके भोजन कर लेनेपर भोजन करे, पतिके सोनेपर सोवे और पहले जगे। छल छोड़कर पवित्र हृदयसे पतिकी सेवा करे। स्वामीके परदेश जानेपर कोई शृङ्गार आदि न करे, पतिका नाम धरे। पतिके कठोर वचनोंका उत्तर न दे। उसे कोई अपमानजनक बात न कहे। पतिके ताड़न करनेपर भी प्रसन्न रहे। पतिके दोषोंका वर्णन किसी दूसरी स्त्रीके सामने न करे। परन्तु पतिमें यदि कोई अवगुण हो तो उसे शान्तिपूर्वक बुद्धिमानीसे दूर करनेकी चेष्टा करे। दुर्भाग्यवश यदि पति कोढ़ी, नपुंसक, रोगी या बूढ़ा हो तो भी उसकी सेवा और उसकी आज्ञासे मुंह नहीं मोड़ना चाहिये। पतिकी आज्ञाके बिना घरसे बाहर निकलना भी स्त्रीके

लिये महापाप है। पतिकी अवज्ञा करनेवाली स्त्री नरक-गामिनी होती है। पतिकी इच्छा और आदेशके विपरीत कोई काम नहीं करना चाहिये। पतिके दुःखसे दुःखी और पतिके सुखसे सुखी होना स्त्रीका प्रधान कर्त्तव्य है। संपत् और विपतके समय सामान्य रूपसे धैर्य्य धारणकर पतिका साहचर्य्य करना पत्नीका प्रधान धर्म है।

स्त्रीके लिये पति ही सर्वस्व है। वही उसका देवता, पितर और ईश्वर है। पति-सेवाके अतिरिक्त और किसी तरहकी पूजा-पाठ और व्रत उपवास स्त्रीके लिये आवश्यक नहीं। जो नारी पतिकी सेवा छोड़कर दूसरे देवताकी सेवा करती है या अन्य प्रकारका व्रत होम आदि करती है, वह पुण्यके बदले पाप अर्जित करती है। क्योंकि शास्त्रोंके आदेशानुसार भर्ताही स्त्रीका देवता, गुरु, धर्म्म और तीर्थ व्रत है अतएव उसे सब कुछ छोड़कर पतिकी ही पूजा-सेवा करनी चाहिये।

बेटी उमा, संसारमें पतिव्रता स्त्रियोंका आसन बड़ाही ऊंचा है। पतिव्रता अपने मातृ-कुल और पितृ-कुलका उद्धार करती है। जहां पतिव्रता रहती है, वहांकी पृथिवी पवित्र और पुण्यमयी हो जाती है। सूर्य्य, सोम और पवन अपनेको पवित्र और शुद्ध करने के लिये पतिव्रताओंको स्पर्श करते हैं। पतिव्रताओंके दर्शनसे पुण्य होता है। जिस गृहमें पतिव्रता स्त्री होती है; उस घरमें दुःख शोक नहीं आते। पतिव्रताका नियम कुछ कठोर अवश्य है। परन्तु

जो स्त्री अपने पतिके प्रति प्रेम करती है वह अनायास ही उन कठोर नियमोंका प्रतिपालन कर सकती है।

प्यारी बेटी! अबतक तू कन्या थी। अब भार्य्या हुई। इससे तेरे जीवनका महत्व बहुत बढ़ गया। क्योंकि भार्य्या ही गृहस्थ और गार्हस्थ सुखकी जड़ हैं। भार्य्याही राष्ट्रकी वृद्धि करती है। इससे वह और भी महत्वमयी समझी जाती है। देव कर्म्म, पितृकर्म्म, यज्ञ, अतिथि-सेवा और अन्यान्य धर्म्मानुष्ठान भार्य्याके बिना नहीं हो सकते। भार्य्या द्वारा ही दोनों लोकोंका सुख प्राप्त किया जा सकता है।

पति पत्नीका सम्बन्ध बड़ा ही मधुर, अद्भुत और पवित्र है। पति ॐकार है और स्त्री वेद श्रुति है, स्त्री क्षमा है तो पति तप है। पति फल है तो स्त्री सत्क्रिया है। बेटी, मुझे आशा है, कि तू सदैव पतिकी सेवाकर उन्हें सन्तुष्ट रखेगी। मैंने जो कुछ कहा है, उसे तू अच्छी तरह जानती है तथापि लोकाचारके खयालसे मैंने तुझे यह उपदेश दिया है।

मेनका पुत्रीको इस तरह उपदेश दे रही थी, इतनेमें जामाता शङ्कर साससे बिदा लेनेके लिये उसके निकट जाकर खड़े हो गये। सासने बड़े आदरसे जामाताको बैठाकर कहा—"आप तो स्वयं आशुतोष महादेव हैं। आपको कुछ सिखानेकी योग्यता मुझमें नहीं है। मेरी पार्वती बालिका है। यदि इससे कोई दोष हो जाये तो उसे क्षमा कीजियेगा। यह बाल्यकालसे ही आपके चरणोंकी

भक्ति करती है। दिन रात आपहीकी चिन्तामें लगी रहती है। इसपर सदैव दया-दृष्टि रखियेगा।"

इतना कहते कहते मेनकाकी आंखें आंसुओंसे भर गईं। गला रूँध गया। अधिक कुछ बोलनेकी शक्ति उसमें न रही।

शङ्करजीने सासको बहुत समझा बुझाकर शान्त किया। इसके बाद राजा हिमवान प्रचुर धन रत्न, हाथी, घोड़ा, मणिमाणिक्य और वस्त्राभूषण लाकर शिवजीको दहेजमें देने लगे। परन्तु परम त्यागी भोलानाथने उन्हें स्पर्श कर लौटा दिया।

इधर पार्वतीकी सखियोंने उसे नाना प्रकारके मूल्यवान वस्त्रालङ्कारों विभूषित कर दिया। उस समय पार्वतीकी स्वाभाविक सुन्दरता और भी अधिक दर्शनीय हो गई। उस समय माताने एक बार और कन्याको छातीसे लगाया। माता और पुत्री दोनों फूट फूटकर रोने लगीं। उस समय पार्वती और रानी मेनकाके मनकी जो अवस्था थी, उसका वर्णन इस लेखनी द्वारा होना असम्भव है। एक ओर पवित्र वात्सल्य और दूसरी ओर कठोर कर्त्तव्य। माताका कलेजा टूक टूक हुआ जाता था। उसी तरह पार्वती भी शोक-विह्वला हो गई। बाल्यकालसे लेकर आजतक जिस घरको वह अपना समझती थी, वही आज पराया हो गया। पार्वतीने बड़ी मुशकिलसे अपनेको संयत किया।

इसके बाद बारात बिदा हुई। राजा स्वयं कुछ दूरतक बारात के साथ साथ जाकर कन्या और दामादको बिदा कर आये।

(१३)

आदर्श गृहिणी.

आज बहुत दिनोंके बाद शङ्करकी उजड़ी हुई कुटी फिरसे आबाद हो गई। प्यारी पत्नीके अभावसे जो कैलास उन्हें मरूभूमिकी तरह निर्ज्जन और भयङ्कर मालूम होता था, वह पार्वतीके आनेसे सुहावना और मनोरम मालूम होने लगा। पूजा-पाठ और योग-जाप भूलकर शङ्कर पार्वतीको प्यार करने लगे। कभी प्यारी पत्नीके साथ बनोंकी शोभा देखते, कभी झरनोंकी बहार देखते, कभी चांदनी रातमें कैलासके ऊंचे शिखरपर बैठकर प्रियाके साथ प्रेमालाप करते, कभी फूलोंके गहने बनाकर पार्वतीको पहनाते और पहाड़ी नदियोंमें जाकर जलक्रीड़ा करते। शङ्करजीके ऐसा करने से धीरे धीरे पार्वतीका सङ्कोच दूर हो गया। वह भी पतिको प्रेम दृष्टिसे देखने लगी। क्रमशः शंकर और पार्वतीका पारस्परिक प्रेम खूब बढ़ गया। यहांतक कि एक क्षण अलग होना भी दोनों-को असह्य मालूम होने लगा। कविवर कालिदासके कथनानुसार उनका पारस्परिक व्यवहार सागर और सुरसरिकी भांति था। सुरसरि जिस तरह सागरमें पहुँच कर लीन हो जाती है और उसे छोड़कर लौटती नहीं, उसी तरह सागर भी तन्मय होकर उसे अपना लेता है। शिव और पार्वतीके पारस्परिक प्रेमका भी यही हाल था।

पार्वती महान ऐश्वर्य्यशाली राजाकी कन्या थी। पिताके घर उसने तरह तरहके सुखोंका उपभोग किया था। विविध प्रकारके सुन्दर वस्त्राभूषणोंसे अपने कमनीय अङ्गोंको सजाया था। परन्तु कैलास आकर वह इस बातको बिलकुल भूल गई। उसने सब मूल्यवान अलङ्कारोंको उतारकर अलग रख दिया। योगी पतिके साथ वह भी योगिनी बन गई। सभी सांसारिक सुखोंको भूलकर वह मन, वचन और कर्मसे पतिकी सेवा करने लगी।

सबसे पहले उसने शङ्करकी छोटी कुटीकी सजावट और शोभाकी ओर ध्यान दिया। मृगछाला, डमरू, भंगकी झोली और विल्व-पत्रकी टोकरी आदि वस्तुएं जो इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, उन्हें झाड़ पोंछकर यथास्थान रखा। इसके बाद उसने कुटीके बाहर और भीतरका कूड़ा कर्कट आदि साफ कर दिया, तथा उसके चारों ओर सुन्दर फूलोंके पौधे मंगा मंगाकर लगा दिये। पार्वतीकी सजावट और सफाईकी निपुणताके कारण थोड़े ही दिनोंमें शङ्करकी कुटी छोटी अमराईकी भांति सुन्दर और सुहावनी होने लगी।

भगवान शङ्करके दर्शनके लिये दूर दूरसे आये हुए ऋषिमुनि पार्वतीकी निपुणता और कुशलता देखकर प्रसन्न हो जाते थे। आश्रममें आये हुए अतिथियोंकी सेवा आदिका प्रबन्ध भी पार्वतीने सर्वोत्तम कर रखा था। अतिथियोंके भोजन और विश्रामके लिये उसने कुटीके निकट ही एक बृहत् अतिथिशाला स्थापित

करा दी थी। वहां अतिथिगण अपनी इच्छा और प्रसन्नतापूर्वक आकर ठहरते थे और महादेवके साथ देवी उमाका दर्शन प्राप्त कर कृतार्थ हो जाते थे।

नन्दी, भैरव तथा अन्यान्य भूत-प्रेत और पिशाच आदि ही शङ्करके परिजन स्वरूप थे। पार्वती इन शिवके गणोंको पुत्रवत् प्यार करती थी। उन्हें यदि किसी तरहका कोई कष्ट हो जाता, तो वह माताकी भांति उनका कष्ट दूर करनेकी चेष्टा किया करती थी। जननी पार्वतीको पाकर शिवके गण बड़े प्रसन्न रहने लगे। आपसमें झगड़ा फसाद कर वे उसका निबटेरा पार्वतीसे कराने आते। पार्वती हँसती हुई उनके झगड़ोंकी मीमांसा कर देती। उसका निबटेरा वादी और प्रतिवादी दोनों ही प्रसन्नतापूर्व्वक स्वीकार करते।

पतिदेव भोलानाथके उठनेके पहले ही पार्वती उठकर आश्रममें झाड़ू देकर साफ कर देती। उसके बाद उनके पूजाकी सामग्री आदि एकत्र कर, उन्हें स्नान कराती और जब वे पूजा करने लगते तो स्वयं स्नानकर भोजन आदिका प्रबन्ध करती। पति, अतिथि-अभ्यागतों तथा गणोंको भोजन करानेके बाद वह स्वयं भी कुछ खाती। पार्वती अपना कोई समय बेकार नहीं खोती थी। कभी आश्रमकी सफाई, कभी पेड़ पौधोंको सींचना, कभी पशुपक्षियोंको चारा देना, कभी पतिको भंग-बूँटी तैयार करना, भोजन बनाना, खिलाना आदि पार्वतीका नित्य कर्म था।

सुशीला पत्नी पाकर शङ्करजी भी बहुत प्रसन्न थे। वे तरह तरहकी कथायें सुनाकर तथा अन्यान्य प्रकारका प्रेमालापकर पार्वतीको सन्तुष्ट रखनेकी चेष्टा किया करते थे। पार्वतीकी अनन्य भक्ति और सेवाने उन्हें मुग्ध कर लिया था। उसके शरीरकी कोमलता और उसका कठोर परिश्रम देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य्य होता था। कभी कभी वे उसे कामधाम छोड़ कर आराम करनेकी आज्ञा देते तो पार्वती हँसती हुई कहती—"प्रभो, आपके चरणोंकी सेवाही इस दासीके जीवनका उद्देश्य है, उसे वह एक क्षणके लिये भी भूल नहीं सकती। मैं नारी हूं। ईश्वरने नारियोंके सिरपर कठोर कर्तव्य-भार लादा है, उसमें त्रुटि करना उचित नहीं। मेरे शरीरकी आप चिन्ता न करें। आपके सेवासम्बन्धी कामोंको करनेमें मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। उस समय मेरे शरीरमें दूना बल आजाता है और हृदयमें अदमनीय उत्साह भर जाता है।"

इस तरह पति-परायणा पार्वती अपने असीम गुणोंसे शिवको मुग्ध करती हुई, आनन्दपूर्व्वक जीवन बिताने लगी। कुछ दिनोंके बाद पार्वतीने दो पुत्र रत्न-प्रसव किये। एक गणेश और दूसरे कार्त्तिकेय। पार्वतीके दूसरे कुमार कार्त्तिकेयने ही बड़े होनेपर तारक असुरको मारकर संसारमें धर्मका साम्राज्य स्थापित किया था।

परिशिष्ट ।

आदर्श पतिव्रता पार्वतीके पवित्र जीवन-चरित्रकी मुख्य घटनाओंका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। अब हम उसके चरित्रकी विचित्रताके सम्बन्धमें दो चार बातें लिखकर यह प्रसंग समाप्त करेंगे। हिन्दुओंके पुराणोंमें सीता, सावित्री, दमयन्ती, और शैव्या आदि जितनी प्रातःस्मरणीया रमणियोंके चरित्र अङ्कित हैं, उनमें पार्वती अन्यतमा है। यों तो प्रायः सभी पौराणिक आदर्श रमणियोंका चरित्र अद्भुत और विचित्र है। परन्तु पार्वती उनसे निराली है। उसके चरित्रमें जो विचित्रता और विशिष्टता है वह और किसीके चरित्रमें नहीं पायी जाती। पार्वतीके चरित्रकी पहली विशिष्टता उसको बाल्यावस्थाका प्रति-प्रेम और अपने गुरु नारदके वचनों पर अटल विश्वास है। जिस समय नारदने उसे पत्नि-रूपसे शिवकी आराधना और सेवा करनेका उपदेश दिया था, उस समय वह बिल्कुल बालिका थी। सम्भव है, कि उस समय शिवके महत्वकी कथा उसने सुनी हो, परन्तु शिवको देखा न था। तथापि उसने नारदका उपदेश और पिताका आदेश शिरोधार्य्य कर शिवकी आराधना आरम्भ कर दी। उसकी आराधना केवल आराधना ही न थी, वरं उसमें अटूट पतिप्रेम और अपूर्व्व पति-भक्ति भरी थी। पति-

देवकी विधिवत् पूजा करनेके पश्चात् वह उनके चरणोंमें पुष्पाञ्जलि देने बैठती थी। उस समय वह अपना मन और प्राण सभी भगवान शङ्करके चरणोंमें अर्पण कर देती थी। उसकी तन्मयता और आन्तरिक भक्ति देखकर उसकी सहचरियोंको आश्चर्य्य होता था। उसी बाल्यावस्थामें वह अपनेको पति-सेवाकी पूर्ण अधिकारिणी समझती थी। इसीसे वह नन्दी और भैरव जैसे विकट सिपाहियोंकी परवाह न कर निर्भीकतासे समाधिमग्न शिवके निकट चली जाती थी। इतने दिनोंकी आराधनाका फल क्या हुआ? शङ्करने आंख खोलकर एक बार उसकी ओर देखा तक नहीं। यह भी नहीं पूछा, कि तू कौन है और किस लिये इतनी सेवा करती है? परन्तु पार्वती इससे हताश न हुई। क्षणभरके लिये भी उसका उत्साह भंग न हुआ। उसे दृढ़ विश्वास था, कि एक न एक दिन मैं शङ्करको अवश्य ही प्रसन्न कर लूंगी। इसीसे वह और भी उत्साह पूर्व्वक शिवकी आराधना करने लगी।

बहुत दिनोंके बाद उसकी आशाके फलवती होनेके लक्षण दीख पड़े। शंकरजीने आंखें खोलकर उसकी ओर देखा; परन्तु हाय! उसी समय कामदेवको देखकर उन्होंने रुद्रमूर्त्ति धारण कर ली और अन्तमें इस सारे फसादकी जड़ पार्वतीको समझ कर बिना कुछ कहे सुने उस स्थानसे चल दिये। उनके इस तरह चले जानेसे पार्वती दुःखित हुई, क्षुभित हुई परन्तु हताश

न हुई। उसने कठोर तप द्वारा शङ्करजीको प्राप्त करनेका सङ्कल्प कर लिया। सारा दुःख और क्षोभ भूल वह नवीन उत्साहसे घोर तप करनेके लिये प्रस्तुत हुई। पार्वतीके सङ्कल्पका संवाद पाकर समस्त रनिवासमें खलबली मच गई। उसकी माता मेनका घबरा गई। उसे विश्वास न था, कि यह छोटी सी कोमलाङ्गी बालिका तपस्याके कठोर नियमोंका पालन कर सकेगी। उसने समझा-बुझा कर, तरह तरहका प्रलोभन देकर कन्याको रोकनेकी चेष्टाकी। किन्तु पार्वती विचलित न हुई। इन्द्र, अग्नि वरुण और कुवेर, यहांतक, कि त्रिलोकनाथ विष्णुके ऐश्वर्य्य, सौन्दर्य्य और सुख्यातिका प्रलोभन भी उसे विचलित न कर सका। बालिकाने माताकी तमाम युक्तियोंका प्रतिवाद करते हुए दृढ़ता पूर्व्वक कहा :—"जिस हृदयको एक बार शिवको दे चुकी हूँ, उसे फिर किसी दूसरेको कैसे दूँगी!" माता चुप हो गई। पार्वती गौरी-शिखर पर जाकर घोर तप करने लगी। मनकी दृढ़ता पर उसे पूर्ण विश्वास था। वह अच्छी तरह समझ गई थी कि शरीरिक बलकी अपेक्षा मनोबल अधिक कामकी चीज है। पार्वतीका कठोर तप देखकर बड़े बड़े तपस्वी चकित हो गये। देवताओंने घबराकर ब्रह्माकी शरण ली। दूर दूरसे बड़े बड़े महर्षि किशोरीकी कठिन तपस्या देखनेके लिये गौरी-शिखर पर आने लगे। तीनों लोकमें बालिकाके कठोर व्रत की चर्चा चलने लगी। अन्तमें यह चर्चा परम वैरागी शिवके कानो

तक पहुंची। उन्हें भी पार्वतीके निकट जानेके लिये विवश होना पड़ा। वह ब्रह्मचारीका रूप धारण कर उसके पास गये और उसके प्रेमकी परीक्षा लेने लगे। बड़ी कठोर परीक्षा थी। उन्होंने एक ओर तो अपनी निन्दा आरम्भ की और दूसरी ओर अन्यान्य देवताओंके सुयश, गौरव और रूपकी प्रशंसा करने लगे। इस परीक्षामें पार्वती सगौरव उत्तीर्ण हुई। उसने पहले तो बड़ी शान्तिसे ब्रह्मचारीकी युक्तियोंका उत्तर दिया। परन्तु अन्तमें पतिकी निन्दा उसके लिये असह्य हो गई। इसलिये उसने उस स्थानको परित्याग करनेका विचार किया। पर्वतीका अपने प्रति अटल अनुराग देखकर भगवान शङ्कर विमुग्ध हो गये। वह अच्छी तरह समझ गये, कि इस बालिकाको उसके कठिन प्रणसे हटाना सहज नहीं है। यह परम पतिव्रता पति-प्रेमके महत्वको अच्छी तरह समझ गई है। यह जान गई है, कि अटल पति-भक्ति ही स्त्रियोंका सर्व प्रधान गुण है। उस समय प्रसन्न हो कर शिवने अपना ब्रह्मचारी वेष परित्याग किया और असली रूपमें प्रगट हो गये। पार्वतीकी मनोकामना पूरी हो गई। तथापि उसने कहा—"मैं अपने पिताके आधीन हूं। आप नियमानुसार उनसे मुझे मांगिये।"

इस बातसे साफ प्रगट होता है, कि पार्वतीको सामाजिक नीति तथा वंश-गौरवका भी पूर्ण ज्ञान था। इसीसे उसने इतना घोर तप करलेने पर भी पिताकी आज्ञा के बिना शङ्करको वरण

करना अनुचित समझा।

विवाहका समय उपस्थित हुआ। शङ्करजी दूल्हा बन कर पार्वतीको ब्याहने आये। उनका विकराल वेश देखकर मेनका डर गई। उसने ऐसे पागलको लड़की देना अस्वीकार कर दिया। लोगोंने मेनकाको बहुत समझाया। परन्तु कोई फल न हुआ। अन्तमें पार्वतीने स्वयं माताको समझाया। पार्वती लज्जाशीला थी। परन्तु यह समय चुप रह जानेका न था। इसीसे उसने साफ शब्दोंमें मातासे कहा—"विधाताने मेरे भाग्यमें जो कुछ बदा है, वह अवश्य भोगना पड़ेगा। अतएव विवाहमें बाधा देकर तुम वृथा कलङ्क मत लो।"

विवाहके बाद पार्वती पतिके गृह गई। राजमहल छोड़ कर उसने शङ्करकी छोटीसी कुटीमें आश्रय लिया। कठोर तपस्या तथा आत्मसंमय द्वारा उसने अपनेको सब प्रकारका कष्ट सहन करनेके योग्य बना लिया था। महलमें रहकर भी उसने अपनेको कुटीके उपयुक्त बनाया था। इसीसे वह कैलाश जाकर परम सुखसे रहने लगी।

योगासन शिखर पर सखियोंके साथ जाकर शिवकी आराधना करना और विफल मनोरथ हो कर पुनः घोर तपमें लग जाना, पार्वतीकी पति-भक्ति, दृढ़ता, साहस और कष्ट-सहिष्णुताका प्रत्यक्ष प्रमाण है। समस्त भोगबिलास परित्यागकर अहर्निश घोर तप करते रहने पर भी पार्वतीने अपनी कर्त्तव्य परायणतापर

खूब ध्यान रखा। अतिथि अभ्यागतोंकी सेवा, आश्रमके पशु-पक्षियोंको आहार देना और नये नये पेड़-पौधे रोप कर आश्रमकी रमणीकता बढ़ाते रहनेकी चेष्टा, प्रमाणित करती है, कि पार्वतीके हृदयमें दया और प्रेमका कितना समावेश था।

स्त्रियोंके सब गुणोंमें लज्जा एक प्रधान गुण है। क्योंकि शास्त्रकारोंने लज्जाको सतीत्वका एक प्रधान अङ्ग माना है। स्त्रियोंके स्वाभाविक संकोचभावको ही लज्जा कहते हैं। लज्जा स्त्रियोंके सतीत्वकी रक्षा करती है। हमारे देशकी अधिकांश स्त्रियां लज्जाशीलताका वास्तविक अर्थ न समझ कर केवल लम्बा घूँघट काढ़नेमें ही लज्जाशीलता समझती हैं। कभी कभी वे लज्जा और संकोच करनेमें अपने कर्त्तव्यसे भी विमुख हो जाती हैं। यह सर्वथा अनुचित है। पार्वतीमें भी लज्जाशीलताकी कमी न थी। परन्तु कर्त्तव्यपालनका समय आने पर वह उससे काम नहीं लेती थी। इसीसे उसने, जब कभी आवश्यकता पड़ी तब साफ साफ कह दिया कि मैं शङ्करको अपना तनमन दे चुकी है; उन्हें प्राप्त करनेकी चेष्टा करना मेरा प्रधान कर्त्तव्य है। मैं अपने उस कर्त्तव्यसे कदापि विमुख नहीं हो सकती।

अन्तमें पार्वतीके गृहिणी-कर्त्तव्य पालनका समय आता है। यहां भी पार्वतीने कमाल कर दिखाया है। पतिकी सेवा, अतिथि-अभ्यागतोंकी सेवा, भूत-बैतालोंको प्रसन्न रखनेकी चेष्टा और आश्रमकी सजावट और शृङ्खलाका प्रयत्न आदि स्पष्टही प्रमाणित

करते हैं, कि पार्वती एक निपुण गृहिणी थी।

पार्वतीके चरित्रकी पर्य्यालोचना करनेसे मालूम होता है, कि एक आदर्श रमणीमें जिन गुणोंकी आवश्यकता होती है, वे सभी पार्वतीमें मौजूद थे। इन्हीं सद्गुणोंके कारण आदर्श नारियोंमें पार्वती अग्रगण्या समझी जाती है और इसीसे गोस्वामी तुलसीदासजीने लिखा है :—

पतिदेवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिँ कहि सहस सारदा सेख।



विचित्र-समाज-सेवक।

(लेखक-पण्डित चन्द्रशेखर पाठक)

सभी परिश्रम करते हैं, पर पथ है अबतक मिला नहीं।
सेवक बने अनेक कमल भारतका अबतक खिला नहीं॥
जन-समाजमें सच्चा टाँका, किसीसे अबतक सिला नहीं।
पढ़ देखो यह पुस्तक, क्यों पत्ता भी अबतक हिला नहीं॥

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि हिन्दी बङ्गवासी, ब्राह्मण-सर्वस्व आदि पत्रोंके विद्वान सम्पादकोंने सत्य ही मुक्त कण्ठसे कहा है, कि हिन्दी-संसारमें यह एक अनोखा, अपूर्व और अद्भुत उपन्यास है; क्योंकि इसमें दिखाया गया है, कि शङ्करनाथ नामक सज्जन भारतवर्षका प्राचीन ढङ्गसे सुधार करना चाहते हैं। दूसरे सी० लाल इसे ठीक विलायत बना देना चाहते हैं। इसमें शङ्करनाथ का समाज-सेवाके लिये प्रस्तुत होकर नाना प्रकारके कष्ट भोगना, बद्रीनाथकी चालें, अन्नपूर्णाका गायब हो जाना, समाजका विपक्ष में खड़े हो जाना, पुलिसकी अद्भुत कार्रवाई, महन्तका अत्याचार, समस्त साधुओंका परिवर्त्तन, विलायती चालपर चलनेवाली स्त्रियोंका विचित्र चरित्र, विलायती ढङ्गसे स्त्रियोंकी शिक्षाका भीषण परिणाम, मिसेस कर्टिस नाम्नी एक विदेशी रमणीका अद्भुत चरित्र, पादड़ियोंकी लीला आदि इतनी आश्चर्य्यप्रद, उपदेश-प्रद तथा नीति-प्रद घटनायें लिखी हैं, कि पुस्तक हाथमें लेकर छोड़ने का जी नहीं चाहता। हम ज़ोर देकर कह सकते हैं, कि इस पुस्तकको खरीदकर आपको कभी पछताना न पड़ेगा। कई चित्रोंसे सुशोभित मनोहर रेशमी जिल्द सहितका मूल्य ३)

पार्वती।

(लेखक—श्रीयुत नवजादिकलाल श्रीवास्तव)

देवादिदेव महादेवकी जन्म-सङ्गिनी हिम-नन्दिनी सती पार्वतीका चरित्र देवी-समाजमें जैसा अद्भुत, अतुलनीय तथा अचिन्तनीय है, वैसा किसीका भी नहीं। वास्तवमें पार्वतीमें जो पति-भक्ति भरी है, जो प्रातिव्रत भरा है, पति-सेवाका जो उत्कट उदाहरण है, वह जगतके लिये आदर्श है, जनताके लिये अतुलनीय है और स्त्री-समाजके लिये सदा सर्वदा पालनीय है। पार्वतीने पति-प्राप्तिके लिये जो हठ दिखाया है, जिस तरह अपने सब राजसी ठाठ-बाठ और सुख-समृद्धिको त्याग, छोटी अवस्थामें ही कठोर तपस्या की है, जिस तरह अनेकानेक वर्ष कठोरसे कठोरतर तपस्या कर बिता दिये हैं और जिस तरह अपना सम्पूर्ण प्रेम पति-चरणोंमें अर्पण कर दिया है, उसीसे वह देवी-समाजमें सर्व शिरोमणि बन गई है। इस पुस्तकमें उसी देवी-रमणीका सम्पूर्ण-जीवन-चरित्र है। इसमें दक्षयज्ञमें सतीका देह-त्याग, दक्ष-यज्ञ-विध्वंस, पार्वतीका जन्मवृत्तान्त, तपस्या, नारदका उपदेश, इन्द्रकी सभा, कामदेव-दहन, शिवकी अद्भुत बारात, रतिका वरदान प्राप्त करना, एक ब्रह्मचारीका सतीको उपदेश देना, सब देवताओंका शिवका विवाह-कार्य सम्पादन करना आदि ऐसी ऐसी घटनायें लिखी हैं, कि पुस्तक पढ़ते पढ़ते तन्मय हो जाना पड़ता है। हम जोर देकर कह सकते हैं, कि यह पुस्तक प्रत्येक बालिका विद्यालयमें पढ़ानी चाहिये, प्रत्येक बालिकाको उपहारमें देनी चाहिये और प्रत्येक स्त्रीके कर-कमलोंमें वर्त्तमान रहनी चाहिये। साथ ही पुस्तक इतनी सुन्दर छपी है, कि एक खिलौना सी मालूम होती है। अनेकानेक बहुरँगे तथा इकरँगे चित्रोंसे सुशोभित पुण्य कथामय अमूल्य पुस्तकका सर्वसाधारणकी सुविधाके लिये मूल्य २) रंगीन जिल्द २।) रेशमी जिल्द २॥)

पाप-परिणाम ।

(ले० श्रीयुत जमुनादास मेहरा)

यह वही प्रसिद्ध नाटक है, जिसे कलकत्तेकी प्रसिद्ध हिन्दी-नाट्य-समिति, ऐल्फ्रेड थियेटरके रंगमंचपर दो वार खेलकर दर्शकों-का मनमुग्ध करके साथही साथ अनेकानेक पदक प्राप्त कर चुकी है। यह अत्युत्तम नवीन स्वतन्त्र सामाजिक नाटक, नव रसोंका आगार, घटनाओंका भण्डार, तथा काव्यके झङ्कारसे परिपूर्ण है। दुराचारी मनुष्यका भीषण परिणाम, सच्चे तथा कपटी मित्रका प्रभेद, वेश्याओंकी अनूठी चालें, सतीका अद्भुतआत्मबल, व्यभिचारिणीका भयानक पतन, तथा धर्म्मात्मा पुरुष, स्वामी-भक्त दास आदि अनेकानेक उपदेशप्रद मनोरञ्जक विषयोंसे भरा हुआ यह मनोहर नाटक पढ़कर तबियत फड़क उठती है। खड़ी बोलीमें इसकी अनोखी शायरी आपका मन मुग्ध कर देगी। यदि आप अपनी सन्तानोंको उत्तम विचारोंका अवतार बनाना चाहते हैं और यदि आप उनको दुर्व्यसनोंके भीषण दुष्परिणामका जीता जागता चित्र दिखाना चाहते हैं, तो इसे शीघ्र मंगवाइये। मूल्य केवल १) रु० सजिल्द १॥)

ध्रुव-चरित्र ।

बालक ध्रुवने किस तरह बालकपनमें ही अपनी माताका कष्ट देखकर जंगलकी यात्राकी और कैसे ईश्वर-दर्शन पानेके साथ ही साथ राज्य प्राप्त किया आदि बड़ी मनोहर कथा है। मूल्य ।≈)

सती-चिन्ता

(ले० श्रीयुत जमुनादास मेहरा)

जिस परम पतिव्रता साध्वी सुरूपा सती चिन्ताने अपने पातिव्रत बलसे राजा श्रीवत्सकी बड़ी बड़ी कठिनाइयोंमें भी सेवा की थी, जिसने सब कुछ चले जाने और अनेकानेक कष्ट भोग करनेपर भी अपने पातिव्रत धर्ममें अणुमात्र भी अन्तर न आने दिया था, यह उसी सुशीला, सच्चरित्रा और पतिपदरता रमणीका जीवन-वृत्तान्त लेकर लिखा हुआ अत्यन्त मनोरञ्जक, उपदेशप्रद, कौतूहुलवर्द्धक और शिक्षाप्रद पौराणिक नाटक है। शनिदेवका लक्ष्मीसे अपनी अपनी शक्तिको लेकर झगड़ना, राजा श्रीवत्सका न्यायासनपर विराजकर लक्ष्मीकी श्रेष्ठता स्वीकार करना, शनिदेव का कुपित होकर उनका राज्य, सुख, सम्पदा सभी नष्ट कर देना, उनको बन बन भटकाना, नाना प्रकारकी विपत्तियोंमें डालना, एक सौदागरका चिन्ताको जबर्दस्ती नावपर ले भागना, श्रीवत्सको नदीमें फेंक देना, फिर राजा श्रीवत्सका दुःख झेलते हुए एक दूसरे राज्यकी राजकुमारी भद्रा नामकी एक रमणीसे विवाह करना आदि ऐसी ऐसी घटनाएँ, काव्य तथा शायरियोंसे पूर्ण यह नाटक है कि पुस्तक हाथमें लेकर छोड़नेकी इच्छा नहीं होती। कई चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य १) रंगीन जिल्द १।) रेशमी जिल्द १॥)

आदर्श-लीला।

(लेखक—पं० चन्द्रशेखर पाठक)

भारतवर्ष आज किसी विषयमें अपना मस्तक उठा सकता है, तो स्त्रियोंके आदर्श-चरित्रके सम्बन्धमें। अतः इस पुस्तकका प्रधान विषय यही है, कि स्त्रियोंका चरित्र कैसा होना चाहिये। किस चरित्रकी स्त्रियाँ आदर्श कहला सकती हैं, विधवा-विवाहका कैसा फल होता है, इस प्रथाके प्रचलित होनेसे स्त्री तथा पुरुषोंके विचार, कार्य और व्यवहारमें कितना अन्तर उत्पन्न हो सकता है। आदर्श पुरुष कैसे होते हैं आदि कितने ही मनोरंजक, उपदेशप्रद तथा हृदय-ग्राही विषयोंसे यह उपन्यास विभूषित हो रहा है। लीलावतीका आदर्श चरित्र, विधवा जगदम्बापर आसक्त होकर एक नव-युवकका अनेकानेक छल-बल-कौशलसे उसे वशमें लानेकी चेष्टा करना, परन्तु सती जगदम्बाका हर जगह अपने चरित्रकी रक्षा करना, रघुनन्दनपर एक रमणीका आसक्त होना, उसे नाना प्रकारसे पथ-भ्रष्ट करनेकी चेष्टा करना, कितने ही प्रलोभनोंमें डालना, जगदम्बाका अपूर्व पाति-व्रत पालन, अन्तमें अपने धर्म्मके बलसे गायब हुए पतिको फिर प्राप्त करना, कमलेश्वरका जगदम्बाके उपदेश और चरित्रसे सुराहपर आना आदि अनेकानेक विषयोंसे यह उपन्यास भरा है। पुस्तक बड़ी ही मनोरंजक और उपदेशप्रद हुई है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका सबको एक बार इसे अवश्य अवश्य पढ़ना चाहिये। हमारा पाठकोंसे अनुरोध है, कि यदि आप अपनी गृहस्थीको सुखमयी और स्वर्ण संसार बनाया चाहते हैं, तो इसे अवश्य अवश्य पढ़िये। पुस्तक कई चित्रोंसे सुशोभित है। मूल्य [illegible] १) सजिल्द २)

कृष्ण—सुदामा

(लेखक—जमुनादास मेहरा ।)

सुखी सुख-साधनाका सर्वदा सम्मान करते हैं ।
अनाड़ी अपने ही आनन्दका अभिमान करते हैं ॥

यह नाटक—भगवान श्रीकृष्णचन्द्रके परम भक्त सुदामा-जीके पवित्र जीवन वृतान्तका जीता जागता चित्र है । इसमें भक्ति तथा दरिद्रका विचार-वैचित्र है । श्रीकृष्ण तथा सुदामाका बनमें लकड़ी काटने जाना, भयानक आँधी पानीमें श्रीकृष्णका अग्नि उत्पन्न करना, सुदामाजीका श्रीकृष्णके भागका भोजन छिपा-कर दुर्दैवको अपना संगी बनाना, दरिद्रका सुदामाजीको विपत्तिके गहरे कूपमें गिराना, भक्तिका भक्तको द्वारिका पुरीमें पहुँचाना और दरिद्रपर विजय पाना, श्रीकृष्णजीका सुदामा पुरी बसाना, श्रीकृष्ण तथा सुदामाकी अनोखी ठिठोली आदिके दृश्य आपको प्रत्यक्ष ही दिखाद़ेंगे कि :—

विपतमें विवशके, वैरी विरोधी व्यंग बोते हैं ।
भजन भगवानसे, भक्तोंके भव भय भंग होते हैं ॥

यह नाटक—हास्य रसके कई दृश्योंसे परिपूर्ण है । इसमें सेठ सूमदासके दो पुत्रोंका पिताकी पूंजीपर हाथ फेरनेमें दो साधुओंकी सहायतासे विजय पाना, सूमदासका अपनी करतूतपर पछताना और रसायन बनानेके लालचमें पड़कर धनको हवा लगाना, इत्यादि दृश्य हंसा हंसाकर आपका पेट फुला देंगे, और साथ ही यह शिक्षा दिला देंगे कि :—

धनी धन, धाम, धन्धेमें धुरन्धर ध्यान धरते हैं !
दरिद्री देख दुर्बुद्धीन दमड़ी दान करते हैं ॥

बढ़िया एण्टिक कागज़पर सजधजसे सजी हुई कई रंगबिरंगे चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य केवल १) रेशमी ज़िल्द १॥)

विश्वामित्र।

(ले० श्रीयुत जमुनादास मेहरा)

हमारी नाट्य ग्रन्थमालाका यह पञ्चम ग्रन्थ आदर्शकी खान है, चरित्र-गठनका महामन्त्र है और भारतकी पूर्व अवस्थाको सम्मुख ला रखनेवाला एक दुर्लभ तंत्र है। कान्यकुब्जाधिप महाराज विश्वामित्रकी जीवनी कितने ही उपदेशोंसे परिपूर्ण है, उनका आखेटके लिये निकलकर वशिष्ठके आश्रममें उपस्थित होना, कामधेनुके सम्बन्धमें वशिष्ठसे विवाद होना, कामधेनुको प्राप्त करनेके लिये विश्वामित्रका अनेकानेक छल-बल-कौशलका प्रयोग करना, अन्तमें सबसे हारकर तपस्या करना, उसी समय इन्द्रकी आज्ञासे मेनका नामकी अप्सराका आना, उनका तप भङ्ग करना, शकुन्तलाका जन्म, अयोध्याके राजा त्रिशंकुकी अद्भुत कथा, उसका चाण्डाल बन जाना, वशिष्ठके सौ पुत्रोंको मार डालना, फिर विश्वामित्रका उसे सदेह स्वर्ग भेजनेकी चेष्टा करना, स्वर्गमें उसके न जा सकनेके कारण नये स्वर्गका निर्माण, अन्तमें विश्वामित्रका तपोबलसे ब्रह्मर्षिका पद प्राप्त करना आदि कितनी ही उपदेशप्रद घटनाओं, खड़ी बोलीकी अनोखी शायरियों तथा अनेकानेक ढङ्गकी कविताओं और सुरम्य दर्शनीय चित्रोंसे यह पुस्तक भी सुशोभित हो रही है। हमारा अनुरोध है, कि यदि आपको पुस्तकें पढ़नेका कुछ भी शौक हो तो एक बार इसे अवश्य पढ़ें। कई चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य १)

महात्मा विदुर।

सचित्र जीवन चरित्र।

(लेखक—पं० नरोत्तम व्यास)

जिस माननीय परम नीतिज्ञ बुद्धिमानकी शुभ्र-नीतिसे महाभारत जैसा वृहत् ग्रन्थ उज्वल हो रहा है, जिनके चरित्रमें पद-पदपर नीतिज्ञता प्रकट होती है, यह उन्हीं नीतिवान, विद्वान, महात्मा विदुर महाराजका बड़ी खोज और गवेषणासे लिखा हुआ विशद जीवन चरित्र है। इसमें उनके जीवनकी समस्त घटनायें तो आही गई हैं, साथ ही उनकी समस्त नीतियाँ भी इसमें लिख दी गई हैं। जिन्हें पढ़कर मूर्खसे मूर्ख मनुष्य भी विद्वान, बुद्धिमान, चतुर और नीतिज्ञ बनकर संसारके सभी कार्य बड़ी सफलता और नीतिज्ञतासे सम्पादन कर सकता है। यह पुस्तक इस योग्य बनाई गई है, कि सब पाठशालाओंमें पढ़ाई जाये, लड़कोंको इनाममें दी जाय और घर घरमें इसका प्रचार और पठन-पाठन हो। हम यह मुक्त कण्ठसे कह सकते हैं, कि इसमें सोना और सुगन्ध दोनों ही सम्मिलित है। पुस्तक इतनी रोचक भाषामें लिखी गई है, कि उपन्यासोंसा आनन्द आता है और साथ ही बड़ा भारी उपकार इससे यह होता है, कि विदुरजीकी सभी नीतियाँ समझमें आ जाती हैं और उन्हें पढ़कर मनुष्य एक असूल्य उपदेश ग्रहण कर सकता है। पुस्तक छप रही है।

वारांगना रहस्य।

इस संसारमें वेश्याएँ क्या करती हैं; किस तरह पर पुरुषोंको अपने जालमें फसाती हैं; पर पुरुषोंको फँसानेकी उन्हें कैसी शिक्षा मिलती है, महफ़िलसे वे किस तरह प्रेमियोंको फसा लाती हैं, दो प्रेमी एक साथ रहनेपर कैसे काम करती हैं, मेले तमाशे आदिमें वे कैसा जाल फेकती हैं, उनको आरम्भसे कैसी तालीम दी जाती है, वृद्धावस्था हो जानेपर वे किस तरह घर घरमें घुसकर कुल-वधुओंको नष्ट करती हैं, साथ ही सती सच्चरित्रा स्त्रीके कार्य, सभी बातें स्पष्ट तथा इतनी खुलासा लिखी गई हैं, कि स्त्री सम्बन्धी कोई भी बात समझनेमें बाकी नहीं रह जाती। ऐसी उपदेशमयी पुस्तक संसारमें दूसरी नहीं है। बहुत ही सुन्दर छपी पुस्तकका मूल्य ६ भागोंका ४≈) सजिल्द ४॥≈)

महाराणा प्रतापसिंह

मेवाड़के जिस पुण्यश्लोक राणाने मुगल सम्राट अकबर जैसे परम-प्रतापीका २५ वर्षोंतक बड़े पराक्रमसे सामनाकर अपने देशकी स्वतन्त्रताकी रक्षाकी थी। यह उन्हींका कई चित्रोंसे सुशोभित पूरा पूरा जीवन चरित्र है। चित्तौड़की अवस्था, राणाका त्याग, कमलमीरका युद्ध, प्रतापका बन बन भटकना, भामाशाहकी राजभक्ति आदि घटनायें जानना हो तो इसे पढ़िये। कई चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य सजिल्द का १॥) बेजिल्द १।)

पृथ्वीराज

महाराज पृथ्वीराजका शहाबुद्दीनसे अनेकानेक युद्ध, भोलाराय भीमदेवकी कूटनीति, मेवाड़पर आक्रमण, सारुण्डाको भीषण लड़ाई, आबू पर्वतका युद्ध, दिल्लीके राजा अनङ्गपालका अद्भुत चरित्र, माधव भाटका छल, पृथाकुमारी तथा समरसिंहका विलक्षण प्रेम, शशिवृता, इच्छनकुमारीका प्रेम, जयचन्द्का हठ, राजसुय यज्ञ, यज्ञके बाद ही संयोगिताका गायब हो जाना; कालिञ्जरपर चढ़ाई, थानेश्वरमें हिन्दू मुसलमानोंका भयानक युद्ध, संयोगिताका प्रेम, रानियोंका पातिव्रत आदि इतनी घटनायें सप्रमाण लिखी गई हैं, कि पढ़कर तबीयत फड़क उठती है, यह पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको अवश्य पढ़नी चाहिये। कई चित्रोंसे सुशोभित सुन्दर पुस्तकका मूल्य २।) सजिल्द २॥)

नैपोलियन बोनापार्ट

कार्सिकाके जिस वीरने अपने प्रबल अध्यवसायसे एक वकील पुत्र होकर भी फ्रांस-जैसे देशका विराट सिंहासन प्राप्त किया था, यह उसी वीर शिरोमणिका पूरा पूरा जीवन-चरित्र है। इसमें इटली आस्ट्रियापर चढ़ाई, मिश्रपर आक्रमण, जेना और इलाऊका महासमर, फेडलेण्डका भीषण युद्ध, टिल्सिटकी सन्धि, जोसेफाइनका प्रेम, वाटर्लूका जगद्विख्यात भीषण युद्ध, नेपोलियनका राजसिंहसन प्राप्त करना आदि समस्त घटनायें लिखी हैं। ११ चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका दाम २।)

अभिमन्यु चरित्र

महाभारतके जिस छोटेसे वीर बालकने अपने पराक्रमसे बड़े बड़े महारथियोंके छक्के छुड़ा दिये थे। द्रोणाचार्य्य जैसे शस्त्र निपुणने भी जिसकी युद्ध-कलाकी प्रशंसाकी थी, जिसने उनका रचा व्यूह भी भङ्गकर दिया था; यह उसी वीर केशरीका जीवन चरित्र है। मूल्य ।)

उद्भ्रान्त प्रेम

यह वही ग्रन्थ है जिसको अपनी स्त्रीके वियोगमें लिखकर लेखक अमर हो गया है। इसमें प्रेमकी महिमा प्रेमका, रहस्य, प्रेमकी लीला, प्रेमके साथ ही साथ वैराग्यका उत्पन्न हो जाना ; श्मशानमें, पूर्णिमाका चन्द्र, गंगातट, प्राणोंका व्यवसाय, नवबसन्त, शयन-मन्दिर, आदि ऐसे ऐसे विषय दिये हैं, ऐसी सरल भाषामें प्रेम रहस्य समझाया है, कि पुस्तक पढ़कर लेखकका हाथ चूम लेनेकी इच्छा होती। मूल्य ॥।)

नन्दन-भवन

सावित्री नामकी एक परमा सुन्दरी कन्याका बल्लभदासके प्रेममें मुग्ध होना, दुष्टोंका उसको अपने जालमें फसानेकी चेष्टा करना, चन्द्रभागा नामकी एक दूसरी रमणीका भी बल्लभदासपर आसक्त होना; अभिमंत्रित यंत्रका फल, प्रेमके कारण एक मनुष्य-की हत्या होना, एक निरपराधीका फसना, वकीलोंकी चालें आदि ऐसी ऐसी घटनायें लिखी हैं, कि पढ़कर मुग्ध हो जाना पड़ता है। मूल्य ॥＞)

भीमसिंह ।

भीमसिंह ऐतिहासिक उपन्यासोंका राजा है। अलाउद्दीनकी चित्तौड़पर बारह चढ़ाइयोंका पूरा पूरा हाल, राणा लक्ष्मणसिंहका बारह राजकुमारोंके साथ प्राणाहुति देना, अलाउद्दीनके वज़ीरकी कन्या नसीबनका अद्भुत रहस्य, बारह वर्षके बालक बादल तथा ६० वर्षके बृद्ध गोराका अद्भुत युद्ध-कौशल, राणा भीमसिंहका विलक्षण त्याग, महाराणी पद्मिनीका हजारों राजपूत बालाओंके साथ सती होना आदि ऐसी ऐसी घटनायें लिखी हैं, कि पाठक दङ्ग हो जायँगे। मूल्य १॥) सजिल्द २)

सिकन्दर शाह ।

जिस वीरने अपनी प्रबल प्रतिभासे थोड़े ही समयमें थोड़ीसी सेनाके साथ ग्रीससे लेकर सुदूर भारतके पंजाब प्रदेश तक अपना अधिकार फैला दिया था; यह उसी प्रतिभाशाली युद्ध कुशल वीर सिकन्दरका पूरा पूरा जीवन चरित्र है। इसमें ग्रीस देशकी शिक्षा, टायरीका युद्ध, फारिसके राजा दरायुससे भीषण समर, थेबका दमन, डार्डेनेलीसपर चढ़ाई, केरियाकी भीषण लड़ाई, दाराका पतन, अनुपम सुन्दरी दाराकी कन्याका सिकन्दरसे विवाह, सिकन्दरका सैकड़ों स्त्रियोंके बीच रहकर अधःपतन, आम्भिका सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार करना, आदि ऐसी ऐसी घटनायें लिखी हैं, कि पढ़ते पढ़ते मुग्ध हो जाना पड़ता है। बड़ी ही सुन्दर सुन्दर कई तसीरें भी दी गई हैं। मूल्य १॥≈) सजिल्द २≈)

सत्यनिबन्धावली—यदि स्वामी सत्यदेवजीके विचारोंका रसास्वादन करना हो तो इसे पढ़िये। मूल्य ॥=)

कृषक कर्त्तव्य—किसानोंके लिये अभी तक ऐसी पुस्तक एक भी नहीं छपी है। संस्थाओंके अधिकारियोंको इसे खरीदकर बँटवाना चाहिये। इसमें खेती आदिकी शिक्षा दी गई है। मूल्य भी खूब सस्ता रहेगा। छप रही है। १५० पृष्ठका दाम लगभग ॥) रहेगा।

पंजाबका हत्याकाण्ड

पञ्जाबमें होनेवाले भीषण अत्याचारोंका जीता जागता चित्र यदि देखना चाहते हैं, यदि जानना चाहते हैं, कि मार्शल लाकी अमलदारीमें निःशस्त्र भारतवासियों पर कैसा हृदय-विदारक अत्याचार किया गया है, यदि पंजाबी भाइयोंकी दुःख भरी, दर्द भरी और कलेजेको मसोसनेवाली घटनायें सुनना चाहते हैं और जेनरल डायरके क्रूर कर्मकी काली कथा कर्णगोचर करना चाहते हैं, साथही यदि जानना चाहते हैं, कि हमारी पंजाबी माताएँ और बहनोंकी किस तरह बेइज़्ज़ती हुई है, तो इसे पढ़ कर अपना कर्त्तव्य विचारिये। १४ चित्रोंसे सुशोभित ५५० से भी अधिक पृष्ठोंकी पुस्तकका मूल्य १॥) राज संस्करण २॥)

प्रेमका फल—यह भी प्रेम-रसका अद्भुत उपन्यास है। जोहरा नामकी एक रमणीकी अद्भुत प्रेम-कथा इसमें लिखी हुई है। मूल्य ॥)

राज्यसम्बन्धी सिद्धान्त।

पुस्तक क्या है, राज्य शासनका एक परिपूर्ण नकशा और राजनीतिका सर्वाङ्गीन ज्ञान सम्मिलित बृहत् कोष है। किसी देशका किस ढंगसे शासन होना चाहिये, राजा और प्रजामें कैसा संबन्ध रहना चाहिये, आत्मबल, शरीर बल, तथा सैन्यबल आदि में क्या अन्तर है। आदि शासन सम्बन्धी सभी विषय इसमें इतने अच्छे ढंगसे दिये गये हैं, कि राज्य शासनकी कोई भी बात जाननेसे बाकी नहीं रह जायगी। मूल्य रेशमी जिल्द सहित पुस्तकका १॥)

भारतकी साम्पत्तिक अवस्था।

अर्थ शास्त्रकी ऐसी उत्तम पुस्तक इससे अच्छी दूसरी नहीं छपी। इसमें भारतके समस्त वाणिज्यके पदार्थ, रंग, कपड़ा, मसाला, कौन चीज़ कहाँ उत्पन्न होती है, कितनी विदेश जाती है, किस चीज़का कहां व्यवहार हो सकता है, भारतमें कौनसा व्यापार लाभदायक हो सकता है—आदि सब बातें लिखी हैं। इतनी उपयोगिनी पुस्तक कोई दूसरी नहीं छपी। मूल्य ३॥)

प्रेम-पूर्णिमा—हिन्दीके नामी लेखक प्रेमचन्द्रजीकी लिखी पन्द्रह बड़ी ही विचित्र, अनोखी तथा उपदेश पूर्ण कहानियोंका मनोहर संग्रह। मूल्य २)

भयानक बदला—यह बड़ा ही घटना पूर्ण, दिलचस्प, और तबियतको खींचनेवाला जासूसी उपन्यास है। मूल्य ॥।)

खाद—यह पुस्तक उनके लिये बड़ी ही उपयोगिनी है, जो खेतीसे सम्बन्ध रखते हैं। इसमें खाद सम्बन्धी सभी बातें और नुस्खे लिखे हैं। मूल्य १)

रामबादशाहके छः हुक्मनामे—यह बड़ी ही उपदेश पूर्ण पुस्तक है। इसमें स्वामी रामतीर्थके छः बड़े ही उपदेशप्रद सामयिक और चरित्रोन्नतकर व्याख्यान दिये गये हैं। मूल्य १।)

शीशमहल—छः भागोंमें यह ऐयारीका बड़ा ही विचित्र और मनोहर उपन्यास है। एक बार पुस्तक हाथमें लेने पर फिर आप इसे कदापि छोड़ नहीं सकते। मूल्य ६ भागोंका ३॥)

लक्ष्मी देवी---स्त्री शिक्षाको लेकर लिखा हुआ पर्दा प्रथा पर बड़ा ही मजेदार उपन्यास। मूल्य ।≈)

गान्धी सिद्धान्त---महात्माजीकी लिखी पुस्तकका हिन्दी अनुबाद। इसमें स्वराज्य सम्बन्धी सभी विषय अच्छी तरह समझा दिये गये हैं। ॥≈)

काषायवसना सुन्दरी—बड़ा ही मजेदार उपदेश पूर्ण जासूसी उपन्यास है। एक स्त्रीकी चालाकी, होशियारी, साहस, दलबन्दी आदि देखकर आप चकित रह जायँगे। मूल्य १)

अङ्गरेजी शिक्षक---यदि आप बिना उस्तादके अँगरेजी सीखना चाहते हैं और थोड़े ही परिश्रममें अँगरेज़ीका ज्ञान प्राप्त कर लिया चाहते हैं, तो इसे अवश्य पढ़िये। इस सम्बन्धमें ऐसी उपयोगिनी पुस्तक दूसरी नहीं छपी। मूल्य ॥)

आपकी सुविधाकी बात.

यदि आप सस्ते दामोंमें हमरा प्रकाशित उत्तमोत्तम, उपदेश-प्रद, पुण्य कथामय, सुन्दर सुन्दर अनेकानेक चित्रोंसे सुशोभित, घर घरमें रहने योग्य पुस्तकें खरीद कर अपने गृह और पुस्तकालयकी शोभा बढ़ाना चाहते तथा अपने बालक-बालिकाओंको सुशिक्षित बनाना चाहते हैं, तो हमारे यहाँसे प्रकाशित होने वाली—

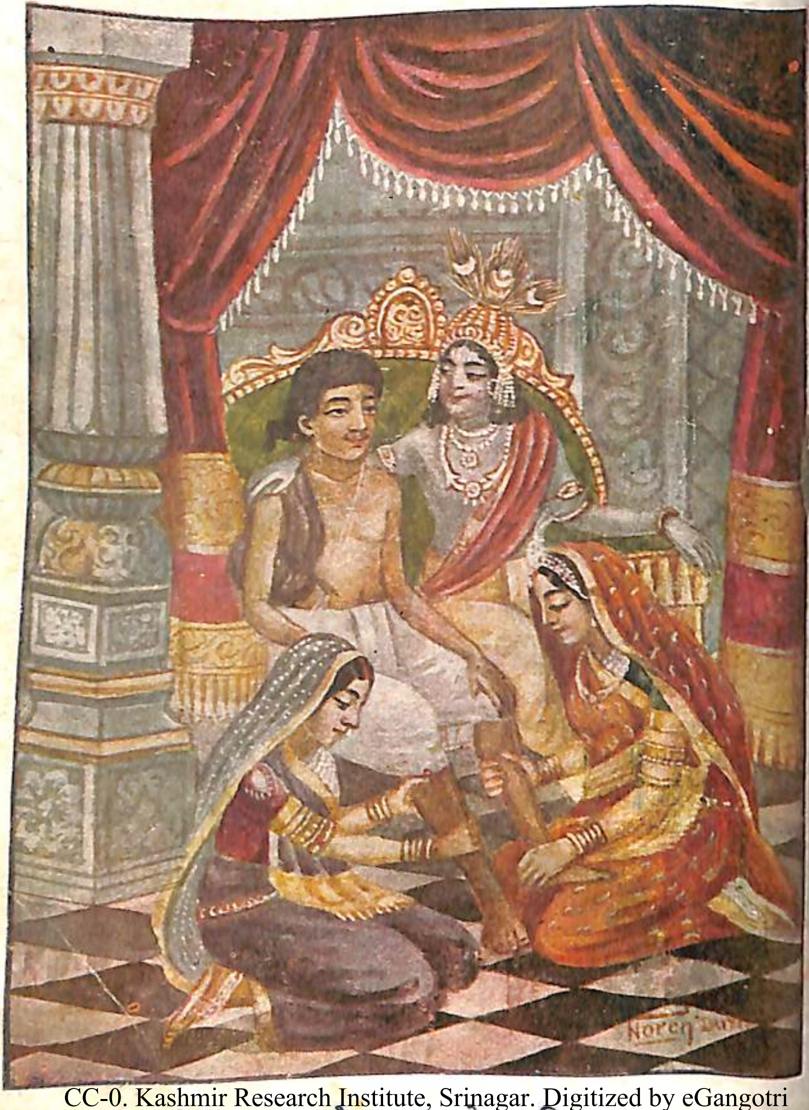
"आदर्श ग्रन्थमाला" तथा "नाट्य ग्रन्थमाला"

मेंसे जिसकी इच्छा हो ॥) प्रवेश फी भेजकर ग्राहक बन जाइये। "आदर्श ग्रन्थमाल" में बड़े ही दिलचस्प, उपदेशप्रद तथा कौतूहल-वर्द्धक उपन्यास, जीवनी, इतिहास, पौराणिक कथा आदि विषयक ग्रन्थ निकलते हैं और नाट्य ग्रन्थमालामें सामाजिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक नाटक। प्रवेश फी प्रत्येकके लिये ॥) आना है—

सुविधा यह है, कि

नियमित ग्राहकोंको प्रत्येक पुस्तक पौनी कीमतमें दी जाती है। यह सुअवसर कदापि न त्यागिये।

पता—आर० डी० बाहिती एण्ड कम्पनी,
नं० ७४, बड़तला स्ट्रीट, कलकत्ता।



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]